पत्र	आशय

पत्र	आशय
	मदात्यय
५४	मदात्यय रोगके लक्षण
५५	अयुक्ति मद्यपानके दूषण
५५	युक्तिसे मद्यपानके गुण
५६	प्रथम मद्यपानके गुण
५६	द्वितीय मद्यपानके अवगुण
५६	तृतीय मद्यपानके अवगुण
५६	चतुर्थ मद्यपानके अवगुण
५६	पित्त मदात्ययके लक्षण
५६	कफ मदात्ययके लक्षण
५६	वात मदात्ययके लक्षण
५७	त्रिदोष मदात्ययके लक्षण
५७	मद्यपानोत्थ अजीर्णके लक्षण
५७	मद्यपानोत्थ-भ्रमके लक्षण
	उन्माद
५७	उन्माद रोगके लक्षण
५७	उन्माद रोगका हेतु
५८	वात उन्मादकेलक्षण
५८	पित्त उन्मादके लक्षण
५८	कफ उन्मादके लक्षण
५९	सन्निपातउन्मादके लक्षण
५९	औरभी कारणउन्मादके लक्षण
५६	भूतोन्मादके लक्षण
५६	दैत्यसे पैदा उन्मादकेलक्षण
५९	गन्धर्व लगाहो उसके लक्षण
६०	यक्षग्रस्तके लक्षण
६०	महासर्प ग्रहके लक्षण
६०	पित्रीश्वरग्रस्तनरके लक्षण
६१	राक्षसग्रस्त नरके लक्षण
६१	प्रेतग्रस्तके लक्षण
६१	देव आदिकोंके प्रवेशका लक्षण

पत्र	आशय
	अपस्मार
६२	वातकी मृगी रोगके लक्षण
६२	पित्तकी मृगी रोगके लक्षण
६२	कफकी मृगीके लक्षण
६२	सन्निपातकी मृगीके लक्षण
	वातव्याधि
६३	वातव्याधि रोगके लक्षण
६३	सर्वांग वातके लक्षण
६४	त्वचा मे प्राप्त वातके लक्षण
६४	रुधिरमें प्राप्त वातके लक्षण
६४	मास मेदागत वातके लक्षण
६४	मज्जास्थिगत वातके लक्षण
६४	शुक्रगत वातके लक्षण
६५	नाडीगत वातके लक्षण
६५	कोष्ठगत वातके लक्षण
६५	सर्वांगगत वातके लक्षण
६५	सन्धिमें स्थित वातके लक्षण
६५	पाच वातकेजुदे २ लक्षण
६६	पित्तान्वित प्राणवात- के लक्षण
६६	कफान्वित प्राणवातके लक्षण
६६	कफ पित्तयुक्त उदान वातके लक्षण
६६	पित्तकफयुक्त समान वातके लक्षण
६६	पित्तयुक्त अपान वातके लक्षण
६६	कफ युक्त अपान वात के लक्षण
६६	पित्तकफयुक्त व्यान वातके लक्षण
६७	ऊर्ध्वगत वातके लक्षण
६७	अधोगत वातके लक्षण
६७	पित्तयुक्त वातके लक्षण
६७	कफयुक्त वातके लक्षण
६७	कफपित्तयुक्त वातके लक्षण
६७	अधोभागमें प्राप्त वातके लक्षण

इति



भूमिका॥

धन्यहै वह परमेश्वर जिसकी कृपासे सारे संसारमें कैसे कैसे विचित्र चरित्र होरहेहैं देखिये यह कैसी ईश्वरकी अद्भुत रचनाहै कि सृष्टिमें अगणित जीवहैं परन्तु यहनहीं कि एकसे दूसरे की भ्रान्ति हो—इसी प्रकारसे जितने पदार्थ सृष्टिमें हैं हरएकके गुण दोष पृथक् पृथक् दिये हैं—देखिये बुद्धिमान् महात्मा पुरुषों ने जीवोंकी रक्षा और क्लेश निवारण के निमित्त कैसे २ विचार कियेहैं—वैद्यक विद्यामें अनेकों प्रकारके ग्रन्थ बने हैं जिनके द्वारा औषधियों करके कैसाही रोगहो विधिपूर्वक सेवनसे तुरन्तही लाभ होगा औषधियोंका तो फल प्रत्यक्ष है दृष्टान्त की आवश्यकता नहीं॥

प्रथम महात्माओं ने जो ग्रन्थ वैद्यकविद्याके बनाये वह संस्कृत में हैं जो इससमय विशेषतर उपयोगी नहीं होते इसकारण वर्त्तमानकालके अनुसार विद्वान् सज्जनों ने उन ग्रन्थोंपर भाषा टीका बनानेका आरम्भ कियाहै और बहुतसे ग्रन्थों में भाषा टीका बनभी गई है॥

हम अतीव प्रसन्नतापूर्वक इसबातको प्रकट करते हैं कि एक ग्रन्थ हंसराजनिदान जो भाषाटीकासहितहै अवलोकन करने योग्यहै—एक तो इस कविकी कविता श्लोकबद्ध अति अनूठी है और श्लोक ऐसे ललित हैं कि जिनके पढ़ने और श्रवणमात्रही से चित्तको आनन्द होताहै—दूसरे यह ग्रन्थ बहुत बड़ाभी नहीं है कि जिसके पढ़नेकेलिये अवस्थाका एक भाग आवश्यकहो—और बहुत छोटाभी नहीं है इसीसे बहुधा लोग इसको पसन्द करते हैं कि केवल इसीके कण्ठाग्र करने से छोटे और बड़े सम्पूर्ण अपने अभीष्ट फलको पहुँचते हैं॥

इन सब गुणों के होतेहुये इस ग्रन्थमें हंसराजार्थ बोधिनीटीका भाषा में ऐसी हुई है कि मानो अमृतकुण्ड जो अतिकठिन स्थलहै उसके लाने के लिये रेलगाड़ी बनगई॥

प्रथम तो यह ग्रन्थ केवल संस्कृत जाननेवालोंहीके लिये फलदायक था अब भाषा जाननेवाले वैद्यलोग भी उसी प्रकार अपना अर्थ प्राप्त करसक्ते हैं॥

श्रीमन्महामहोपाध्याय श्रीवर पण्डित दत्तराम चौबेजी ने इस ग्रन्थ की टीका भाषामें ऐसी बनाई है मानो प्रथम ग्रन्थकार महात्माने अवतार धारणकर संस्कृतका भाषारूप किया ॥

प्रथम यह अपूर्व ग्रन्थ बम्बई मोहप्रदयन्त्रालय में श्रीउक्त पण्डित दत्तरामके प्रबन्धसे छपाथा अब मुंशी बंशीधरसाहब मुहतामिम मुम्बउल् अलूमकी आज्ञानुसार इस छापेखाने में पुष्टाक्षरों में छापागया है जिन सज्जनोंको आवश्यकताहो क़ीमतभेजकर मंगवालेवें—इस छापेखाने की हरएक दूकानें देहली व कानपूर आदिमें भी यह ग्रन्थमिलेगा ॥

मैनेजर नवलकिशोर प्रेस

लखनऊ

ॐ गणाधिपतये नमः ॥

हंसराजनिदानम् ॥

अथ हंसराज कवि हंसराज ग्रन्थके कर्त्ता ग्रन्थके आदि में शिष्टाचार परिपालनके निमित्त और ग्रन्थकी निर्विघ्न समाप्ति के निमित्त भले प्रकार उचित अपना इष्टदेव श्रीबालाजी तिनकाध्यानपूर्वक स्रग्धराछन्द करके मंगलाचरण करते हैं ॥

ध्यायेति

ध्यायेबालाम्प्रभातेविकसितवदनाम्फुल्लराजीवनेत्रांमुक्तावैदूर्यगर्भैरुचिरकनकजैर्भूषणैर्भूषितांगीम् ॥ विद्युत्कोटिच्छटाभांपरिमलबहुलांदिव्यसिंहासनस्थां गीर्देवीतस्यदासीभवतिसुरवनंनन्दनंकेलिगेहम् १ धत्तेतेचरणांबुजंस्वहृदयेमातर्नरोयोऽनिशंतस्याऽऽस्येपरिनर्त्ततेप्रतिदिनंवाग्गद्यपद्यात्मिका ॥ लक्ष्मीस्तस्यगृहेस्थिताकरतलेमुक्तिःस्थिताःसिद्धयो द्वारेतस्यविभूषिताश्चनिधयस्तिष्ठन्तिनित्यंमुदा २ ॥

हम प्रातसमय श्री बालाका ध्यान करते हैं कैसीहै बाला कि प्रफुल्लितहै मुख फूले कमल के समान नेत्र मोती और वैदूर्यमणि करके जटित सुन्दर सुवर्णके भूषण करके भूषितहै देह कोटि बिजलीके समान प्रकाश बहुतसी सुगन्धयुक्त देह श्रेष्ठ सिंहासनपर स्थित ऐसी बालाका जो मनुष्य ध्यान करता है तिसपुरुषकी सरस्वती दासीहो और देवतोंका नन्दनवन क्रीडाकास्थान हो १ हे मातः। जो मनुष्य तेरे चरणकमलोंका निरन्तर अपने हृदयमें ध्यानकरताहै तिसके मुखमें गद्य पद्य रचना रूपी सरस्वती नित्य नाचती है उसके घरमें लक्ष्मी स्थिररहै मोक्ष उसकेहाथ में स्थिररहै अष्टसिद्धि और नवनिधि तिसके द्वारपर नित्य प्रसन्नतापूर्वक शोभायमान स्थिररहैं इस श्लोकका छन्द शार्दूलविक्रीडित है २ ॥

जगन्मातर्नमस्तेस्तुवरदेमंगलेशिवे ॥ ... हायंकुरुमेऽनिशम् ३ अहम ... तितवहानिःक्वापिदृष्टेःकदाचित् ॥ स्वजनहितपरायाःशंकरस्यप्रियायाःअमृतरसहृदिन्याहंसनाथोभवामि ४ भिषक्चक्रचित्तोत्सवंजाड्यनाशंकरिष्याम्यऽहंबालबोधायशास्त्रम् ॥ नमस्कृत्यधन्वंतरिंवैद्यराजंजगद्रोगविध्वंसनंस्वेननाम्ना ५ ॥

हे जगन्मातः । हे वरदे । हे मंगले । हे शिवे । तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै ग्रन्थ करनेको प्रवृत्त मेरी निरन्तर सहायकरो ३ हे जगदम्बे । मुझे दिव्य दृष्टि से देख तेरी दृष्टिकी कभी कहीं हानि नहीं हो कैसी तुमहो कि अपनेभक्त जनके हितमें तत्परहो और श्रीशंकरकी प्यारीहो अमृत रसकी सरोवरी हो मैं तुम्हारी दृष्टिके करने से सनाथ होऊंगा इस श्लोकका मालिनी नाम छन्दहै ४ मैं वैद्यन के राजा धन्वन्तरि को नमस्कार करके बालकन के बोधके अर्थ जगत्के रोगन का नाशक वैद्य समुदायके चित्तको उत्सव कारक मूर्खता का नाशक अपने नाम करके अर्थात् हंसराज नाम करके विख्यात ग्रन्थको करताहूं इस श्लोकके छन्दकानाम भुजंगप्रयातहै ५ ॥

ब्रह्मेशोगरुडध्वजोभृगुसुतोभारद्वजोगौतमो हारीतश्चरकोत्रिकःसुरगुरुर्धन्वंतरिर्माधवः ॥ नासत्योनकुलःपराशरमुनिर्दामोदरोवाग्भटो येन्येवैद्यविशारदामुनिवरास्तेभ्योपरेभ्योनमः ६ आत्रेयधन्वंतरिसुश्रुतानांनासत्यहारीतकमाधवानाम् ॥ सुषेणदामोदरवाग्भटानां दक्षस्वयंभूचरकादिकानाम् ७ ॥

ब्रह्मा शिव विष्णु शुक्र भारद्वाज गौतम हारीत चरक अत्रि बृहस्पति धन्वंतरि माधव अश्विनीकुमार नकुल पराशरमुनि दामोदर वाग्भट और जे वैद्यनमें चतुर मुनीनमें श्रेष्ठ तिन सबनके अर्थ नमस्कार हैं ६ ॥ आत्रेय धन्वंतरि सुश्रुत अश्विनीकुमार हारीत माधव सुषेण दामोदर वाग्भट सनत्कुमार चरकादिकन का ७ ॥

एषांसमालोक्यमतंमुहुर्मुहुर्ग्रंथोमनोज्ञःक्रियतेमयाऽधुना ॥ पद्यैरदोषैरचितोल्पमेधसांज्ञानायनूनंभिषजात्ममानिनाम् ८ दर्श

नस्पर्शनःप्रश्नैरोगीणोरोगनिश्चयम् ॥ आदौज्ञात्वाततःकुर्याच्चिकित्सांभिषजांवरः ९ देशंबलंवयःकालं गुर्विणीगदमौषधम् ॥ वृद्धवैद्यमतंज्ञात्वाचिकित्सामारभेत्ततः १० ॥

मत वारवार देखकर वैद्य ऐसे अपने आपेको माने अल्पबुद्धीवारेन को निश्चय ज्ञानके अर्थ दोषकरकेरहित जे पद तिनकरके रचितमनको प्रसन्न करनेवाला अबमैं ग्रन्थरचताहूं ८ देखना स्पर्शकरना पूछना इन तीन तरहसे पहिले रोगीके रोगको निश्चय करके वैद्योंमें श्रेष्ठहै सो रोगी की चिकित्सा करै ९ देश बल अवस्था काल गर्भिणी का रोग औषध और वृद्ध वैद्य के मतकोजानके फेर चिकित्सा करै १० ॥

(अथनाडीलक्षणानि) करांगुष्ठमूलोद्भवाप्राणभूतानृणांरोगिणांसाक्षिणीसौख्यभाजाम्॥जलौकोरगानांगतिंनाडिकायाविधत्ते निरुक्ताचवातात्मिकासा ११ विधत्तेगतिंकाकमंडूकयोर्यामुनीन्द्रै निरुक्ताचपित्तात्मिकासा ॥ शिराहंसपारावतानांगतिंयादधाति स्थिराश्लेष्मकोपान्वितासा १२ नाडीचंचलतांकचिच्छिथिलतां शैत्यंकचिदुष्णतां धत्तेमंदगतिंद्विदोषकुपितास्थानच्युतिंक्षीणताम् ॥ वक्राकारगतिंकचिद्वितनुते प्राप्नोतिकंपंकचिद्वैकल्यंविदधातियातिकुपितामासान्तरेसानिशम् १३ ॥

प्रथम नाडी परीक्षा लिखै हैं हाथके अँगुठा के निकट रोगी मनुष्य के सुख दुःखकी साक्षी देनवारी सौख्यभाजा नाडी जो जौंक वा सर्प कीसी चाल चलै तौ वातकी नाडी कहिये ११ और जो नाडी काक मेंढ-क कीसी चाल चलै तो मुनियोंने पित्तकी नाडी कहीहै और जो हंस कबूतर कीसी चाल चलै तो कफकोप की नाडी कहिये १२ द्विदोष कोप की नाडी चञ्चल कभी शिथिल कभी शीतल कभी गरम और मंद विकलताको प्राप्तभई गमन करैहै और स्थानको छोडदेय और बहुत धीरे २ चलै और कभी टेढीचलै कभीकांपै विकलताको प्राप्त भई ऐसी नाडी एक महीनेके भीतर रोगीको मारडारै १३ ॥

त्रिदोषान्विताना‍डिकाचंचलोष्णा स्फुरद्विस्त्रिरूपास्वरायुग्विभिन्ना ॥ गतिंतैत्तरीयांविधत्तेतिकंपंक्षणंक्षीणतांयातिमूर्च्छै

क्वचित्सा १४ शिरायस्यवातार्दितापित्तदग्धाकफेनातिकोपेन नाडीकृतासा ॥ गदीसोल्पकालेनमृत्योर्विदीर्णमुखेयास्यतेदंतदंष्ट्राभिकीर्णे १५ ॥

सन्निपातकी नाडी चपल और गरम और दोतीन प्रकारकी चाल चलै वहनाडी जल्दी आयुकी काटनेवारी जाननी और तीतरकीसी चाल चलै और वहुतकांपै और मंदचलै और कभी चलने से रहिजाय १४ जिस रोगीकी नाडी वात करके दुखित पित्त करके दग्ध और कफके कोप करके खेदितहो वहरोगी थोडे कालमें मौतके खुलेहुये दंतडाढा करके युक्त ऐसे मुखमें जायगा अर्थात् मरैगा १५ ॥

शिरायस्यसूक्ष्माऽतिशीतान्वितावासरोगीनजीवेत्प्रयत्नैःकदाचित् ॥ चलद्द्वित्रिरूपात्रिदोषान्वितावासरोगीयमस्यालयेशीघ्रगंता १६ नाडीशीघ्रगतिधत्तेज्वरकोपेनसोष्णताम् ॥ रक्ताधिक्येनसाकोष्णागुर्वीवेगवतीभवेत् १७ सुखिनोमनुजस्याशिरापरितःस्थिरतांसमुपैतिदधातिबलम् ॥ क्षुधितस्यभवेच्चपलासततंतृपितस्यशिराव्रजतिस्थिरताम् १८ ॥

जिस रोगीकी नाडी अतिमंदचलै और शीतकरके युक्तहो वो रोगी यत्नोंके करनेसे नहीं जीवै और जिस रोगीकी नाडी त्रिदोषयुक्त दो तीन प्रकारकी चलै वोरोगी जल्दी यमराज के घर पहुंचेगा १६ ज्वरके कोपसे नाडी गरम और जल्दी चलतीहै और रुधिर के बिगडनेकी नाडी गरम और भारी तथा जल्दी चलती है १७ सुखी मनुष्य की नाडी बल युक्त और स्थिर चलतीहै और क्षुधित मनुष्यकी नाडी चपल और भोजन करे कीनाडी स्थिर चलतीहै इसश्लोकके छन्दका नाम तोटकवृत्तहै १८ ॥

मोहेनकामेनभयेनचिंतयाक्रोधेनलोभेनबहुश्रमेणवा॥ मंदाग्निनोद्वेगतरेणपीडयास्यान्नाडिकामन्दतरानृणाम्भृशम् १९ ॥ इति हंसराजनिदानेनाडीलक्षणम् ॥

मोहसे कामसे भयसे चिन्तासे क्रोधसे लोभसे वहुतपरिश्रमसे मंदाग्निसे उद्वेगसे पीडासे मनुष्यों की नाडी निरन्तर मंदचलतीहै १९ ॥ इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यांनाडीलक्षणम् ॥

दोषैर्विनानरोगाःस्युर्नदोषाःहेतुभिर्विना ॥ हेतवःकर्मसम्भूतास्तान्हेतून्कथयाम्यऽहम् १(अथवातकोपकारकवस्तु)प्राणापानगतेर्विघातकरणैःक्षुन्मूत्रतृट्रोधनैः व्यायामव्रतशोकशीतसलिलस्नानैःस्त्रियासेवनैः ॥ रूक्षाम्लामिषमिष्टपिष्टकटुकैरत्यंबुपानाशनैः वर्षाशीतशरत्सुचैत्रसमयेवातस्यकोपोभवेत् २ (अथ पित्तकोपकारकवस्तु) तीक्ष्णोष्णाम्लविदाहिशाककटुकैःक्षारान्नपित्ताशनैर्व्यायामाध्वपरिश्रमैर्दिनपतेरातापमसेवनैः ॥ क्रोधोष्णोत्प्लवनैःकषायमदिरा पानैर्निशाजागरैर्वर्षाग्रीष्मशरत्सुमध्यदिवसेपित्तस्यकोपोभवेत् ३ ॥

बिना दोषोंके रोग नहीं होते और बिना हेतुओं के दोप नहीं होते और हेतु कर्मसे पैदा होतेहैं सो इन्हीं हेतुओं को मैं कहताहूं १ प्राण और अपान पवनकी गतिके बिगडने से भूंख प्यास मूत्र इनके रोंकने से दण्ड कसरतके करनेसे व्रतके करनेसे शोचसे शीतल जलके नहाने से बहुत स्त्रीके संगसे रूखा खट्टा मीठा पिसा कडुआ ऐसे पदार्थ के भोजन से बहुत जल और भोजन के करनेसे वर्षाऋतु शरदऋतु शीतकाल और चैत्रके महीनेमें वात कुपित होतीहै २ तीक्ष्णमिरच आदि गरम खट्टा दाहका करनेवाला पदार्थ शाक कडुआ खार मिलाअन्न और पित्तकारक ऐसेभोजनके करनेसे दण्डकसरतके करनेसे रास्ताके चलनेसे परिश्रमके करनेसे घाममें रहनेसे क्रोधसे गरमीसे खेलनेकूदनेसे कसैली वस्तु मद्य केपीनेसे रात्रिमेंजगनेसे वर्षाऋतु शरदऋतु मध्याह्नमेंपित्तकोपकरताहै ३॥

क्षारक्षीरविकारशाकमधुरैः पानाशनातिक्रमैर्मूलस्निग्धगरिष्टकंदपिसितैःशीताम्लमाषाशनैः ॥ नाशानेत्रमुखेपधूमरजसोपातैर्महाघोषणैः श्लेष्माकोपतरंदधातिशिशिरेहेमंतकेमाधवे४॥

खार दूध का पदार्थ शाक मिष्ट भूंख प्यासके समयको उल्लंघन करने से कन्द चिकना गरिष्ठ मूल पदार्थ पिसा अन्न शीतल खट्टा उर्द इनके खानेसे नाक नेत्र मुख इनमें धुँयें के और रजके गिरनेसे पुकारने से शिशिरऋतु हेमन्तऋतु वैशाख में कफ कोप करताहै ४ ॥

ज्वराणांघोररूपाणांयानिचिह्नानितान्यहम्॥वक्ष्येज्ञानेनतेनैव

रोगःसंज्ञायतेबुधैः ५ (तस्यप्रागुत्पत्तिमाह)दक्षायमानसंक्रुद्धःरुद्रनिश्वाससम्भवः॥ज्वरोऽष्टधापृथक्द्वंद्वसंघातागन्तुजःस्मृतः १ (ज्वरस्यसंप्राप्तिमाह) मिथ्याहारविहारस्य दोषाह्यामाशयाश्रयाः॥वहिर्निरस्यकोष्ठाग्निंज्वरदास्युरसानुगाः२ (ज्वरके पूर्वरूप को कहेहैं)तापःशरीरेगुरुताऽलसत्वंसर्वांगपीडाविरसत्वमास्ये॥ शीतःश्रमोवीर्यबलस्यहानिः ज्वराग्रचिह्नानिवदंतिसंतः ६ (वात ज्वरकेलक्षण) जृम्भोद्गारतृषाःकषायवदनंनिद्राविनाशोऽरुचिः श्वासोरुक्षवपुर्भ्रमोविकलताशोषोमुखेऽक्षिस्रवः॥ हिक्काध्मानविवर्णतांगचलनंरोमोद्गमोंगव्यथा हल्लासोंत्रविगुंजनंभवातितद्वातज्वरेलक्षणम् ७॥

घोर रूप ज्वरोंके चिह्न हैं तिन्हें मैं कहता हूं जिन चिह्न अर्थात् लक्षणों करके पंडितोंकरके रोग सब जानेजायँ ५ दक्षके करेहुये तिरस्कार से क्रोधित शिव तिनकी श्वास से उत्पन्न हुआ जो ज्वर सो आठ प्रकार का है १ वातसे २ पित्तसे ३ कफसे ४ वातपित्तसे ५ वातकफसे ६ पित्त कफसे ७ वात पित्तकफसे ८ आगन्तुजसे १ मनुष्यों के मिथ्या आहार और मिथ्या विहारसे आमाशय में रहते जो वात पित्त कफ सो आमाशयको विगाड़ करके फेर रसको विगाड़ैं और कोठेकी जो अग्नि उसकी गरमी को बाहर निकाल देहको तत्ता करदेवै उसीको ज्वरकहते हैं २ ॥ इति माधवकरः॥ शरीरमें तप तथा शरीरका भारीपना आलस्य और सब शरीर में हड़कल मुखमें स्वाद न रहै शीतका लगना अनायास श्रमालूम हो वीर्य बलकानाश होना ये चिह्न ज्वरके पूर्व होते हैं ६ जँभाई डकार तथा प्यास का लगना मुखका कड़आहोना नींदका न आना अरुचि श्वास शरीरका रूखापन भ्रम तथा शरीरमें वेकली मुखसूखै आंखसे आंसूका चुवना हिचकीआना पेटफूलना शरीरका औरही वर्ण होजाना अंगका फड़कना रोमांचकाहोना शरीरमें व्यथा सूखी उलटीका आना आतोंका बोलना ये लक्षण वातज्वर में होते हैं ७॥

(पित्तज्वरकेलक्षण)हत्कंठोष्ठकरांघ्रिदाहमरतिंस्फोटंतृषासंभ्रमं प्रोष्माणंश्वसनंमुखेकटुकतांमूर्च्छामतीसारकम् ॥ हत्कंपंनयने

रुणेविकलतांशीतेरुचिंशोषणं खेदंदेहगतःकरोतिकुपितःपित्तज्वरोन्तर्व्यथाम् ८ (श्लेष्मज्वरलक्षणम्) स्तैमित्यंवमनंजडत्वमलसंनिष्ठीवनंगौरवंमाधुर्यंवदनेतनौमलिनतांस्वेदंचरोमोद्गमम्॥ कंठेघुर्घुरतांचपीतनयनंनिद्रांत्वचिस्निग्धतां कासंशीर्षरुजंकरोतिविकलंश्लेष्मज्वरोङ्गव्यथाम् ९ (वातपित्तज्वर) भ्रमोरोमहर्षोरुचिःश्वासकासौतृषांगेषुदाहःशिरोर्तिर्वमित्वम् ॥ विनिद्रांगपीडातिशोषोल्पमूर्च्छाज्वरेवातपित्तोद्भवेचिह्नमेतत् १० ॥

हृदय कंठ ओठ हाथ पाँव इनमें दाहहोना इच्छाकानाश हडकलका होना प्यास भ्रम गरमी श्वास कडुआ मुख मूर्च्छा दस्त हृदयमें कंप नेत्र लाल देहमें बेकली शीतलता का प्यास लगना मुखसूखे खेदका होना अन्तष्कर्ण में दुःख ये लक्षण कुपित पित्तज्वर देहमें करताहै ८ शरीर गीले कपडे से पोंछे सरीखा मालूमहो उलटीका होना शरीरका जकड जाना आलस्य कफका थूकना देहकाभारीहोना मुखमीठाहो देह मैला पसीनेका आना रोंआं खडाहोना कंठमें घुरघुर शब्दहोना कुछ पीलाई लिये नेत्रहों निद्राका आना त्वचा चिकनाई लिये होय खांसी शिरमें दर्द ये लक्षण कफज्वरके हैं ९ भ्रम रोमका खडाहोना अरुचि श्वास खांसी प्यास देहमें दाह शिरमें दर्द वमन निद्राका न आना देहमें पीडा अत्यन्त मुखका सूखना मूर्च्छाका आना ये वातपित्तज्वरके लक्षणहैं १० ॥

(वातकफज्वर) स्तैमित्यंगुरुतारुचिर्विकलतातंद्रापिपासालसं कासोङ्गस्फुटतावमिःश्वसनताशोथोमुखेलिप्तता। स्वेदःपर्वभिदारतिश्चजडतारोमोद्गमःशीततां वातश्लेष्मसमुद्भवस्यकथितंचिह्नंज्वरस्याऽऽर्षिभिः ११ ॥

शरीर गीले कपडे से पोंछे समान मालूम पडे तथा शरीरका भारीपन अरुचि बेकली तंद्रा प्यास आलकस खांसी अंगोंका फडकना रद श्वास सूजन कफसे लिहसामुख पसीना गांठों में दर्द चैन न पडे जडपना रोमांच शीत लगना पुराने ऋषियों ने वात कफ ज्वरके लक्षण कहे हैं ११ ॥

(पित्तकफज्वर) तिक्तास्योरुचिताकफस्यवदने लेपोमुहुर्तंद्रासंधिषुवेदनाचहृदयेदाहःपिपासाभ्रमः॥ कास-

स्तनौमलिनतास्वेदोवमिर्मोहता चिह्नंपित्तकफज्वरे मुनिवरैः संकीर्तितंपूर्वजैः १२ (तेरहसन्निपातोंकेनाम) संधिकश्चांतकश्चैव रुग्दाहश्चित्तविभ्रमः॥ शीताङ्गस्तंद्रिकः प्रोक्तः कंठकुब्जश्चकर्णकः॥ विख्यातोभुग्ननेत्रश्च रक्तष्ठीवीप्रलापकः। जिह्वकश्चेत्यभिन्यासस्सन्निपातास्त्रयोदशः॥ इतिसंग्रहीतपाठः (तेषांमर्यादा) संधिकेवासरास्सप्तश्चांतकेदशवासराः। रुग्दाहेविंशतिर्ज्ञेयावह्न्यष्टौचित्तविभ्रमे॥पक्षमेकंतुशीतांगस्तंद्रिकेपंचविंशतिः। विज्ञेयावासराश्चैव कण्ठकुब्जेत्रयोदश॥कर्णकेचत्रयोमासाःभुग्ननेत्रेदिनाष्टकम्॥रक्तष्ठीवीदशाहानि चतुर्दशप्रलापके॥ जिह्वकेषोडशाहानिकलाभिन्याससंज्ञके।परमायुरिदंप्रोक्तंम्रियतेतल्लक्षणादपि

कडुआ मुख अरुचि मुख कफसे लिसा वार २ जाडा गरमी का लगना तन्द्रा सन्धि में पीडा हृदय में दाह प्यास भ्रम खांसी श्वासका जोर देहमें मलिनता स्वेद वमन मोह ये लक्षण पहिले मुनीश्वरों ने पित्त कफ ज्वरके कहेहैं १२ ॥ १ संधिक २ अन्तक ३ रुग्दाह ४ चित्तविभ्रम ५ शीतांग ६ तन्द्रिक ७ कंठकुब्ज ८ कर्णक ९ भुग्ननेत्र १० रक्तष्ठीवी ११ प्रलापक १२ जिह्वक १३ अभिन्यास ये तेरह सन्निपात हैं (तेरहों सन्निपातों की अवधि) सन्धिककी ७ दिन की अन्तककी १० दिन रुग्दाह की २० दिन चित्त विभ्रम की २४ दिन शीतांग की १५ दिन तन्द्रिक की २५ दिन कंठकुब्जकी १३ दिन कर्णककी ९० दिन भुग्ननेत्र की ८ दिन रक्तष्ठीवी की १० दिन प्रलापकके १४ दिन जिह्वकके १६ दिन अभिन्यास के १६ दिन कहेहैं यह सन्निपातों की परमावधि कहीहै परन्तु तत्काल भी रोगी मरजाताहै ये श्लोक संगृहीत हैं ॥

(तेरहसन्निपातमें साध्यासाध्यवि०) संधिकस्तन्द्रिकश्चैव कर्णकःकंठकुब्जकः। जिह्वकश्चित्तविभ्रंशःषट्साध्याःसप्तमारकाः संगृहीतपाठः ॥

सन्धिक तन्द्रिक कर्णक कंठकुब्ज जिह्वक चित्तविभ्रंश ये ६ साध्यहैं बाकी सात असाध्य हैं ॥

(सन्धिकसन्निपातके लक्षण) त्रिदोषोत्थितेसन्धिकेसन्निपाते भवेत्संधिपीडाऽस्यशोषोथशूलं॥ भ्रमोवीर्यनिद्राविनाशोतितंद्रा पिपासोष्टपाकोरुचिर्दाहकासौ १३ (अन्तकसन्निपातकेलक्षण) करोत्यंगभंगंभ्रमंवेपथुंयःशिरःकंपनंकंडुरंरोदनंच॥ प्रलापंसता पंचहिक्कामसाध्यंध्रुवत्वंविजानीहितंचान्तकाख्यं १४ (चित्तविभ्रमसन्निपातकेलक्षण) यो मोहाद्रुदतिक्वचिद्विकलतांप्राप्नोति शोकंक्वचित् फूत्कारंकुरुतेदभातिमदतांगीतंक्वचिद्गायते॥ सन्तापंसहतेमुदंवितनुतेवाचंभ्रमाद्भाषते तंचित्तभ्रमसन्निपातमनिशंजानीहिदुस्साधनं १५॥

तीनों दोषोंसे उत्पन्न हुआ जो संधिक सन्निपात तिसके ये लक्षणहैं सन्धीनमें दर्द मुखकासूखना शूल भ्रम वीर्य और निद्राका नाश तन्द्रा प्यास ओठोंका पकना अरुचि दाह और खांसी १३ अंगोंका टूटना भ्रम कम्प और शिरका हिलना खाज तथा रोना वाहियातवकना सन्ताप हिचकीका आना जिसमें ये लक्षणहों उसको हे वैद्य तू असाध्य अन्तक सन्निपात जान १४ जो मोहसे रोवै कभी विकलताको प्राप्तहो कभी शोच करै कभी फूत्कार करे कभी मस्तपने को प्राप्तहो गीतगावे कभी संताप हो कभी प्रसन्नहोवे कभी भ्रमसे बकनेलगे ये लक्षण जिसमेंहों उसे नहीं उपाय जिसका ऐसा चित्तभ्रम सन्निपात जानों १५॥

(रुद्राहसन्निपातकेलक्षण) यःशूलंवितनोतिदारुणभयंहस्तांघ्रिशैत्यंतथा जिह्वांकंटकितांभ्रमंविकलतांमोहंचकंठव्यथां॥ श्वासंकासतरंनिरन्तरतृषांहृत्कंठयोशोषणं सन्तापंश्रमरोदनंप्रलपनंजानीहिरुद्राहकम् १६ (शीतांगसन्निपातलक्षणम्) शीतत्वंविदधातियोऽखिलतनौरोमोद्गमंवेपथुं श्वासंकासतमंक्वाचिच्छिथिलतांमूर्च्छामतीसारकं॥ चेष्टाक्षीणतरांक्लमंवमथुतांहिक्कांशिरश्चालनं तंशीतांगमवेहिवैद्यहरिजंमृत्योःसखाऽयंध्रुवं १७ (तन्द्रिकसन्निपातकेलक्षण) कंठेकंडुतृषाऽरुचिःक्लमथुता पीडार्तिकर्णद्वयोः जिह्वाश्यामतराचकंटकयुतातन्द्रातिसारोर

तिः । सन्तापःकफवेदनाबहुतराश्वासोधिकःकाशता मृत्युस्थास्खलुतन्द्रिकोनिगदितश्चिह्नैरमीभिःपरैः १८ ॥

पेटमें शूल हाथ पैर ठंढे जीभमें कांटे भ्रम वेकली वेहोशी कंठमेंपीडा श्वास खांसी प्यास बहुत लगे हृदय कंठका सूखना सन्ताप श्रम रुदन करना प्रलाप ये लक्षण रुद्गाह सन्निपातके जानना १६ जिनमें ये लक्षण मिलतेहों उसको वैद्यराज ज्वर मौतका मित्र शीतांग सन्निपात जानना चाहिये जो सब देहको शीतल करदे रोमखडे होजायँ कंप श्वास खांसी अँधेरा सुस्ती कभी मूर्च्छा और दस्तकाहोना जिसकी चेष्टा मन्दपडिजाय विना श्रमकरे श्रमहो रह हिचकी शिरका कांपना १७ कंठमें खुजलीचले प्यास अरुचि ग्लानि दोनों कानोंमें पीडा काली और कांटेयुक्त जीभ तंद्रा अतिसार अरति सन्ताप कफसे पीडा बहुत श्वासचलै और खांसी इन लक्षणों से रोगीका मारनेवाला तन्द्रिक सन्निपात जानना १८ ॥

(कंठकुब्जसन्निपातकेलक्षण) कंठग्रहंयःकुरुतेहनुग्रहंमूर्च्छांप्रलापंज्वरकंपवेदनाः ॥ मोहंचदाहंहृदयेशिरोरुजंतंकंठकुब्जंप्रवदन्तिसाधवः १९ (कर्णकसन्निपातकेलक्षण) ग्रंथिःकर्णान्तदेशेभवतिबहुतराकंठदेशेतिपीडा ग्लानिःश्वासःप्रसेकोवचनशिथिलताश्लेष्मणारुद्धकंठः ॥ मूर्च्छाकंपःप्रलापोवपुषिकृशतमात्रेदनोष्माचकासः ॥ स्वंस्वंरूपंचरोगाविदधतिसततंकर्णकेसन्निपाते २० ॥

जो कंठमें पीडाकरै ठोडी जकड जावे मूर्च्छा तथा बकना ज्वर कंप देहमें पीडा वेहोशी हृदय में दाह शिरमें दर्द ये लक्षण कंठकुब्ज सन्निपातके महात्मा कहते हैं १९ कर्णक सन्निपातके ये लक्षणहैं कानके पास गांठ बहुतसीहों कंठमें दर्द ग्लानि श्वास लारकागिरना मन्द २ बोलना कफसे कंठका रुकना मूर्च्छा कंप और बकना शरीर कृश तथा पीडा और गरमी और खांसी तथा अनेकरोग प्रगटहों २० ॥ इति कर्णक सन्निपातके लक्षण समाप्तहुये ॥

(भुग्ननेत्रसन्निपातकेलक्षण)स्मृतिभ्रंशनंभुग्नदृक्सन्निपातःकरोत्यंगपीडांभ्रमंभुग्ननेत्रं॥ ज्वरंवेपनंशून्यतांश्वासकासौप्रलापंप्रसेकंपिपासामसाध्यः२१(रक्तष्ठीवीसन्निपातकेलक्षण)छर्दिरक्त

ष्ठीवनंकृष्णजिह्वांकासश्वासंमंडलंदाहमुग्रं॥संज्ञानाशंतापमध्मानतृष्णांरक्तष्ठीवीप्राणनाशंचकुर्यात् २२ (प्रलापीसन्निपातकेलक्षण) प्रलापीरवेःपुत्रगेहंप्रयातिज्वरोतापपीडांगकंपश्रयासः॥तृषाशोकसंज्ञाविनाशप्रवादःशिरःकंपमोहांगदाहोविनिद्राः २३ ॥

बेहोशी हो अंगों में दर्द भौंर का आना नेत्रोंका बुरा होना ज्वर तथा कॉपना देहमें शून्यता श्वास खांसी बकना लारका बहना प्यास ये लक्षण असाध्य भुग्ननेत्र सन्निपात के हैं २१ रुधिरकी उलटीकरना जीभ काली हो खांसी श्वास चकत्ता पड़जावे घोर दाह हो संज्ञा जाती रहै ताप ज्वर तथा पेट का फूलना तृष्णा प्यास ये लक्षणहों तो प्राणकानाश कर्त्ता रक्तष्ठीवी सन्निपात जानना २२ प्रलापी सन्निपातवाला रोगी यमलोक को जाता है और उसके ये लक्षण होतेहैं ज्वर ताप पीड़ा कॉपना विना कारण श्रमहो प्यास शोच संज्ञानाश बकना शिरका हिलाना बेहोशी अंगों में दाह नींदका न आना २३ ॥

(जिह्वकसन्निपातकेलक्षण) जिह्वांकंटकवेष्टितांशिथिलतांश्वासाधिकंमूकतां रात्रौजागरणंतृषांवधिरतांवीर्यक्षयंक्षीणतां॥ हृत्पार्श्वोदरनासिकाधरगलेशोथंविसंज्ञंज्वरं कायेयःकुरुतेरुजंबहुतरंजानीहितंजिह्वकम्२४(अभिन्याससन्निपातकेलक्षण)अभिन्यासकोयस्यदेहेस्थितःस्याद्भवेत्तस्यमृत्युर्विनिद्रातितृष्णा॥ ज्वरःपाददाहोङ्गकंपोतिजाड्यंभ्रमःश्वासताकाशताक्षीणचेष्टा२५ ❀ (अजीर्णज्वरलक्षण) अजीर्णज्वरोलक्षणैरष्टभिर्वाभिषक्सत्तमैर्ज्ञायतेसप्तभिर्वा ॥ अतीसारउद्गारऊष्मातिनिद्राशिरोर्तिःप्रलापोहिजृम्भोदरेरुक् २६ ॥

जीभ कांटन करके युक्त तथा शिथिल श्वास का ज्यादह चलना गूंगापना रातमें जागना प्यास तथा बहिरापना वीर्य का नाशहोना दुर्बलता

❀ सप्ताहिपञ्चसप्ताहात् दशाहाद्द्वादशादपि ॥ एकविंशादिनै.शुद्धःसन्निपातीसुजीवती १ (त्रिदोषज्वरस्यमर्य्यादा) सप्तमीद्विगुणायावन्नवम्येकादशीतथा ॥ एषात्रिदोषमर्य्यादामोक्षायचवधायच २ पित्तकफानिलवृद्ध्यादशदिवसद्वादशाहसप्ताहात् ॥ हन्तिविमुञ्चतिपुरुषान्त्रिदोषजोधातुमलपाकात् इति ३ ॥

हृदय पसवाडे पेट नाक ओठ गला इनमें सूजनहो बेहोशीज्वर ये जिसकी देह में हों उनको जिह्वक सन्निपात जानो २४ जिसकी देह में अभिन्यास सन्निपातहो उसके ये लक्षण हैं नींद आवै नहीं अति प्यास हो ज्वर पैरों में दाह अंगोंका कांपना बेहोशीऔर श्वास खांसी चेष्टा मंद ये लक्षणवालेकी मौत होय २५ इतित्रयोदशसन्निपाताः ॥ ❁ अजीर्णज्वर आठलक्षणों से अथवा सात लक्षणोंसे जाने सो येहैं अतीसार १ डकार २ गरमी ३ अतिनिद्रा ४ शिरमेंदर्द ५ खोटाबोलना ६ जँभाई ७ पेटका दूखना ८। २६॥

(आमज्वरलक्षण) हल्लासलालाश्रुतिवांत्यरोचकैःक्षुन्नाशनिद्रावहुमूत्रतालसैः॥वक्तालपवैरस्यवलक्षुतक्षयैरामज्वरोवैद्यवरैर्विलक्ष्यते २७ (रक्तज्वरकेलक्षण) प्रलापोङ्गदाहोमुखाद्रक्तपातस्तृषास्फोटनामोहतांगप्रपीडा॥ भ्रमोरक्तनेत्रेथनिद्राविमूर्च्छाभवंतीहरक्तज्वरेलक्षणानि २८ (दृष्टिज्वरलक्षण) मुहुर्मुहुर्जृम्भनमंगदाहंविस्फोटनंसंधिषुशूलमुग्रं ॥ स्तब्धेक्षिणीछर्दिमनाहतांयोदृष्टिज्वरःसंकुरुतेविवर्णं २९ ॥

खाली ओकी आवै लार वहे रसहो अरुचि भूख न लगे नींद मूतका ज्यादा उतरना आलस मुख बेरसहो बल और भूख का घटना तथा खई हो इन लक्षणों से वैद्यों में चतुर सो आमज्वर जाने २७ बकना और अंगों में दाह मुख से रुधिर का गिरना प्यास हडकल बेहोशी अंगों में पीड़ा और लाल नेत्र नींदका आना मूर्च्छा ये रक्तज्वर के लक्षणहैं २८ बारबार जँभाई का आना शरीर में दाह शरीरका टूटना सन्धि २ में दर्द भयानक नेत्र वमन आनाह शरीरका वर्ण और तरहका होजाय ये दृष्टि ज्वर के लक्षण हैं २९ ॥

(भूतज्वरकेलक्षण) भूतप्रेतपिशाचदैत्यदनुजैर्जातोज्वरोराक्षसैर्यस्तापंहृदिवेपथुंवितनुतेमूर्च्छाप्रलापंमदं॥ जृम्भामंगविम

❁ (प्रसङ्गाद्धारिद्रकसन्निपातस्यलक्षणंग्रन्थान्तरात्) हारिद्रदेहनखनेत्रकरांघ्रितापनिष्ठीवनादिकसनैरुपलक्षितोयः ॥ हारिद्रकस्सकथितःकिलसन्निपातः साध्योनचैवभिषजाज्वरकालरूप. ५ ॥

दैनंविकलतांहास्यंक्वचिद्रोदनंगीतंरक्तविलोचनंमनुजतंजानीहि भूतज्वरं ३० ॥

भूत प्रेत पिशाच दैत्य दानव राक्षस इनसे जो ज्वरहो उसके ये लक्षणहैं शरीरतत्ता हृदयमें कम्प मूर्च्छा व्यर्थ बकना मस्तहोना जंभाईका आना शरीरको तोडना बेकली हँसना कभीरोना कभी गीतगाना लाल२ नेत्र ये लक्षण भूतज्वरके हैं ३० ॥

(मलज्वरलक्षण) प्रलापोंगतापोभ्रमोहृद्विदाहस्तृषोद्गार निष्ठीवनेघूर्णदृष्टिः ॥ सकृन्मेहनंकंठजिह्वोष्ठशोषःशिरोगौरवंविट् ज्वरेलक्षणानि ३१ (खेदज्वरलक्षण) विष्टंभनंस्फोटनमंगदेशे श्वासःपिपासालसताप्रसेकः॥स्वेदोतिनिद्रामदवीर्यनाशोभवंति खेदज्वरलक्षणानि ३२ (शापज्वरकेलक्षण) श्यावास्यतोद्वेग वमीपिपासाविनष्टचेष्टाभ्रमतापमूर्च्छाः॥दुर्गंधतांगेहृदिवेपथुत्वं भवंतिशापज्वरलक्षणानि ३३ ॥

खोटा बोलना शरीरतत्ता हृदयमें दाह प्यास डकार बार २ थूकै टेढा देखे थोडा थोडा दस्त उतरै कंठ जीभ ओठ इनका सूखना शिरभारी ये मलज्वर के लक्षणहैं ३१ पेटका फूलना शरीरमें हडकल श्वास प्यास आलस लारका गिरना पसीना अतिनिद्रा मस्तपना वीर्यकानाश ये खेदज्वरके लक्षणहैं ३२ मुहँकाला उद्वेग रद्द प्यास शरीरकी चेष्टाका नाश होजाना भौंर शरीर तत्ता मूर्च्छा देहमें बासका आना हृदयका कांपना ये सब शापज्वरके लक्षणहैं ३३ ॥

(औषधजनितज्वरकेलक्षण) भवेदौषधीगंधजेचिह्नमेत ज्ज्वरेचित्तविभ्रंशतारक्तनेत्रे ॥ शिरोरुग्वमिर्मूर्च्छतागात्रशोषंपि पासाक्लमत्वंचनिद्राविनाशः ३४ (भयज्वरकालक्षण) भयात्कस्य चिदुद्भवेघोररूपेज्वरेचिह्नमेतद्भवेदंगकंपः ॥ मुखेशुष्कताभ्यंत रेत्यंतपीडाप्रलापोथचित्तभ्रमःशोकमूर्च्छा ३५ ॥

बिपेल औषधके सूंघने से जो ज्वर पैदा होताहै उसके ये लक्षण होते हैं चित्तका डामाडोलहोना लाल २ नेत्र मथवाय उलटीनका होना मूर्च्छा

शरीरका सूखना प्यास ग्लानि नींदका न आना ये लक्षण औषध जनित ज्वरकेहैं ३४ जिस किसीको भय से ज्वर पैदा हुआहो उसके ये लक्षण हैं अंगों का कांपना मुखका सूखना शरीर में बहुत पीड़ा व्यर्थ बकना चित्त चलायमान शोच और मूर्छा ३५ ॥

(कोपज्वरकेलक्षण) भवंतीहकोपज्वरेलक्षणानिस्फुरद्गात्रभंगंचलद्रक्तनेत्रं॥ प्रलापोथहृल्लासकंपार्तिमूर्च्छाविवर्णःप्रसेकोमुखस्तालुशोषः३६ (शस्त्रघातज्वरलक्षण) शस्त्रास्त्रदंडाश्मकशादिघाततोजातेज्वरेघोरतरेहिलक्षणं ॥ तापःपिपासाकफकंठरुद्धताशोथःप्रलापोऽरुचिरार्तिताभवेत् ३७ (अभिचारज्वरकेलक्षण) ज्वरेभिचारसंज्ञकेभवंतिलक्षणानिषट्॥ प्रलापशूलमोहतास्तृषांगकंपतारुचिः ३८ ॥

ये कोपज्वरके लक्षणहैं अंगोंका फड़कना शरीरका टूटना चलायमान लाल २ नेत्र वाहियात बकना खाली रद्दका आना कांपना दुःखका होना मूर्छा शरीरका वर्ण औरही तरहका होजाना लारका टपकना मुख और तालूका शोष ३६ शस्त्र कहिये तलवार और छुरी आदि और अस्त्र वो दंड कहिये लकड़ी आदि अश्म कहिये पत्थर कशादि कहिये कोरड़ा आदि इनके लगने से जो ज्वर पैदाहो उसके ये लक्षण हों ज्वरहो प्यासहो कफसे कंठका रुकना सूजन बड़बड़ाना अरुचि दुःख ये लक्षण हैं ३७ अभिचार से तथा मंत्रको उलटा जपने से जो ज्वरहो तथा किसीने जादू कियाहो इस ज्वरमें मुख्य ६ लक्षण होते हैं बड़बड़ाना पेटमें शूल बेहोशी प्यास शरीरकाकांपना अरुचि ये ३८ ॥

(कामज्वरकेलक्षण) रोमोद्गमःसाहसहर्षजृम्भाभीतिर्विषादोमदशोकरोषाः॥ एतानिचिह्नानिभवंतियस्यकामज्वरंतंकथयंतिवैद्याः ३९ (अथस्त्रीप्रसंगाज्जनित) स्त्रियोत्यंतसंगाद्भवेच्चिह्नमेतज्ज्वरोग्लानिनिष्ठीवनंश्वासकाशं॥ भवेद्वेपथुर्गात्रदेशेम्बुपूरस्तृषानिर्बलत्वञ्चपीडांचशोथः ४० ॥

रोमांच साहस जँभाई डरका लगना दुःखका होना मोहहो औरतथा शोच क्रोध ये लक्षण जिसमेंहों उसको वैद्य सब कामज्वर कहतेहैं ३९ जो

मनुष्य बहुत स्त्री से मैथुन करै उससे पैदाज्वरके ये लक्षणहैं ज्वरकाहोना ग्लानि वेरवेरमें थूकना श्वास खांसी कंप शरीरमें पसीना आना प्यास नाताकती पीड़ा सूजन ये ४० ॥

(क्षीणधातुमंदाग्निजज्वरलक्षण)धातोःक्षीणतयाथवाग्निशमनाज्जातोज्वरश्चिंतया शैथिल्यंकुरुतेरुचिंवितनुतेधत्तेतनौपाण्डुतां॥ सर्वांगन्तुदतेददातिकृशतांहर्षंपरंनाशते ॥ वीर्यत्वंजयतेरुतंनसहतेश्वासंभ्रमंविभ्रते ४१ (सन्तलज्वरकेलक्षण) वसतिरुधिरधातौयोज्वरोद्वादशाहं क्वचिदपिचदशाहंसन्ततंसन्ततोयं॥ प्रभवतिखलुनाम्नाश्वासकासांविधत्तेज्वरयतिनरदेहं यातिनाशंसपश्चात् ४२ (विषमज्वरकेलक्षण) निरन्तरंतिष्ठतिसर्वदेहेसूक्ष्मोज्वरोयोविदधातिशैत्यं॥ अत्युष्णतांयातिकदाचिदेवतंकष्टसाध्यंविषमंवदन्ति ॥ ४३ ॥

धातुके क्षीण होने से तथा मंदाग्निके होनेसे तथा चिन्तासे जो ज्वर पैदाहो उसके ये लक्षण हैं शिथिलता अरुचि शरीर पीलाहो सर्वांग में पीड़ा हो तथा शरीर का कृशहोना हर्ष जातारहै वीर्यकानाश श्वासभौंर का होना ४१ जो ज्वर रुधिर धातुमें पहुंचजाय वो ज्वर१२ तथा १० दिन बराबर बनारहै उसको संतत ज्वर कहते हैं उसमें श्वास खांसी तथा सबदेह का जरना बाद थोड़े दिन यह ज्वर मारडालै है ४२ जो ज्वर मन्द होके सब देहमें बराबररहै और कभी शीतलगे कभी ज्यादा शरीरगरमहो जाय उसको कष्टसाध्य विषमज्वर कहै हैं ४३ ॥

(महेन्द्रज्वरकेलक्षण) अहोरात्रयोर्वाद्विकालेत्रिकालेचतुष्कालकेवाप्रवृत्तिंनिवृत्ति ॥ करोतिज्वरोयःस्वतन्त्रोतिरौद्रोमहेन्द्रोहिनाम्नानिरुक्तोमुनीन्द्रैः ४४ (वेलाज्वरकेलक्षण) अहोरात्रयोरेकदेशेज्वरोयः समागत्यदेहेस्वरूपंविधाय ॥ नरंपीडयेन्नित्यशोनिर्दयन्तंविजानीहिवेलाज्वरंवैद्यराजः ४५ ॥

जो दिनरातमें दोदफे वा तीन वा चार दफे आवे और उतरजाय उस स्वतंत्र ज्वर घोरका महेन्द्र नाम मुनियोंने कहाहै ४४ जो ज्वर दिन रात में एक दफे एक अंगमें आयके फेर सब शरीरमें फैलकर शरीर को बहुत दुःख दे नित्य उसको वैद्य वेला ज्वर जाने ४५ ॥

(एकांतरज्वरकालक्षण) दिनैकांतरेयोविधायोग्ररूपं नराणां शरीरेप्रपीडेन्नितान्तं ॥ दिनैकंविमुच्याथधातूंश्चशेतेतमेकान्तरंत्वंविजानीहिवैद्यः ४६ (एकान्तरज्वरलक्षण) एकान्तरोज्वरोघोरोद्विविधःपरिकीर्त्तितः ॥ शीतेनैकःसमायातितापेनायातियोपरः ४७ (त्राहिकज्वरलक्षण) दिनद्वयन्तुविश्राम्यमेदोमज्जास्थिधातुषु ॥ यःकुप्यतितृतीयेह्नित्राहिकन्तंविदुर्बुधाः ४८॥

उसको हे वैद्य तू एकान्तर ज्वरजान जोएकदिनमेंघोररूपहोके मनुष्योंके शरीर को दुःखदे और एक दिन छोड़ कर आवे और धातून को सुखाय डाले उसको ४६ इकतरा घोरज्वर दोप्रकारकाहैएकशीत लगकरआवे और एक गरमीसे आवे ४७ जो ज्वर मेदा मज्जा हड्डीमें पहुंचजाताहै और दो दिनवीचमें देकर तीसरे दिनआवे उसको त्राहिक अर्थात् तिजारी पण्डित लोग कहते हैं ४८ ॥

(चातुर्थिकादिज्वरलक्षण) एवंचातुर्थिकोज्ञेयःपाक्षिकोमासिकस्तथा ॥ वार्षिकोमुनिभिःप्रोक्तोवर्षमायातिनाऽन्यथा ४९ (देवकोपजनितज्वरलक्षण) वापीकूपतडागगोपुरमठप्राकारवेदिप्रपा देवांगोपवनानिदेवसदनंछिन्दन्तियोमण्डपं ॥ साधुब्राह्मणयोगिनांपितृगवांपीडांप्रकुर्वन्तिये तेषांदेववरप्रकोपजनितोघोरज्वरोजायते ५० (एकांगज्वरलक्षण) प्राणिनामेकमंगंयोज्वरोरुजयतिध्रुवं ॥ तस्यांगस्यचयन्नामतन्नाम्नाज्वरउच्यते ५१ ॥

ऐसेही चातुर्थिक ज्वरजाने तथा पाक्षिक अर्थात् जो पंद्रहें दिनआवे तथा मासिक जो महीना में आवे तथा वार्षिक जो वर्षदिनमें आवे बीच नहीं आवे ये मुनिन ने कह्यो है ४९ जो मनुष्य वावली कुआ तालाब गोपुर मढ़ी प्राकार यज्ञकी वेदी प्याऊ देवप्रतिमा वाग मंदिर मंडप इनको तोड़ डाले तथा साधु ब्राह्मण योगी माता पिता गऊ इनको दुःखदेतेहैं तिनको ईश्वरके कोपसे घोर ज्वर पैदाहोताहै ५० मनुष्योंके कोईसे एक अंगमें ज्वरचढ़े और उस अंगका जो नामहो वह ज्वर उसी नामकरके कहा जाताहै ५१ ॥

ज्वरस्तुयस्यसंस्पर्शाद्गन्धाद्वादर्शनादपि ॥ ज्वरोभवतितन्ना म्नाइतिरोगविदोविदुः ५२ (अंतकज्वरलक्षण) श्वासोर्मीव हतेगलेकफचयैःसंरुद्धतेयोमुखात्फेनंसंवमतेशिरांविधमतेकाशं विधत्तेरतिं।आध्मानंकुरुतेचमोहमरुचिंहिक्कामतीसारकंतंविद्या ज्ज्वरमंतकंप्रियसखंमृत्योरसाध्यंस्फुटं५३(शोकज्वरकेलक्षण)अ र्थाऽपत्यकलत्रभ्रातृसुहृदांशोकोद्भवोयोज्वरःशैथिल्यंकुरुतेनरंवि मनसंश्वासंमुहुर्वेदनां॥स्तैमित्यंविकलंभ्रमंवधिरतांमूर्च्छांबलोज क्षयंप्रस्वेदंबहुमोहतामरुचितांनिद्रांतनौपांडुतां ५४ (रस गतज्वरलक्षण) कुर्यात्त्वचिस्थःपवनज्वरोनिशंरोद्गमंरूक्षत्वगा क्षिमीलनं ॥ जृम्भांगमर्दश्रवणाक्षिवेदनां विण्मूत्रवंधंमुखमिष्ठ तारती ५५ ॥

और जो ज्वर किसीवस्तु के छूनेसे अथवा सूंघनेसे वा देखनेसे हो वह उसी नाम से विख्यात होताहै ऐसे रोगके जाननेवाले कहते हैं ५२ श्वासका ज्यादा चलना गला कफके समूह से रुकाहो और जो मुखसे झागगेरे नाड़ीका जोरसे चलना खांसी इच्छा का नाश पेटका फूलना बेहोशी और अरुचि हिचकी दस्त का होना ये लक्षण कालज्वर मृत्युका प्यारामित्र जानना ये असाध्यहैं ५३ द्रव्य पुत्रादि स्त्री भैया सुहृद इनके नष्टहोने के शोकसे जो ज्वर होताहै उसके ये लक्षणहैं शरीरमें शिथिलता मनका विगड़जाना श्वास बेर२में दुःखका होना शरीर गीलेकपड़ेसे पोंछा साहो वेकली वहिरापना मूर्च्छा तथा बल तेज इनका नाशहोना पसीना बहुतहो बेहोशी अरुचि नींद शरीर पीला ५४ बातज्वर त्वचामें होतो येलक्षण हों रोमांच तथा त्वचाका रूखापन आँखोंका मीचना जंभाई अंगों का टूटना कान आंखमें दर्द दस्त पेशाव का वंदहोना मुख मीठा तथा अरति ५५ ॥

(त्वग्गतवातज्वरलक्षण) रक्तत्वचंदाहमतीवतृष्णामास्येकटु त्वंपरिदेहशोषं॥ऊष्मानमार्तिंबहुशीतलेच्छांपित्तज्वरश्चर्मगतः करोति ५६ (त्वग्गतपित्तज्वरलक्षण) लालामुखेगौरवमालसत्वं निष्ठीवनंशीतवपुःशिरोर्तिं ॥ निद्रांचमूत्राधिकतांप्रलापंश्लेष्म ज्वरश्चर्मगतःकरोति५७(त्वग्गतकफज्वरलक्षण)ज्वरःशोणित

स्थोभ्रमंदेहदाहेसरत्वंचनिष्ठीवनंताम्रनेत्रं ॥ शिरःपीडनंशोपमू
ष्मानमार्तिंपिपासामरोचंकरोतीतिमूर्च्छां ५८ (रक्तगतज्वरलक्ष
ण) पिपासाशिरोर्तिर्वमिःशूलमुग्रंप्रलापोंगकंपोरुचिर्भ्रंमनस्यं ॥
वपुःस्वेदरोमांचितंकंठदाहोरसस्थोज्वरोलक्षणैर्ज्ञायतेज्ञैः ५९ ॥

लालत्वचादाह अत्यन्तप्यासमुखकडुवाशरीरकासूखनागरमीमालूमहो घवडाहट शीतलवस्तुकीइच्छा येलक्षण पित्तज्वरत्वचामें होयतोहोतेहैं ५६ मुखसे लारकाबहना शरीर भारी आलस कफका थूंकना देह शीतल मथवाय निद्रा पेशावका ज्यादा गिरना वडवडाना येलक्षण कफज्वर चर्ममें पहुंचताहै तब होतेहैं ५७ जोज्वर रुधिरमें पहुँचजावे उसके ये लक्षणहैं और देहमें दाह रुधिरमिला थूकना तांबेसरीखे नेत्रलाल शिरमेंदर्द शोप गरमी घवडाहट प्यास अरुचि और मूर्च्छा ५८ प्यास मथवाय वमन दर्द बडबडाना अंगोंमें कॅपकॅपी अरुचि मनका विगडना शरीरमें रोमांच तथा पसीना कंठमें दाह येलक्षणोंसे जानो कि इसकेरसमेंज्वरपहुँचगयाहै ५९॥

(मांसगतज्वरलक्षण) भवंतिज्वरेमांसगेलक्षणानितमोष्मांगमर्दोभ्रमोमूत्रकृच्छ्रः॥ वपुःस्वेदमभ्यंतरेतीव्रदाहस्तृषावेदनाछर्दिरार्तिःप्रलापः६० (मेदगतज्वरलक्षण) भवंतिज्वरेमेदगेलक्षणानिशरीरेतिदुर्गंधितादंतपीडा ॥ मुहुर्मूत्रतावह्निनाशःक्लशत्वंत्रिषादोल्पसारोरुचिःश्वासकाशौ६१ (अस्थिगतज्वरलक्षण) ज्वरेस्थिप्रदेशेगतेलक्षणानि भवंत्यस्थिविस्फोटनंपर्वभेदः॥ शरीरस्यविक्षेपनंदेहदाहस्तृषोष्माविलापोभ्रमःस्वेदतापौ ६२ ॥

मांसमें जब ज्वर पहुँचजाताहै उसके ये लक्षण होते हैं अंधेरा आना गरमीका लगना शरीर का टूटना और पेशाव का रुक २ के गिरना शरीरमें पसीना हृदयमें ज्यादादाह प्यास बेकली रद दुःख वडवडाना ६० मेदामें ज्वर पहुँच जाताहै उसके ये लक्षणहैं शरीरमें वासआना दांतोंमें दर्द बेर २ मूतना जठराग्निका नाश देहकृश दुःख बलका घटना अरुचि श्वास और खांसी ६१ जिसका ज्वर हड्डोमें पहुँच जाताहै उसके येलक्षण हैं हडफूटनहो संधि२ में पीडा देहका इधर उधर पटकना तथा देहमेंदाह प्यास गरमी बिलाप भ्रम पसीना तथाज्वर ६२ ॥

(मज्जागतज्वरलक्षण) वहिःशीतताभ्यंतरेत्यंतदाहःतमःकंपनंमर्मभेदःप्रलापः॥ तृषाश्वासहिकार्त्तयोमूत्ररोधंभवंतिज्वरे मज्जगेलक्षणानि ६३ (शुक्रगतज्वरलक्षण) ज्वरःशुक्रदेशेस्थितेमृत्युदूतस्तदाज्ञायतेसतचिह्नैर्भिषग्भिः॥ भ्रमोवीर्यनाशस्त्वचाहीनशोफोबलोजःक्षयःश्वासकासौक्लमत्वं ६४ (धातुपाकीज्वरलक्षण) निद्राबलोजोरुचिवीर्यनाशोहृद्वेदनागौरवताल्पचेष्टा॥ विष्टंभतायस्य किलारतिःस्यात्सधातुपाकीमुनिभिःप्रदिष्टः ६५॥

बाहर से जाड़ालगै भीतर अत्यन्त दाहहो अंधेरा आना कापना मर्म स्थानों में दर्द बड़बड़ाना प्यास श्वास हिचकी वेकली मूतका रुकना ये लक्षण मेदामें ज्वर पहुंचजाताहै तब होते हैं ६३ जबमौतकादूत ज्वर शुक्र याने वीर्य्यमे पहुंचजाय उसको वैद्य सातलक्षणों से जाने भौंर वीर्य्य कानाश त्वचाका हीनहोना सूजनहोना बल तेज इनका नाश श्वास खांसी ग्लानि ६४ नींद बल तेज इच्छा वीर्य इनका नाश हृदयमें दुःख शरीरका भारीपना अल्पचेष्टा, दस्तका रुकना मनका न लगना येलक्षण जिसमें हों उसको धातुपाक मुनियोने कहाहै ६५॥

(तथाच) कायेधातुविपाकिनांपरकरस्पर्शोपिवज्रायते रात्रिःकल्पशतायतेल्पतरभोदीपोपिदावायते॥ शब्दोबाणसमायते मृदुगतिर्वातस्त्रिशूलायते यूकाशूचिकुलायतेतनुतमंवासोपिभारायते ६६ (ज्वरस्यदशोपद्रवाः) ज्वरस्यप्रसिद्धादशोपद्रवाः स्युस्तृषाविड्ग्रहोछर्यतीसारहिक्का॥ शरीरस्यभेदोरुचिःश्वासकासौसमूर्च्छाहिभागद्वयंतेप्रदद्युः ६७॥

धातुपाकी मनुष्य की देहमें हाथका स्पर्श वज्रके समान मालूम पड़े अल्परोशनीवालाभी जो दीपक सोभी ज्वालाके समान मालूमहो बोलना बाणके समानलगे मन्दगति चलनेवाला पवन त्रिशूल के समानलगे जुआं खटमल आदिका काटना सुईके समानलगे छोटाभीवस्त्र शरीरपर भारा लगे ६६ ज्वरके उपद्रव दश प्रसिद्धहैं प्यास दस्तका बंदहोना रद्द अतीसार हिचकीअरुचि श्वास खांसी ६७॥

शरीरस्यबाह्येयदाश्लेष्मवातौभवेतांतदाशीतलंबाह्यदेशं ॥ य दाभ्यंतरेऽभ्यंतरेशीतलत्वंभवेद्यत्रपित्तंविदाहोपितत्र ६८ यस्मि न्नङ्गेवायुर्यातितस्मिन्नंगेपीडांकुर्यात् ॥ पित्तंदाहंश्लेष्माशीतंसर्वा न्दोषान्सर्वेकुर्युः ६९ अंतर्दाहःप्रलापःश्वसनमतितृषानिग्रहो दोषवर्चों स्वेदःसंध्यस्थिशूलंभ्रमविकलतनूसंधिदेशेपुपीडां॥ अं तरवेगस्यचिह्नंनिगदितमपरैर्वैद्यराजेर्ज्वरस्य दाहादीनांलघुत्वं यदिभवतिबहिर्वेगरोगस्यचिह्नं ७० ॥

यदि वात कफ शरीरके बाहरहोवे तो बाहरका सबभाग शीतलरहे और जो वातकफ शरीरके भीतरहो तो भीतरही शीतलतारहै और पित्त जिस जगह होय तो दाहभी उसी जगहजाने ६८ जिस अंगमें वायु यानी वादी हो उसी अंगमें दर्दहो और जिस अंगमें पित्तहो उसी अंगमें दाहहो और जिस अंगमें कफहो उसी अंगमें शीतलता हो और जिस जगहपरजितने दोपहों उतनेही रोगोंको पैदा करैहै दो होयँ तो दो और तीन होयँ तो तीन और एक होयतो एक ६९ शरीरके भीतर दाह हो वाहियात बकना श्वास अत्यन्त प्यास का रुकना दोपोंका बढ़ना पसीना संधिनमें तथा हड्डीनमें शूलका चलना और ७० ॥

(असाध्यलक्षण) भवेद्यस्यदुर्गंधताश्वासवाहेतथांगप्रदेशे तिकंपोविवर्णः ॥ बहिःशीतताभ्यंतरेत्यंतदाहःसरोगीरवेःपुत्रगेहं प्रयाति ७१ कृशःपिच्छलांगोमहाश्वासवाहोभ्रमोहृष्टरोमारुणा क्षोंगकंपः ॥ तमोरात्रिदाहो दिवाशीतताार्त्तिःसरोगीनजीवेत्कदा चित्सुधाभिः ७२ जिह्वाश्यामतराथकंटकयुतारात्रौदिनेजागर मूश्वासोनिर्गतलोचनेशिथिलतानासामुखेशुष्कता ॥ यस्यांगेप रिमंडलानिबहुशोमूर्च्छाप्रलापस्तमः काशोरुद्धगलोगदीसगदि तोसाध्योभिषग्भिःपरैः ७३ ॥

ऐसा रोगी रविकापुत्र जो यमराज ताके घर जाताहै कैसा कि जिसके श्वास निकसने में वास आवे तथा शरीरमें अत्यन्त कँपकँपी शरीर का विवर्ण बाहरसे शीतलता और भीतर अत्यन्त दाह ७१ कृश पिच्छलदेह

बड़ी २ श्वासका चलना भ्रम हृष्ट रोम लालनेत्र अंगमें कंप अँधेरेकाआना रातमें दाहहोना दिनमें जाड़ा लगना तथा दुःख ऐसा रोगी अमृतकरके भी नहीं जीवे ७२ जीभ जिसकी काली और कॉटेसेव्याप्त दिनरात जागना श्वासका चलना नेत्रोंमें सुस्ती नाक मुखका सूखना जाके देहमें रुधिरके चकत्ता पडगये होयँ मूर्च्छा वडवडाना अँधेरा आना खासी से गलेका रुकना ऐसा रोगी वैद्योंने असाध्य कहाहै ७३ ॥

भवेद्यस्यनेत्राश्रुपातोंगहीनोमुखान्नासिकायापतेद्रक्तधारा ॥ मुखंकुंकुमाभंगलेकर्णमूलंसरोगीनजीवेत्कदाचित्प्रयत्नैः ७४कृश स्थूलतास्थूलतायाःकृशत्वं स्फुटन्नेत्रगोलंस्वभावोऽन्यथास्यात् ॥ शरीरार्द्धशूलंत्वचाहीनशेफोगमिष्येत्सरोगीयमस्यालयंवै ७५ गदीजिह्वयायोरसंवेत्तिनैवश्रुतिभ्यांनशब्दंननेत्रेणरूपं ॥ त्वचास्पर्शमुग्रंनसानैवगंधंसरोगीनजीवेत्सहस्रैरुपायैः ७६ ॥

जिसके नेत्रोंसे आंशूका गिरना शून्यदेह मुख नाकसे लोहूका गिरना मुंह जिसका लाल गलेमें कर्णमूल रोगहो वह रोगी कदाचित् यत्नों से न जीवे ७४ कृश तो मोटा और मोटा कृश और नेत्रोंके गोल फटेसे मालूमहों स्वभाव पलट जावे आधे शरीर में शूल चलै त्वचाहीन लिंगेन्द्री हो वह रोगी यमराजके घर जायगा ७५ जिस रोगीको जीभसे स्वाद न मालूमहो और कानों से शब्द न सुने और नेत्रोंसेजिसे दीखैनहीं त्वचा में स्पर्श न मालूमहो नाकसे गंध न मालूमहो ऐसा रोगी हजार उपाय करने परभी नहीं बचैगा ७६ ॥

भवेद्यस्यबाह्यांतरेशीतगात्रंनजीवेद्गदीचंडरश्मेसुताभ्यां॥ प्रलापंशिरश्चालनंयःकरोति सुषेणादिवैद्यैरसाध्योनिरुक्त ७७ गतायुर्मनुष्योनपश्येत्स्वजिह्वांध्रुवंनासिकाग्रंवशिष्ठस्यभार्याम् ॥ स्वकीयांचछायांविशीर्षां सरंध्रांभृशंयातिनाशंनरो योनुपश्येत् ७८ स्वरोयस्यहीनोगुदायस्यभ्रष्टाशरीरेकृशत्वंबलोजोविहीनः निमग्नेक्षणीसंभ्रमः श्वासकाशौसरोगी यमस्यालयंयातिशीघ्रम् ७९ ॥

जिसका बाहर भीतर शीतल शरीर हो वह रोगी चंडरश्मि जो सूर्य्य

तिसका पुत्र यमराज तिस करके मरै तथा वडवडाना शिरका इधर उधर पटकना जो रोगी करे वो सुखेणआदि वैद्यों करके असाध्य कहा है ७७ मरनेवाला मनुष्यअपनी जीभ ध्रुवका तारा नासिकाकाअग्रभाग अरुंधती इनको नहीं देखै तथा अपनी छाया का मस्तकनहीं दीखे तथा अपनी छाया में छेददखै वो रोगी निश्चयमरै ७८ स्वरजिस रोगीका मंदहो गुदा जिसकी भ्रष्ट शरीर कृश तथा निर्बल और तेजरहित नेत्र जिसके भीतरी धँसजावें संभ्रम श्वास खांसी ऐसारोगीयमपुरको जल्दी जावै ७९॥

रुदतिहसतिगीतंगीयतेकापिकालेश्वसतिमुदतिचिंसेभाषतेदु र्वचांसि।प्रलपतिपरिदेवंवादतेन्नृत्यतेयोवहतिवहुलतापंयास्यते मृत्युवक्रे८० (अथरोगमुक्तस्यलक्षणं) विमुक्तरोगस्यनरस्यलक्ष णंविड्वंधमोक्षौमनसिप्रसन्नता॥ देहेलघुत्वंरसनातिकोमलास्व ल्पातृषेच्छारसभोजनेभवेत् ८१ उरसिशिरसिकंडूरात्रिनिद्रांत्रगुं जाभवतिविशदचेतःस्वल्पतृष्णांगरौक्ष्यं॥ मुखकर्णविपाकःस्वे दयुक्तंशरीरंकृमिमलपरिपूर्णरोगमुक्तस्यचिह्नं ८२॥

रोवे हँसै कभी गीतगावे श्वासले कभी चित्तमें प्रसन्नहो कभी खोटा बोलै बडवडावे कभी वेदनाहो कभी ताली वजावै कभी उठकर नाचने लगै और ज्वर बडे जोरसों हो वो रोगी निश्चय मौतका ग्रासहोवै ८० नीरोगी मनुष्यके ये लक्षणहैं दस्त खुलकरहो मन प्रसन्न हलका शरीर जीभकोमल प्यासकम रसभोजन में इच्छाहो ८१ हृदयमें और माथेमें खुजालचलै रातमें अच्छीतरह नींदआवै आंतोंका बोलना चित्तप्रसन्न अल्प प्यास शरीर रूखा मुख और कानका पकना पसीने का आना मल कीडोंसेपरिपूर्ण ये रोग दूर हुयेके लक्षणहैं ८२॥

शीतंगुदंयस्यशुभाचदृष्टिश्चैतन्यकायःकफहीनकंठं॥ स्व ल्पांगतापोरसनातिशुद्धाशीर्षेलघुत्वंसरुजाप्रणश्येत ८३ तारु ण्यंविदधातिषट्सुदिवसेष्वाद्येषु घोरज्वरस्तस्मिन्नौपधमुत्कटंग दहरोदद्यान्नकालेक्वचित्॥ दोषोपद्रवसंयुतेतितरुणेदेयंभटित्यौ पधंवाह्निक्यंदिनपंचतेषुपुरतोजीर्णज्वरोतःपरं८४ (ज्वराणांस्व रूपाणितेपां) व [illegible]

पिंगाक्षोथमहोदरोथपरतोरौद्रौज्वलद्विग्रहः ॥ शंभोःश्वाससमुद्भवाभयकरादक्षक्रतुध्वंसकाःघोराघर्घरनादिनोमुनिवरैः प्रोक्ताज्वरास्तेष्टधाः ८५ ॥

शीतलतो गुदाहो शुभजिसकी दृष्टी शरीरमें चैतन्यता कफरहित कंठ देहमें मंद गरमी जीभ शुद्ध शिर हलका ये लक्षण गत रोगके हैं ८३ आदिके छः दिनमें तो घोरज्वर तरुण होताहै तिसमें करडी रोग हर्ती दवाई कभी नदे और कदाचित् तरुणज्वरमें दोषों का उपद्रवहोतो जल्दी दवाई देवै तो छः दिनसे परे पांचदिन तक ज्वरको बूढा करते हैं इस उपरात अर्थात् ग्यारहदिन उपरांत जीर्णज्वर कहाताहै ८४ रुद्रके श्वाससे पैदाहुये भयके देनेहारे दक्षप्रजापतिके यज्ञके बिगाडनेवाले घोर घर्र घर्र नादके कर्त्ता ज्वर मुनीश्वरोंने आठ तरहके कहे हैं सो लिखते हैं १ वीभत्स २ त्रिशिरा ३ कपिल ४ भस्मप्रहारी ५ त्रिपात् ६ पिंगाक्ष ७ महोदर ८ ज्वलद्विग्रह ये ८५ ॥

(वीभत्सज्वरस्वरूपमाह) वीभत्सोरुधिरारुणांवरवृतोमुण्डास्थिमालाधरो रक्ताक्षःकृमिसंकुलस्त्रिनयनोदुर्गंधिपूर्णोनिशं ॥ नग्नोरुद्रसमुद्भवोतिबलवान्कोपीजगत्घातकःकृष्णाङ्गोमलिनोमदान्धदमनःपुष्णोर्द्विजध्वंसकः ८६ (अथत्रिशिराज्वरस्यलक्षणं) अभूद्दक्षविध्वंसकोरुद्रकोपात् त्रिशीर्षस्त्रिपान्नंदनेत्रोतिकायः ॥ चलजिह्वयासृक्कणीलेलिहंतोवृहत्तालुजंघोरुणाक्षोतिक्रोधी ८७॥ अभूद्रुद्रकोपाज्ज्वरःकापिलाख्यो मुखांगारपुंजोद्विरन्तोतिकायः॥ मदाघूर्णिताक्षःस्फुरत्ताम्रकेशोमहामेघगर्जोमनोहर्षहर्त्ता ८८ ॥

रुधिरसे रंगेहुये वस्त्रों को पहिरे मुण्ड और हड्डियोंकी मालाका धारण करनेवाला लाल २ नेत्र कृमिसे जिसकी देह व्याप्त तीननेत्र वासजिसकी देहमें सदा आती है नंगा रुद्रसे पैदाहुआ अतियली कोपवान् जगत्का घातक कालेरंगका मलिन मस्तों को सीधा करनेवाला पुषादेवताके दांतों का तोडनेवाला ऐसा वीभत्सज्वरहै ८६ श्रीमहादेवजीके कोपसे तीनमाथे का त्रिशिरानाम ज्वर दक्षका मारनेवाला हुआ तीन जिसके पांव नव नेत्र अत्यन्तलंबा चलायमान छुरासी जीभसे ओठों को चाटता बडे ताल वृक्ष

के समान जंघा जिसके लाललालनेत्र जिसके अत्यन्तक्रोधी ८७ रुद्र भगवान् के कोप में एक कपिलनामक विख्यात ज्वर पैदा हुआ मुखमें अंगारों की उलटी करता अतिलंबा मद में चलायमान नेत्रहैं जिसके प्रकाशमान तांबेके समान बालहैं जिसके घोर मेघकी सी गर्जना करने वाला मनके हर्षका दूरकरनेहारा ८८ ॥

(भस्मविक्षेपकज्वरलक्षणं) अभूद्भस्मविक्षेपकोरुद्रकोपातूम- हाट्टाट्टहासोमुहुर्जृम्भमानः ॥ चलत्सप्तजिह्वःकरालोग्रदंष्ट्रःस्फुर त्तप्तताम्रारुणाश्मश्रुकेशः ८९ त्रिपाद्रुद्रकोपाद्बभूवारुणाक्षोभ्रुगो श्मश्रुविध्वंसकस्तब्धकर्णः ॥ ज्वरोदीर्घकायोमुहुःश्वासकर्त्तारणे नृत्यमानोंगदाहीतृपार्त्तः ९० (त्रिपादज्वरस्यस्वरूपम्) अभू द्वीरभद्रेश्वरादुत्कटास्योज्वरःपिंगनेत्रोल्पजंघोग्निवर्णः ॥ तृपा र्तोद्विजिह्वोनृसिंहद्वितीयश्चलत्तीव्रकेशःकृशःशुष्कमांसः ९१ ॥

श्रीरुद्रके कोपसे एक भस्मविक्षेपकज्वर पैदाहुआ महान् अट्टहासका करनेवाला बेर २ में जँभाईलेता चलायमान सातछुरासी जीभहै जिसके भयानक कीलासी डाढ़वाला प्रकाशमान तपाये तांबेके समानहै डाढ़ी और बाल जिसके ८९ श्रीरुद्रके कोपसे एक त्रिपाद नामक ज्वर पैदाहुआ तीनपैरवाला लालनेत्रवाला औरभृकुटीडाढ़ीका उखाड़नेवाला खड़ेकान जिसके बड़ीदेह जिसकी वारवार श्वासका कर्त्ता संग्राम में नाचनेवाला शरीरमें दाह तथा प्यासका कर्त्ता ९० वीरभद्र गणमें एक पिंगाक्षनामक ज्वर पैदाभया बेंड़ेमुख छोटी जांघ वाला अग्निसरीखा वर्ण वाला प्यास में दुखी दो जीभका मानो दूसरा नृसिंहही है चलायमान तीखेकेशवाला कृशसूखाहुआ शरीरका मांस जिसका ९१ ॥

(महोदरज्वरस्यस्वरूपं) बभूवातिदीर्घोदरोलंबकर्णोज्वलद- ग्निरूपश्चलद्रक्तनेत्रः ॥ तृषाश्वासजृम्भान्वितांगप्रमर्दोभटेशो ज्वरोरक्तवर्णःप्रमत्तः ९२ (पिंगाक्षकास्वरूप) ज्वलद्विग्रहोमुक्त केशश्चलद्भ्रूस्त्रिशूलासिहस्तोभुजंगेशपाशः॥ज्वरेशोतिवीर्योह रश्वासजातःकृशःशुष्कमांसोवलीभैरवेशः ९३ भिषक्चित्रचित्तो

रसवेककर्कशानांज्वराणांस्वरूपंमयाकीर्त्तितंतत्॥सुषेणाश्विनीजा त्रिधन्वन्तराणां विलोक्याखिलंशास्त्रमन्यागमंत्रं ६३ ॥ इति श्री भिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेहंसराजनिदानेवैद्यशास्त्रे ज्वरलक्षणानि ॥

एक ज्वर महोदर नामक पैदाहुआ जिसका बडापेट लम्बेकान जलती अग्निके समान स्वरूप चंचल लाल २ नेत्र प्यास श्वास जंभाई युक्त अंग का तोडनेवाला वीरों का मालिक लालवर्ण और मतवाला ६१ श्रीहर भगवान् के श्वाससे पैदा हुआ ज्वलद्विग्रहनामकज्वर खुलेभयेहैं बाल और चलायमान भ्रू त्रिशूल तलवार नागफास ये हैं हाथमें जिसके ज्वरों का राजा अतिबली कृश सूखे मांसवाला पराक्रमी भैरवेश प्रसिद्ध ६२ हंसराज कवि कहते हैं कि भिषक्चक्रचित्तोत्सव ग्रन्थमें कठोर ज्वरोंके स्वरूप तथा लक्षण मैंने कहे कदाचित् कोईकहै कि तुम्हारे कहनेका क्या प्रमाण है उसी शंकाको दूरकरते हैं सुषेण अश्विनीकुमार अत्रिऋषि धन्वंतरि इनके बनाये हुये ग्रन्थोंको देखकर तथा और जे माधवादि अर्वाचीन आचार्योंकामत उसको देखकर यह ग्रन्थ मैंने निर्माण किया है इससे यह ग्रन्थपठन योग्यहै ६३ ॥ इतिहंसराजार्थबोधिनीटीकायांज्वराधिकारस्स माप्तमगमत् ॥

(अतिसारलक्षणानि । वातातिसारकेलक्षण) तृष्णाग्लानि र्नितांतंहृदिजठरगुदेशूलमुग्रंसदाहं स्वल्पंस्वल्पंपुरीषंप्रभवति सततंनैवमर्वच्युतिःस्यात्॥ अन्तर्दाहश्चश्वासोरुचिविकलतनू वक्त्रनाशातिशोषः वातातीसारचिह्नंनिगदितमृषिभिःपूर्वजेर्वैद्य विद्धि १ (पित्तातिसारकेलक्षण) नानावर्णंपुरीषंमधुवससदृशं दुष्टदुर्गंधियुक्तं वारंवारंसततंप्रचलतिगुदतःकंपसंतापयोगः ॥ शूलंदाहोगुदाग्रेहृदिनशिवदनेशोषतृष्णाश्रमत्वं पित्तातीसार चिह्नंकथितमृषिवरैरत्रिभारद्वजाद्यैः २ (कफातिसारकेलक्षण) सकष्टंगुदातःपुरीषप्रवाहश्चलत्फेनिलोमेदुरोदुष्टगंधिः॥ हरित् श्वेतकृष्णाकृतिःकष्टसाध्योभवेच्चिह्नमेतत्कफस्यातिसारे ३ ॥

तृषा ग्लानि अत्यन्त हृदयमें पेटमें गुदामें घोरदर्द तथा दाह थोडा २

मलनिकसै सब न निकसे भीतरदाहहो श्वासअरुचि देहमेंप्रेकली मुख नाक इनका अत्यन्त सूखना ये लक्षण वातातिसारके पहले ऋषि तथा वैद्योंने कहेहैं १ दस्त जिस रोगीका चित्र विचित्ररंगका निकसै तथा सहतके रंग का व वसाके रंगकानिकसे और दुर्गंधयुक्तहो वारवारमेंतत्ताजावे कंप तथा संतापके साथ और शूल दाह ये गुदाके द्वारपरहों तथा हृदयमें नाकमें मुख इनमें शोषहो प्यास और अनायासश्रमहो ये लक्षण ऋषिन में श्रेष्ठ अत्रिऔर भारद्वाजादिकोंने पित्तातिसार के कहेहैं २ जिसके दस्तकाप्रवाह गुदासे बड़ेदुःखसे जावे जिसमें झागहो चिकनाहो दुष्टगंधहो हरा श्वेत कालावर्णहो वे कष्टसाध्य कफातिसारके लक्षणहैं ३ ॥

(सन्निपातातिसारलक्षणम्) अतीसारेसारेकफपवनपित्तप्रज निते गुदेपार्श्वेकुक्षौजठरहृदयेशूलमरुचिः॥ मुखेकंठेशोषोभवति सततंछर्दिररतिः तृषाकासःश्वासोवपुषिपरिशोफोङ्गदहनम् ४ (रक्तातिसारकेलक्षण) वारंवारंपुरीषंभवतिसरुधिरंकंठतालो ष्ठशोषो वस्तौपादौप्रपीडाहृदिजठरगुदेपार्श्वदेशेषुशूलम् ॥ ग्ला निःकार्यकृशत्वंपरिगलिततनुर्निर्बलत्वंशरीरे रक्तातीसारचिह्नंप्र वरमुनिजनैःप्रोक्तमेतन्नितांतम्५(आमातिसारकेलक्षण) आमं स्वल्पंपुरीषंसितरुधिरनिभंपीतवर्णंसकष्टंवारंवारंप्रतप्तंप्रचलति गुदतःपूयदुर्गंधियुक्तम्॥स्निग्धंशूलंगुदाग्रेप्रभवतिपरितःफेनिलं पिच्छलंवा आमातीसारचिह्नंमुनिवरवचनात्कीर्त्तितंहंसराजैः६॥

वातपित्त कफसे पैदाहुआ घोरअतिसार उसमें ये लक्षण होतेहैं किगुदा पीठ कोख पेट हृदय शूलका चलना अरुचि मुख कंठका सूखना रद तथा मनका न लगना प्यास खांसी श्वास शरीर में सूजन शरीका दहन ४ वारवार दस्त रुधिर मिलाहुआहो कंठ तालू ओठ इनकासूखना मूत्रस्थान तथा पैरों में पीड़ा हृदयमें पेटमें गुदामें पीठमें शूल तथा ग्लानि शरीर का कृश तथा गलना तथा निर्बल होना ये लक्षण रक्तातिसारके मुनीश्वरों ने निश्चय करके कहे हैं ५ आममिला थोड़ा २ दस्तहो श्वेत तथा रुधिर के समान तथा पीलावर्ण साथ कष्टके दस्तहो वारवार तत्तागुदासे रांद दुर्गंध युक्त चिकना गुदाग्र में पीड़ा तथा झाग युक्त और गाढा ये लक्षण अतिसारके मुनीश्वरों के वचनसे हंसराजने कहाहै ६ ॥

(अतिसारकाअसाध्यलक्षण) अतीसारिणंतंत्यजेच्छीतगात्रं तृषाशोथशूलान्वितंश्वासयुक्तम् ॥ ज्वराध्मानहिक्कान्वितंदाह मूर्च्छागुदाभ्रष्टशोषार्तिकासादिजुष्टम् ७ (अतिसारकीउत्पत्ति) विरुद्धाशनैःस्निग्धदुग्धान्नदोषैः द्रवस्नेहदुष्टांबुमद्यादिपानैः ॥ गरिष्ठाम्लपिष्टैःकृमीणांविकारैरतीसाररोगोभवेन्मानवानाम् ८ (अतिसारेपथ्यम्) अतीसारेत्यजेत्स्नानंसंतापंवह्निसूर्ययोः ॥ तैलाभ्यंगंचव्यायामंगुरुस्निग्धादिभोजनम् ९ ॥ इतिश्रीभिषक् चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेअतीसारलक्षणम् ॥

ऐसे अतिसारी मनुष्यको वैद्य इलाज न करें कैसेको कि जिसका शीतल शरीरहो प्यास शूल युक्तहो श्वास ज्वर अफरा हिचकी सूजन इन करके युक्तहो दाह मूर्छा तथा काचका निकरपरना शोकदुःख खांसी युक्तको ७ विरुद्ध भोजन करनेसे चिकनी तथा दूध तथा अन्नइनकेदोपसे पतलीतथा तेजकी तथा दुष्टजलके पीनेसे मदिरादिके पीनेमे भारी खट्टा तथा पीसा अन्नके खानेसे और कृमीनके विकारसे मनुष्य॰ अतिसार रोग पैदाहोयहै८ अतिसारवाला मनुष्य ये काम न करै नहाना अग्नि और सूर्य इनकेतेजका सहना तेलका लगाना तथा कसरत कुस्तीका करना भारी चिकना आदि भोजनका करना ९ ॥ इतिहंसराजार्थबोधिन्याअतिसारनिदानम् ॥

अथसंग्रहणीनिदानम् ॥

(वातसंग्रहणीलक्षणम्) वातोत्थाग्रहणीगदःप्रकुरुतेविड्बं धनंमूर्च्छनंकासंश्वासतरंमुखंचविरसंकंपंशरीरेभृशम्॥ कुक्षौता लुनिमस्तकेहृदिगलेशोषोगुदेवेदनां कष्टंप्रच्यवतेपुरीषमशकृ न्सामंसशब्दंघनम् १ (पित्तसंग्रहणीकेलक्षण) चिह्नंपित्तग्रहण्यां प्रभवतिहृदयेकंठदेशेतिदाहः शूलमेढ्रेगुदाग्रेरुधिररतिरतः शुष्क फेनंपुरीषम्॥ तुच्छंतुच्छंसकष्टंकचिदपिबहुशोदुष्टगन्धिप्रयुक्तं पी तंवाकृष्णरूपंवसमदृशनिभंरोमहर्षोनितृष्णा २ (कफसंग्रहणी केलक्षण) कफसंग्रहणीकुरुतेहृदयेजडतामुदरेगुरुतामरुचिम् ॥ मनसिभ्रमतांगरुजंशिथिलंसितफेनयुतंचपुरीषमरम् ३ ॥

वादीसे उठी संग्रहणी दस्तको बंदकरैहै मूर्च्छा खांसी श्वास मुखबेरस शरीरमें कंप कोख तालुआ माथा छाती गला इनका सूखना कष्टसे थोडा२ विष्ठाका त्यागहोना आम मिलाहुआ शब्दके साथ गाढा १ पित्तकी संग्रहणीके ये लक्षणहैं हृदय में और कण्ठ में दाह जिसमें शूल गुदाके अग्रभागमें रुधिरका गिरना सूखा तथा झागमिला तथा कष्टसे थोडा थोडा कभी ज्यादा बासको लिये पीला वा काला वा यलाके समान दस्त हो रोमांच तथा प्यास हो २ कफकी संग्रहणी में हृदयका जकडना पेट का भारीहोना मनमें अरुचि और देहमें दुःख तथा शिथिलता सपेदझागों का मिला दस्त ये लक्षण कफसंग्रहणी के होतेहैं ३ ॥

(त्रिदोषसंग्रहणीकेलक्षण) ग्रहण्यांत्रिदोषोद्भवायांसकष्टंपुरीष द्रवंशब्दयुक्तंवसाभम्॥ भवेदल्पमल्पंकचिद्रक्तवर्णगरिष्ठोदरंदुष्ट दुर्गंधिमिश्रम् ४ (सन्निपातकीसंग्रहणी) विष्टंभग्रहणीगदःप्रकुरुतेदोषैस्त्रिभिःसंभवो वैरस्यंशिरसिव्यथांगुरुतमांशूलंगुदापीडनम् ॥ आलस्यंहृदयेगुरुत्वमरुचिंकासंतृषासंभ्रमं श्वासाध्मान विवर्णतोदरकृमीन्दाहंकरांघ्रोर्वमिम् ५ अतीसारेगतेमंदवह्नी च्छायातिभोजनैः ॥ वर्त्ततेयोभवेत्तस्यग्रहणीदारुणाभृशम् ६ ॥

सन्निपातसे पैदाहुई जो संग्रहणी उसमें ये| लक्षण होते हैं साथ कष्टके और शब्दके दस्तका होना तथा यला के समान और थोडा २ कभी लालरंगका पेटभारीरहै और बासमिला दस्तहो ४ पेटमें अफरा करती है तथा मुखमें विरसता शिरमें दर्द और शूल तथा गुदामें पीडा आलकस हृदयका भारीहोना अरुचि खांसी प्यास और श्वास पेटका फूलना शरीर बुरेरंगका पेटमेंकृमी हाथ पाँवों में दाह और वमन ५ जब अतिसार चलाजाय औरजठराग्निकी इच्छा अतिभोजन से बंदकरदे उसके घोर संग्रहणी होतीहै ६ ॥

(संग्रहण्यांपथ्यम्) व्यायामंमैथुनंरुक्षंभोजनंवह्नितापनम् ॥ तैलाभ्यंगंदिवास्वापंग्रहणीरोगवान्त्यजेत् ७ इतिश्रीविषक्चक्र चित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेग्रहणीलक्षणम् ॥

स्त्रीसङ्ग रूखाभोजन आंचसेतापना तेललगाना दिनमें सोना ये संग्रहणी

रोगवाला त्यागदे ७॥ इतिदत्तरामकृतहंसराजार्थबोधिनीटीकामेंसंग्रह-णीरोगलक्षणसमाप्तहुवा ॥

(अथअर्शनिदानम्)गुदाग्रेषुजातानिमांसांकुराणिचतुस्त्रीणि संख्यानिसांगानियानि॥ भवन्तीतिदुर्नामसंज्ञानिनूनंमरुतश्ले ष्मपित्तोद्भवानीहतानि १ (वातकीबवासीरकेलक्षण) शुष्कावात समुद्भवाश्चिमिचिमास्तथागुदास्यांकुराः म्लानाःश्यामतराःख राश्चविकटानीलासिताःक्वचित् ॥ खजूराकलयोंघ्रिहस्तसहि ताःशीर्षाननासंयुताः भिन्नाविस्फुटिताननाज्वरकराःपापोत्थिता दुःखदा२वातार्शांसिकृशत्वमेवबहुलंकुर्वन्तिविड्बंधनं क्षुन्नाशंब लवीर्यकांतिहरणंशूलंगुदापीडनम् ॥ शोषंकंडुरुजंविकारमधि कंशब्दंगुदातोनिशम् ॥ आध्मानंजठरव्यथांगुरुतमाप्लीहंत नौपांडुताम् ३ ॥

गुदाके अग्रभागमेंहुवे तीन वा चार मांसकेअंकुर अंगकरकेसहितखोटा नामसंज्ञा जिनकी ऐसे वात पित्त कफसे पैदा होतेहैं १ बादीसे पैदाहुए ये जो गुदाके मस्से उत्पन्नहों सूखेहों थिमचिमी लियेहों टेढ़ेहों कुम्हिला-येहुयेहों कालेहों खरदरे बाँके नीले सुपेदहों खजूरफलके सदृशहों हाथ पेर शिर मुँहकेचिह्न संयुक्तहों अलग २ फटे मुखके ज्वरकरनेवाले पापसे पैदा दुःखके देनेवालेहैं २ बादीकी बवासीर मनुष्यको कृश करै है तथा दस्तकोबंदकरै भूखको बंदकरै बलवीर्य तेजको दूरकरैहै शूल पेटमें गुदा में दर्द शरीरकोसुखावे खुजलीचलै दुःखकरै अधिक बिकार तथा गुदासे शब्दके साथ अधोवायु चलै अफरा पेट में भारी व्यथा प्लीह शरीर पीलाकरैहै ३ ॥

(पित्तकीबवासीरकालक्षण) गुदांकुरास्तुपित्तजाभवंतिप क्वबिम्बभाःस्रवंतिरक्तसुल्वणंचमासिमासिमेदुराः॥ अजाविशूक रीशुनीगवांस्तनोपमाहिते॥ खराजलौकिकाननाःमहांतदोषसंभ वाः ४ स्त्रवल्पात्स्वल्पतरंपुरीषमरतिंविड्बंधनंकूजनं कष्टंवातस मन्वितंसरुधिरंशूलंगुदागर्जनम् ॥ प्लीहंवीर्यबलक्षयंशिथिलतां गुल्मांत्रवृद्धिभ्रमः पित्तार्शांस्यरुचिंत्वपांबहुतरांकुर्वंत्यतृप्ताहंश्र

मम् ५ (क.फबवासीरकेलक्षण) कंडूत्राढ्यागुदसंभवाखरतरामांसांकुरापिच्छलास्तब्धाः श्वेतनिभाःमृगीस्तनसमाः स्निग्धाश्च स्पर्शप्रियाः ॥ स्थूलामूलदृढाभवंतिमिलिताःकर्पासवीजोपमाः चंध्याबद्धमुखाव्यथादिजनकाःपापोद्भवादारुणाः ६ ॥

पित्त ववासीरके मस्से पके कुंदूरूफलके समान हों जिनसे खूनटपके महीना महीनामें छिपाहुआ वकरी शूकरी कुतिया गौ इनके थनोंके सदृश हों खरदरेहों जोंकके मुखके आकारहों ये वहुत दोपमे होतेहैं ४ पित्तकी ववासीर दस्तको वहुत कम निकारै मनकहीं न लगे दस्तका वंद होना गूंजना कष्ट पूर्वक अधोवायु रुधिर के साथ निकसना शूल के साथ गुदा का गर्ज्जना प्लीह वीर्य वलका नाश शिथिलता गोला अंत्रवृद्धि भ्रम अरुचि ष्यास ज्यादा आनाह श्रम ये लक्षण पित्तकी ववासीरकरैहै ५ गुदाके मस्सों में खुजली चले खरदरेहों और गाढ़ टेढ़ेहों रुपेदहों मृगीके स्तनों के समानहों चिकने और सिरानाप्रियलगे स्थूल दृढ़ जडवाले कपास वीजके समानहों रुधिर न निकलेवद्धमुखवालेदुःखकेदेनेवाले पापसेउठेदारुण ६॥

(कफकीववासीरकेलक्षण). संकोचंगुदबंधनंचजठरेकुर्वंत्यनाहंदृढं तुच्छंकष्टतरंपुरीषमशकृन्निद्रांतनोपांडुताम्॥आध्मानंगुरुताभृशंशिथिलतांहर्षक्षयंक्षीणतांश्लेष्मार्शांसिशिरोरुजंबहुतरंजाड्यम्वलौजःक्षयम् ७ (सन्निपातववासीरकालक्षण) अर्शांस्यसाध्यानिगुदोद्भवानित्रिदोषजातानिसमस्तरोगान् ॥ तन्वंतिकार्श्यंरुधिरंस्रवंतिदहंतिवीर्यंददतीहदुःखम् ८ (वातकी ववासीरकापथ्य) त्यजेदर्शमासंयुतोवातजेन नरःसर्वदामैथुनं रूक्ष्यभोज्यम् ॥ कषायंश्रमंमद्यपानंविदाहि जलस्यावगाहंत्रहिःश्वापमेतत् ९ ॥

गुदाका बंधन तथा संकोच उदरमें अनाह थोड़ाकष्टके साथ मलका त्याग नींद तथा पीलिया अफरा भारीपना शिथिलता हर्षक्षय क्षीणपना मधवाय वल तेजका क्षय ये कफकी ववासीर के लक्षणहैं ७ त्रिदोप में पैदा हुई ववासीर सव असाध्यहैं और सवरोगों को पैदा करैहै कृशताको पैदाकरै रुधिरको ज्यादा निकारै वीर्यको दहन करै दुःख को देय ८ वातकी ववा-

सीरवाला मैथुन रूखा भोजन कसैली वस्तु श्रम मद्यपान दाहकर्तावस्तु जलमें घुसिके स्नान बाहरकासोना ९ ॥

(पित्तकीबवासीरकापथ्य) पित्तजेनार्शसायुक्तस्त्यजेत्क्षारोष्णभोजनम् ॥ व्यायामंसूर्यसंतापंकट्वम्ललवणानिच १० (कफकीबवासीरकापथ्य)कफार्शसायुक्तनरःप्रवातंजलावगाहंमधुराम्लशीतम् ॥ त्यजेदतिस्निग्धगरिष्ठभोज्यंस्वापंदिनेजागरणंरजन्याम् ११ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेअर्शसांलक्षणम् ॥

पित्तकी ववासीरवाला मनुष्य इतनी वस्तु त्यागदेय क्षार मिला अन्न तथा गरमभोजन दंड कसरत सूर्य्य के घाम में डोलना कडवी खट्टी चरफरी नोनकीवस्तु १० कफकी बवासीरवाला नर हवा जलमें घुसकरन्हाना मीठीवस्तु शीरी तथा खट्टा अतिचिकनी भारी वस्तुका भोजन दिनमें सोना रातमें जागना त्यागदे ११ इतिहंसराजार्थबोधिनीटीकामेंबवासीररोगसमाप्तहुआ ॥

(भगंदरलक्षणम्) गुदतःपरितोह्यिनीयेंगुलके पिडिकार्त्तिकरीरतिकृज्ज्वरदः॥भगदारुणकोरुधिरेणयुतोमुनिभिर्गदितस्तुभगंदररुक् १(वातकेभगंदरकालक्षण) भगंदरोमरुद्भवोरुजांकरोतिदारुणांह्यपानवातसंभवोगुदंप्रपीडयेन्निशम् ॥ करोतिपैडिकाशतंविपाकदाहसंयुतंव्रणैश्चरौधिरीनदीपुरीषमूत्ररंधनम् २(पित्तजनितभगंदरकेलक्षण)भगंदरोतिदारुणःकरोतिपित्तजोहितं गुदेचपैडिकारुणाविपाकदुःखभूमिकाः॥ अनेकधामुखाखरास्तुपूयशोणितावहः कटौठ्यथामनेकधामपानकोपतोभवाम् ३ ॥

गुदाके चारों तरफ दूसरे अंगुलमें मरोरी दुःखकी देनेवाली अरतिकी करनेवाली ज्वरकी करनेवाली भगके और गुदाके बीचमें भगकीसी तरह भगंदारणार्क रुधिर युक्त होताहै इसीसे मुनियों ने इसका नाम भगंदर कहा है १ बादी से और अपानवायुसे उत्पन्न जो घोर भगन्दर वो दारुण पीडा करै है और गुदा में अत्यन्त दुःखहो और सैकडों मरोरी गुदाके ऊपर करैं और वे पक जावें तथा दाहहो और घाव होजाय रुधिर वहै दस्त पेशावकी बन्दहोना ये लक्षण होतेहैं २ पित्तसे पैदा जो अतिदारुण भगन्दर

उसके ये लक्षणहैं दुःखहो गुदाके ऊपर लाल २ मरोरीहों और वे पकिजा-वें खेदको पैदाकरें अनेकमुखहो करडीहो राधरुधिर जिनसे स्रवे कमरमें दर्दहो यह भी अपानवायु के कोपसे पैदाहोताहै ३ ॥

गुदांतेपीडिकांकुर्याद्भगंदरगदोनिशम्॥कंडूशोफंयथापाकेरक्तपूयवहाःक्रमीन् ४(सन्निपातजनितभगंदरलक्षणम्) आहुस्तंचभगंदरंकफमरुत्पित्तोद्भवंपंडिताः विस्फोटैर्दहतेगुदंकृमिकुलैरत्यामिषंयोनिशम् ॥ पक्वेश्छिद्रसमन्वितैःसरुधिरंपूयंस्रवत्यामिषंशोथंकंडुरुजादिकंवितनुतेऽपानेनविड्बंधनम् ५इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेभगंदरलक्षणम् ॥

भगंदरका रोग गुदामें मरोडी पैदाकरै और उनमें खुजलीचलै तथा शोफ हो पकनेमें दर्दहो रुधिर तथा राध वहे और कृमि पडजायँ ४ जिस भगंदर में ये लक्षणहों उसको पण्डित सन्निपातका कहतेहैं जिसमें बडे २ फोडे करके गुदा में दुःखहो और कृमीन के समूहसे निरंतरव्याकुलहो और पक जाय तथागुदाके वारपार छेद होजाय उनछेदोंमें राधरुधिर मलमांस नि-कसै सूजनखुजलीहो अपान पवनसे गुदाद्वारा मलकानहीं उतरना ५॥ इतिहंसराजार्थबोधिनीटीकामेंभगंदररोगसमाप्तहुआ ॥

(अजीर्णरोगकेलक्षण) भुक्तान्नपाचितंनैववह्निनोदरजेनतत् ॥ तस्योपरिपुनर्भुक्तमजीर्णंतंविदुर्बुधाः १ भुक्तान्नंनविपाकमेतिजठरेविण्मूत्रयोस्तंभनाद्रात्रौजागरणाद्दिनातिशयनादत्यंबुपानान्नृणाम्॥ दुर्भक्ष्याद्विषमाशनादतिभयात्क्रोधाद्विरुद्धासनात् मंदाग्नौबहुभोजनाद्गुरुतरात्प्रद्वेषतश्चिंतया २ वाताधिकेविषमतासमुपैतिवह्निःपित्ताधिकेभवतिवह्निरतीवतीक्ष्णः ॥ श्लेष्माधिकेजठरजोहुतभुक्समंदोवाताधिकेषुसमकेपुसमोग्निरंत्ये ३ ॥

खाया हुआ तो अन्न जठराग्नि करके पचानहीं और तिसके ऊपर फेर खावे उसको पंडित अजीर्ण कहतेहैं १ मलमूत्रके रोकनेसे रातमें जागना दिनमेंसोना वहुतपानीपीना गरिष्ठभोजनकरना विषमभोजनसे अतिभय से क्रोधकेकरने से विरुद्धभोजनसे मंदअग्निमें ज्यादा भोजन से द्वेषसे चिन्ताके करने से खायाहुआ अन्न पेटमें पचता नहीं है २ वाताधिकसे

विषमाग्नि पित्ताधिकसे तीक्ष्णाग्निकफाधिकसे मन्दाग्नि और वात पित्त कफके समान होनेसे समाग्नि होती है ये चार प्रकार की अग्नि मनुष्यों के होतीहै ३ ॥

विष्टब्धंविषमोनलःप्रकुरुतेरोगांश्चवातोद्भवान् तीक्ष्णाग्निर्विदधातिपित्तजनितान्रोगान्विदग्धाशनम् ॥ आमंश्लेष्मसमुद्भवान्विलनुतेरोगांश्चमन्दानलो नैरोग्यंहुतभुक्समोहिसततंधत्तेरुचिंमानसीम् ४ (वाताजीर्णकेलक्षण) वाताजीर्णेचिह्नमेतत्प्रसिद्धंजृम्भाशूलंक्षुत्पिपासांगमर्दः ॥ साम्लोद्गारोधूमयुक्तोतिकष्टःश्वासःशोषोमूत्रघातोथहिक्का ५ (पित्ताजीर्णकेलक्षण) मूर्च्छादाहःसंभ्रमःशूलमुग्रंतृष्णोद्गारोधूमयुक्तोतिसाम्लः ॥ मोहःस्वेदःछर्दनंगन्धिसार्द्रं पित्ताजीर्णेलक्षणंसद्भिरुक्तम् ६ ॥

विषमाग्नि अफरा और वातके रोगोंको पैदाकरैहै तीक्ष्णाग्नि पित्त के रोगोंको और अन्नको दग्ध करदे मन्दाग्नि कफके रोगोंको और आम को पैदा करैहै समाग्नि नैरोग्य और रुचिको पैदाकरैहै इसीसे यह अग्निश्रेष्ठ है ४ वातके अजीर्णमें ये लक्षण होतेहैं जंभाई शूल प्यास धूमयुक्तखट्टी डकार भूंख अंगोंका टूटना अतिकष्ट श्वास शोष मूत्रघात हिचकी ५ मूर्च्छा दाह भ्रम घोरशूल प्यास धूमयुक्त खट्टी डकार बेहोशी पसीना वासके साथ और गाढ़ीरद्द ये पित्ताजीर्णके लक्षणहैं ६ ॥

(कफाजीर्णकेलक्षण) कफस्याजीर्णेह्नि भवतिगुरुताछर्दिरधिकाअतीसारःशोथोरुचिरपितृषाक्षुद्विकलता ॥ वमिर्लालावक्त्रादरतिरुदरेभारमधिकंशिरःकंठेनाभौगुदपवनसंचारमधिकम् ७ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रे अजीर्णनिदानंसमाप्तंशुभम् ॥

शरीर भारी बहुत रद्दका होना अतीसार सूजन अरुचि प्यास क्षुधा बेकली वमन मुखसे लारका बहना मनका न लगना पेटभारी शिरकंठ नाभि इनमें अपानवायुका चलना ७ इति हंसराजार्थबोधिनीटीकामें अजीर्णनिदान समाप्तहुआ ॥

(अलसविलम्बिकानिदानम्)अजीर्णतोविसूचिकाभवेद्विलंबि काथवाविसूचिकोर्ध्वगामिनीक्षणेननाशयेन्नरम् ॥ अधोगतिर्विलं बिकाविलम्बकारिणीतिसाअपानवातप्रेरितामनोजवृत्तिहारिणी १ भुक्तान्नंप्रहरात्पूर्वेद्रवंकृत्वोर्ध्वमानयेत् ॥ यासाविसूचिकाप्रोक्ता धोनयेत्साविलंबिका २ (विसूचिकाकेलक्षण) अतीसारमूर्च्छा पिपासांगपीडाभ्रमोल्लासहिक्काविमुक्तांगसन्धिः ॥ निमग्नेक्षिणी कृष्णदन्तोष्ठजिह्वाविसंज्ञाविसूच्यांभवन्तीहशूलम् ३ ॥

अजीर्णसे विसूचिका वा विलंबिका पैदा होती है जिसमें वमन हो उसे विसूचिका कहतेहैं और जिसमें दस्तहो उसे विलंबिका कहते हैं विसूचिका क्षणमें मनुष्यको मारडारै और विलंबिका कुछदेरमेंमारैहै अपान वात करके प्रेरित मनतेज इनकी वृत्तिको दूर करनेवाली है १ ये माधव कहे पहले श्लोकमें जो कहिआये उसेही फेर कहतेहैं खाया हुआ अन्नको पहरभर पहले पतलाकर जो ऊपरकी रास्ता अर्थात् रद्दलावेउसे विसूचिका कहतेहैं और जो नीचे मार्ग अर्थात् दस्तलावै उसेविलंबिकाकह- तेहैं २ दस्त मूर्च्छा प्यास अंगोंमेंपीडा भ्रम उल्लास हिचकी अंगकीसंधि २ ढीली होजायँ नेत्र बैठजायँ दांतजीभओठ काले बेहोशी शूल ये लक्षण विसूचिकाके हैं ३ ॥

विसूच्यामशुद्धिर्वमिर्मूत्रघातोभवेद्वेपथुःकंठवक्त्रोष्ठशोषः ॥ विसंज्ञारतिर्देहदाहोल्पशब्दस्त्वचाकोचनंक्षुद्विनाशोल्पचेष्टा ४ इतिश्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेअजीर्णविसू चिकालक्षणम् ॥

अपवित्रता वमन मूत्रघात कंप कंठ मुख ओठ इनका सूखनाबेहोशी मनडामाडोल शरीरमें दाह मन्द २ बोलना त्वचा का सुकडना भूख का नाश चेष्टा रहित येभी विसूचिकाके लक्षण होतेहैं ४ इतिश्रीहंसराजार्थ बोधिनीटीकामेंविसूचिकारोगतथाविलंबिकारोगसमाप्तहुआ ॥

(अथकृमिनिदानम्)जायन्तेकृमयोनरस्यजठरेबाह्येचयूकादयो बाह्याभ्यन्तरभेदतोबहुविधाःसूक्ष्मातिसूक्ष्मास्तथा॥दीर्घादीर्घत राभवन्तिमिलिताभिन्नाःपराजन्तवो नानावर्णसमन्विताबहुपदः पादैर्विहीनाःपराः १ मूर्च्छार्तिकंडुपिटिकाश्चकोटरान्कुर्वन्त्यती

सारमनाहसंभ्रमम् ॥ दाहंविवर्णवमथुंविगन्धितां काश्यैशरीरे क्रमयोमुहुर्मुहुः २ उदरगतक्रमीनांचिह्नमेतन्नराणांभवतिहृदय दाहःसंभ्रमोंगेविकारः ॥ अरतिरुधिरकासंछर्यतीसारशूलं सकलविकलकायःष्ठीवनंनिर्वलत्वम् ३ ॥

क्रमिरोग दो तरहका है एक बाहिरी दूसरा भीतरीपेट में गिडोहेआदि हों सो भीतरी और बाहर जुयें लीख आदि होतेहैं ऐसे बाहर और भीतरके भेदसे तथा छोटेसे छोटे और बडेसे बडे के भेद करके बहुतभेद हैं नाना वर्णके बहुत पाद तथा पादरहित होतेहैं १ मूर्च्छा,आर्त्ति, खुजली, पिटिका इनका खजाना अतीसार, आनाह, भौंर,दाह, शरीरका वर्ण औ-रही तरहका, वमन, दुर्गंध, शरीरकृश, क्रमि ये लक्षण क्रमिरोगमें होतेहैं २ उदरमें क्रमि पडगये हों उसके ये चिह्नहैं हृदयमें दाह भौंर शरीरमें विकार मन न लगे दस्तमें रुधिरका गिरना खांसी वमन दस्त शूल सब शरीरमें बेकली बार बार में थूकना निर्बलता ३ ॥

(क्रमिरोगोत्पत्तिम्) भुक्तस्योपरिभोजनेनमधुराम्लाभ्यां मृदाभक्षणाद्दध्नामापपयोभिरामिषयुतैःश्लेष्मोद्भवाजन्तवः ॥ सन्तापक्षतशोफशाकमधुभिर्गद्येनरक्तोद्भवा अन्यैर्वाक्रमयोभवन्तिजठरेनृणांसदादुःखदाः ४ (क्रमिरोगेपथ्यम्) क्रमिवान् संत्यजेन्मिष्टंपिष्टंशाकंपयोगुडम् ॥ अव्यायामंमृदश्चाम्लंमाषंमांसंद्रवंदधि ५ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृते वैद्यशास्त्रेक्रमिलक्षणंसंपूर्णम् ॥

भोजनके ऊपर भोजन करनेसे मीठा खट्टा मट्टी दही दूध उर्द मांस इन से कफकी क्रमि पैदा होतीहै सन्ताप घाव सूजन सागके खाने से सहत म-द्य इनसे रुधिरके क्रमि पैदा होतेहैं और प्रकार से भी क्रमी मनुष्यके पेट में दुःखके देनेवाले होतेहैं ४ क्रमिरोगवाला मीठा पिसाअन्न शाक दही दूध गुड दंड कसरत का न करना माटीखाना खट्टीवस्तु उर्द मांस पतली वस्तु इनको त्यागदे ५ इति हंसराजार्थबोधिनीटीकामेंक्रमिरोग समाप्तहुआ ॥

(पाण्डुरोगनिदानम्) दोषाःसंकुपितास्त्रयोपिदधतेपाण्डुं

रेरुजं नृणांतीक्ष्णतमंद्रवञ्चलवणंरूक्षामिषंसेविनम् ॥ मृत्पूगीफलभोजिनांहिसततंरात्रौदिवाशायिनां स्त्रीष्वत्यंतविलासिनांप्रतिदिनंशाकाम्लसंभक्षिणाम् १ (वातकेपीलियाकेलक्षण) पाण्डुर्वातसमुद्भवोनयनयोरूक्षत्वचःस्फोटनं तोदानाहकृमीन्करोति कृशतांगुह्यस्थलेशोफताम् ॥ हृत्कंपंश्वसनंतनौमलिनतांपीतद्युतिंक्षीणतां मन्दाग्निंबलवीर्यकान्तिहरणंछर्दितृषांदारुणाम् २ (पित्तकेपीलियाकालक्षण) अक्ष्णोर्मूत्रपुरीषयोस्त्वचिनखेष्वन्तेषुपीतप्रभां श्वासंकाससमन्वितंकृशतनुंमूर्च्छामतीसारकम्॥ हृल्लासंहृदिसंभ्रमंविकलतांदाहंतृषासंयुतं पाण्डुःपित्तसमुद्भवः प्रकुरुतेशोषंमुखेशोफताम् ३ ॥

जो मनुष्य तीखी पतली ज्यादा नोन रूखामांस मट्टी और सुपारी इनको खावे तथा रातदिन सोवै बहुत मैथुनके करनेसे नित्य साग और खट्टा खानेसे तीनों दोष कुपितहो पीलियाके रोगको पैदा करते हैं १ वातसे पैदाहुये पीलियाके ये लक्षणहैं नेत्रों में रूखापन त्वचाका फटना सुईकी तरह चुभनेका दर्द आनाह तथा शरीर कृश भ्रम गुह्य इन्द्रियपरसूजन हृदयमें कंप श्वास शरीर मलिन तथा शरीर पीला मन्दाग्नि बलवीर्य कांति का नाश वमन प्यास मुखका सूखना २ नेत्र पेशाब दस्त शरीर की त्वचा नख इनका पीला होना श्वास खांसी शरीर कृश मूर्च्छादस्तों का होना सूखी उलटी हृदयमें भ्रम बेकली दाह प्यास मुखका सूखना तथा सूजन ये पित्तसे पैदाहुये पांडुरोगके लक्षणहैं ३ ॥

(कफकेपीलियाकालक्षण) शुक्लाननंशुक्लपुरीषमूत्रंतन्द्रालसंस्त्रीष्वरुचिंकृशत्वम् ॥ लालावमित्वंश्वयथुंगुरुत्वंपाण्ड्वामयश्श्लेष्मभवःकरोति ४ (सन्निपातकेपाण्डुरोगकालक्षण) त्रिदोषोद्भवेपाण्डुरोगेकृशत्वंभवेच्छ्वासकासंतृषांत्रेपथुत्वम् ॥ शिरोर्तिप्रसेकोरुचिःसंभ्रमत्वं बलौजोविनाशःक्लमश्छर्दिशूलम् ५ त्रिदोषान्वितःपाण्डुरोगीभिषग्भि रसाध्योनिरुक्तोहताक्षोविचेष्टः॥ज्वरःश्वासहृल्लासकासातिसारस्तृषासंभ्रमोंगेषुकंपःप्रलापी ६ ॥

सपेदमुख सपेद पेशाब और मल तन्द्रा आलकस स्त्रीसंगकी इच्छा का नाश कृशता लार का पडना वमन शरीरका भारीहोना ये लक्षण कफ से पैदा हुआ पांडुरोग करताहै ४ सन्निपातसे उत्पन्न हुआ जो पांडुरोग उस में ये लक्षण होतेहैं शरीर कृश श्वास खांसी प्यास कंप शिरपीडापसीनेका आना अरुचि भ्रम बल कांतिकानाश ग्लानि वमन शूल ५ त्रिदोष युक्त पांडुरोगी ऐसा वैद्योंने असाध्य कहाहै नेत्रसेरहित चेष्टाकरकेहीन ज्वर श्वास सूखी उलटी खांसी अतीसार प्यास और अंगोंमेंकंप वाहियात बकना ६॥

यःस्रोतांसिरुणद्धिसोमुनिवरैस्त्याज्योभृशंदूरतस्तेजोवीर्यबलौजसांप्रतिदिनंहानिङ्करोतिध्रुवम् ॥ पाण्डुत्वंत्वचिनेत्रयोःकररुहेह्यंत्रेषुविण्मूत्रयोर्धत्तेवह्निविनाशकोऽतिबलवान्पाण्डुर्मनुष्याद्नः ७ (पाण्डुरोगेपथ्यम्) पाण्डुरोगीत्यजेदम्लंदिवास्वापञ्चमैथुनम्॥शाकंमांसाशनंरूक्षंमृद्भक्षमतितीक्ष्णकम् ८ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेपाण्डुरोगलक्षणम् ॥

ऐसा पांडुरोगी वैद्यों करके त्याज्यहै जो कानों से बहिरा करदे तेज वीर्य बल कांति इनकी प्रतिदिन हानिकरै त्वचा नेत्र नख आंत मल मूत्र ये पीलेहों जठराग्नि से रहित ऐसा पांडुरोग बली मनुष्य का मारनेवाला जानना ७ पीलिया रोगवाला मनुष्य खटाईका खाना दिनमें सोना तथा स्त्रीसंग करना शाक मांस रूखी वस्तु मट्टीखाना अतितीखी मिरच आदि वस्तुका खाना त्यागकरै ८ ॥ इति हंसराजार्थबोधिनीटीकामेंपांडुरोगकानिदानसमाप्तहुआ ॥

(हलीमकाकामलाकुंभकामलापानकीरोगनिदानम्) हत्पद्मेमलमूत्रयोर्नयनयोर्धत्तेतिपीतद्युतिं दौर्बल्यंबलवीर्ययोरनुदिनंनाशंभ्रमंकामलाम्॥ अस्थिरस्फोटव्रतीकरोतिविकलंमांसाशनाद्रक्तपासंतापंकरयोर्मुखेवृषणयोःशोफंचपादद्वयोः १ (हलीमकरोगनिदानम्) करोतिकुम्भकामलानखेषुनेत्रयोर्मुखे पुरीषमूत्रयोर्भृशंसकृष्णतांतृषार्तिकृत् ॥ बलाग्निवीर्यतेजसांविनाशिनीप्रकंपिनी ज्वरांगदाहवर्द्धिनीविमोहशूलदायिनी २ षट्चक्रेषुनखेषुमूत्रयुगलेविण्मूत्रयोर्नीलतांसंधत्तेचहलीमकंकृशतनुःस्त्रीपुंसहर्षक्षयम्॥

संतापंकुरुतेरुजंवितनुतेपित्तानिलोत्थंगदं तन्द्राअंगविमर्दनंशिथिलतांश्वासंभ्रमंवेपथुम् ३ नखेष्वंगदेशेपुमूत्रेपुरीषेदृगोर्नेत्रयोः पांडुतातृट्प्रसेकः॥ बहिःशीतताभ्यन्तरेत्यंतदाहोवदेत्पानकीलक्षणैर्लक्षणज्ञः४इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेकामलाकुम्भकामलाहलीमकपानकीलक्षणम् ।

जो मनुष्य मांस खावै तथा रुधिर पियाकरै उसके कामलारोग प्रकटहो और ये लक्षणको करैहै छाती मल मूत्र नेत्र ये पीलेहों दुर्बलता बलवीर्यका नाश भ्रम हड्फूटन वेकली संताप हाथ मुख अंडकोश इनमें सूजन तथा पैरों में सूजनहो १ कुम्भकामला देहमें ये लक्षण करैहै नख नेत्र मुखपीला तथा दस्त पेशाब काला प्यास पीडा और बल अग्नि वीर्य्य तेजोनाशक कम्प ज्वर देहमें दाह मोह शूलकरैहै २छःचक्रोंमें नखोंमें नेत्रोंमें मलमूत्र में जो नीलापनाकरदे औ शरीर पतला स्त्रीसंगकी इच्छाको दूर करदे वेकली तंद्रा अंगोंका टूटना शिथिलता श्वास भ्रम पीडा इन लक्षणों को वात पित्तसे पैदाहुआ हलीमकरोग करताहै ३ नखोंमें शरीरमें मलमूत्र में नेत्रोंमें पिलाईहो प्यास पसीना बाहिरीजाड़ा भीतरीदाह इन लक्षणों से लक्षणका जाननेवाला पानकी रोग जानें ४ ॥ इति हंसराजार्थबोधिन्यांकामलाकुम्भकामलाहलीमकपानकीरोगनिदानम् ॥

अथ रक्तपित्तनिदानम् ॥

(रक्तपित्तकीउत्पत्तिलक्षण) व्यायामैरविगर्हितापसहनैस्तीक्ष्णोष्णकट्वामिषैरत्यंतंसुरतैर्दिवातिशयनैः स्निग्धान्नसंभोजनैः॥ एतैःसंकुपितंतुपित्तमधिकंनिर्गत्यबाह्यांतराच्छर्दिंलोहिततांचनेत्रयुगलेरक्तेतनौमण्डलम् १निःश्वासेलोहगंधिःप्रभवतिशिरसोरक्तधाराचकोष्णा सन्तापःकोष्ठपीडानयनविकलतारोचकःष्ठीवनत्वं॥तृष्णामूर्च्छाप्रसेकोमनसिशिथिलतासंभ्रमोदेहदाहःकासःश्वासोल्पचेष्टाकृशतरहुतभुग्रक्तपित्तस्यकोपात् २ अधोर्ध्वभवेद्रक्तपित्तप्रवृत्तिःश्रुतिघ्राणवक्त्राक्षिभिश्चोर्ध्वदेशे ॥ गुदायोनिमेढ्रैरधोयातिरक्तंसमस्तैश्चरोमैःशरीरस्यबाह्यैः ३ ॥

दंड कसरतके करनेसे घाममें डोलनेसे अग्निके तापनेसे तीखीगरमी कडुई मांस इनके खानेसे अति स्त्रीसंगसे दिनमें सोनेसे स्निग्ध अन्नके भोजनसे कुपित हुआ जो पित्त सो रुधिरको बिगाडकर रुधिरकी उलटी करावे तथा नेत्रों से रुधिर गिरै और शरीरमें खून बिगडने से चकत्ते हो-जायँ १ रक्त पित्तके कोपसे ये लक्षण हों श्वास लेनेमें लोहकीसी गंधहो शिरसे रुधिरकी गरमधार पडै प्यास व्याकुलहो उदरमेंपीडा नेत्रोंमेंवेक-ली अरुचिरुधिरका थूकना मूर्च्छा तथा पसीनेका आना मनमें शिथिलता भ्रम देहमेंदाह खांसी श्वासहीन चेष्टा अग्निमंद २ रक्त पित्तकी प्रवृत्ति ऊपर तथा नीचेके रास्तासे निकसै सो लिखते हैं जो कानों से नाकसे मुखसे नेत्रसे रुधिर गिरै उसे ऊर्ध्व प्रवृत्ति जाने और गुदाके द्वारा तथा योनिद्वारा लिंगसे रुधिर गिरै उसे अधःप्रवृत्ति जाने और सबरोमों सेशरीर के बाहर निकसताहै ३ ॥

रूक्षारुणंश्यामतरंचरक्तंवातात्मकंतंप्रवदन्तिवैद्याः ॥ पित्तो त्थितंरक्ततमंकषायंस्निग्धञ्चसांद्रङ्कफजंसफेनम् ४ऊर्ध्वगंकफजं रक्तमधोगंमारुतोद्भवम् ॥ रोमकूपैर्बहिर्यातंतंविद्यात्पित्तसंभव म्५अधोर्ध्वगंवातकफप्रकोपाद्विदोषजंतंजपदानसाध्यम्॥अधो र्ध्वरोमैर्जनितंत्रिदोषकोपादसाध्यंमुनिभिःप्रदिष्टम् ६ ॥

रूखा लाल काला जो रुधिर निकलै उसे वातका रक्तपित्त वैद्य कहतेहैं और लाल कसैला पित्तका तथा चिकना गाढा झागयुक्त कफका कहतेहैं ४ जो ऊपरी मार्गसे रुधिरगिरै उसे कफका जानो और नीचे मार्गों से गिरै उसे वातका जानो और जो रोमों से गिरै उसे पित्तका जानो ५ वात कफ के कोपसे ऊपर तथा नीचे मार्गोंसे रुधिर गिरताहै उसे द्विदोषका जानो वह जपदानके करनेसे अच्छाहो और नीचे तथा ऊपरका तथा रोममार्गोंसे जो रुधिरगिरै उसे सन्निपातका जानै यह मुनियों ने असाध्य कहाहै ६ ॥

रक्तपित्तंसुखंसाध्यंनिरुपद्रवमेवतत् ॥ सोपद्रवंतुदुःसाध्यंजप होमौषधादिभिः ७ उद्गारेलोहितंयस्यक्षयेनिष्ठीवनेतथा ॥ मत्रे न्मूत्रेपुरीषेवारक्तपित्तीम्रियेन्नरः ८ (रक्तपित्तरोगेपथ्यम्) व्याया मंघर्मसंतापंतीक्ष्णोष्णकटुकानिच॥ दिवास्वापमतिस्निग्धंरक्त

पित्तीनरस्त्यजेत् ६ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेरक्तपित्तलक्षणम् ॥

जो उपद्रवरहित रक्त पित्तहो वो सुख साध्यहै और जो उपद्रवके साथ हो वो असाध्यहै सो जपके करानेसे होम और औषधि करनेसे भी नहीं अच्छाहो ७ जिस मनुष्यके डकार लेनेमें लोहे की वासमारे तथा छीकनेमें थूकनेमें मूत्रमें मलमें रुधिर गिरे वो रक्तपित्ती मनुष्य मरे ८ दंड कसरतका करना धूपमें डोलना खेद तीखी गरम कटु वस्तुका भोजन दिनमेंसोना अत्यंत चिकनी वस्तु रक्तपित्तवाला त्याग करदेवै ६ इति हंसराजार्थबोधिनी टीकामेंरक्तपित्तरोगकानिदानसमाप्तहुआ ॥

(यक्ष्मणोत्पत्तिः)योभारंवहतेनरोगुरुतरंसंपीड्यतेयक्ष्मणाशस्त्रास्त्रैःपरिघातितोदृढधनुःप्राकर्षतःपीडितः ॥ उच्चैर्वापतितोमहाद्रुमतरुभिःसंदीपितोमर्दितो दंडैर्मुष्टिक्रमादिभिःपरिहतःसंधर्षितःशापितः १ (अथ निदानम्) देहस्थोराजयक्ष्माहृदिकफानिचयंवर्द्धतेशोषतेंगं नाडीमार्गरुणद्धिज्वरयतिमनुजंक्षीयतेधातुसंघान् ॥वीर्यौजःकांतितेजोऽनलबलपिशितंहंतिपांडुंविधत्ते ऊर्ध्वंश्वासंतनोतिप्रसरतिहृदयेक्षीणशब्दंकरोति २यक्ष्मारुक्कुरुतेरुचिंकृशतनुंसूक्ष्मंज्वरंगौरवं देहंजर्जरितंक्षतंचगलकेकासाधिकंशोषणम् ॥ संतापंहृदिवेपथुंमरुधिरंनिष्ठीवनंपूयमं मोहच्छर्यरतिभ्रमंशिथिलतांशूलंक्वचिद्दारुणम् ३ ॥

जो मनुष्य भारी बोझको उठावै यक्ष्मारोगसे पीड़ितहो तथा शस्त्र अस्त्रसे घायलहो दृढ धनुष के खींचनेसे कोई कारणकरपीड़ित होनेसे उच्चपर्वत वा वृक्षके गिरनेसे जलनेसे और मीडनेसे तथा दंड कोड़ा घूंसे आदिके पिटने से डरपने से महात्माओंके शापसेक्षयीरोग पैदा होताहै १ देहमें क्षयीरोग स्थित ये लक्षणों को करैहै हृदयमें कफको बढ़ावै शरीरको सुखदेवै नाड़ीके मार्गोंको रोकदे ज्वरवान् करदे धातुके समूहको सुखायदे वीर्य बल तेज ताकत कांति जठराग्नि के बलको तथा मांसको क्षीण करदे पीलियाको करै ऊर्ध्व श्वासकोकरै तथा क्षीण शब्दको करैहै २ अरुचि तथा कृशदेह मंदज्वर शरीरभारी जर्जरशरीर गलेमें घाव खांसी शोष खेद हृदयमें कंप रुधिर रादमिलाथूकना बेहोशी रद्दकरना मनका डामाडोल होना भ्रम शिथिलता कभी

महाशूल होजाय अथवा शूल जोर से चलना ये लक्षण क्षयीरोग करैहैं ३ ॥

विवर्णशरीरंशकृद्रक्तमूत्रंकरोत्यंगपीडांमहाराजयक्ष्मा॥तनौ शून्यतांबुद्धिनाशंप्रलापं गलेघर्घरत्वंयुवत्याप्रहर्षं ४ (वातकीक्षयीकालक्षण)मन्दाग्निर्बलवीर्ययोरनुदिनंहानिःकृशत्वंवपुःकासःशुष्कतरोरुतंकृशतरंश्वासोरुचिःशोषता॥रूक्षोमंदतमोज्वरःक्लमथुतानिष्ठीवनंपूयनं छर्दिर्वायदिवेपथुर्भवतितद्वातक्षयेलक्षणम् ५ (पित्तकीक्षयीकेलक्षण) पीडाकुक्षिशिरोगलेषुहृदयेरक्तंचनिष्ठीवनं शीतेम्लेधिकतारुचिर्ज्वलनताकंठेविगन्धिर्मुखे॥कासःश्वाससमन्वितःकृशतनुर्भिन्नस्वरोल्पज्वरस्तत्पित्तक्षयलक्षणंनिगदितंवैद्यैःसुखेणादिभिः ६ ॥

शरीरका वर्ण औरही प्रकारको होजाय वार वार लाल पेशाब उतरै शरीरमें पीडाहो सुन्न शरीर पडजाय तथा बुद्धिका नाश बरांना गलेमें घरघरशब्दहो स्त्री के साथ रमणकी इच्छाहो ये लक्षण महाराजयक्ष्मा करता है ४ वातकी क्षयीके ये लक्षणहैं मंदाग्नि बल वीर्य्यकी हानि शरीर कृश श्वास मंद शब्द और खांसी अरुचि शोप शरीर रूखा मंदज्वर ग्लानि राध का थूकना तथा उलटी करना हृदयमें कंप ५ कांख मस्तक गला हृदय इनमें दर्दहो रुधिर मिला थूकना शीतकी तथा खटाईकी इच्छाहो अरुचि तथा कंठमें जलन मुखमें बास आवे खांसी श्वासहो कृशदेहहो बुरीआवाज़हो मंदज्वर ये लक्षण सुषेणादि वैद्योंने पित्तकी क्षयीके लक्षणकहेहैं ६॥

(कफकीक्षयीकेलक्षण) शोफःकासरुजाग्निमंदजडताश्वासोरुचिर्वेपथुः शैथिल्यंस्वरभंगतांगकृशतावक्त्रेविगन्धान्वितम्॥ तंद्राकुक्षिरुजःकफंबहुतरंनिष्ठीवनंपूयनं स्यात्श्लेष्मक्षयलक्षणंचहृदयेकंठंदृढंश्लेष्मणः ७ (असाध्यक्षयीकेलक्षण) सहस्रादिनपर्यंतंनजीवेदितिमानवः॥ग्रहेणयक्ष्मणाग्रस्तोऽसाध्येनातिबली यसा ८ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेवैद्यशास्त्रेहंसराजकृतेयक्ष्मणोलक्षणंसमाप्तम् ॥

सूजन खांसी अग्निमंदजडता श्वास अरुचि कंप शिथिलता गले का बैठ जाना शरीर पतला मुखमें बासका आना तंद्रा कांखमें दर्द कफ का

तथा पीवका थूकना कंठका कफमें रुकना ये कफकी क्षयीके लक्षणहैं ७ जिस मनुष्यको क्षयी रूप असाध्यग्रह बलवान्ने ग्रसलिया हो वो मनुष्य हजार दिनतक बड़ी कठिनता से जीसके ८ ॥ इतिहंसराजार्थबोधिन्यां राजयक्ष्मारोगनिदानंसमाप्तम् ॥

(अथकासरोगलक्षणम) वक्त्राक्षिनासासुरजोभिपाताद्धूमोपरुद्धात्गुरुभारवाहात् ॥ रूक्षादनादंडकशादिघातात् कासोतिघोषादुपजायतेवै १ (खांसीकलक्षण) प्राणःकंठगतोत्युदानपवनोहृत्स्थोतिपीडाकरःशब्दःकांस्यविभिन्नघोषसदृशोनिष्ठीवनंपूयभम॥ कंठेघुरघुरशब्दताकृशतनुस्त्वक्पीतवर्णारुचिर्विद्वद्भिःपरिकीर्त्तितंहिसकलंकासस्यचिह्नंमहत् २ (वातकीखांसीकेलक्षण) उरसिशिरसिकुक्षौवेदनाकंठदेशे भवतिबलविनाशःष्ठीवनंतुच्छतुच्छम॥गलमुखपरिशोषःशुष्ककासोंगमर्दः क्षवथुररतिरुग्रावातकासस्यचिह्नम् ३ ॥

मुखमें नेत्रमें नाकमें धूलिके पड़ने से तथा धुआंके जानेसे भारीबोझके उठाने से रूखा खानेसे दंड कोड़ा आदि के पिटनेसे अत्यन्त पुकारने से खांसी पैदाहोतीहै १ हृदयकी रहनेवाली जो प्राणवायु सो कंठमें प्राप्तहो और कंठकी रहनेवाली जो उदानवायु सो हृदयमें आतीहै तब इसरोगी को बहुत दुःख देतीहै और इसमनुष्यका शब्द जैसा कांसेका फूटा बरतन बोलताहै इस तरहकी आवाजहो और कफमिला थूकै कंठमें घुरघुर शब्द हो शरीर लटजावे त्वचा पीली होजाय अरुचि ये लक्षण पंडितों ने खांसीके कहेहैं २ हृदय में मस्तकमें कांखमें कंठमें दर्द हो बल का नाश थोड़ा थोड़ा थूकना गले का तथा मुख का सूखना सूखी खांसीका उठना शरीर का टूटना छींक का आना मनका न लगना ये वादी की खांसीके लक्षण हैं ३ ॥

(पित्तकीखांसीकेलक्षण) भवेद्धीर्यहानिर्ज्वरोवक्रशोपः सरक्तंचनिष्ठीवनंशूलमुग्रम॥ तृषासंभ्रमंतिक्तमास्यंविदाहोनिरुक्तंपरैःपित्तकासस्यचिह्नम् ४ (कफकीखांसीकेलक्षण) निष्ठीवनंसांद्रकफेनयुक्तं कासेनछर्दिर्बलवीर्यनाशः॥शीर्षेप्रपीडाजडतांगगौरवं

प्रोक्तंभिषग्भिः कफकासचिह्नम् ५ (त्रिदोषकीखांसीकेलक्षण) भवेद्यस्यनिष्ठीवनंपूयवर्णंमुखान्नासिकाद्याविगंधिर्विवर्णम् ॥ महाश्वासवाहोंगतेजोल्पवीर्यःसकासीनजीवेत्कदाचित्सुधाभिः ६ ॥

वीर्य्यका नाश ज्वर मुखका सूखना रुधिरमिला थूकना उपशूल प्यास और कडुवा मुख दाह ये लक्षण पित्तकी खांसीके पूर्वाचार्य्योंने कहे हैं ४ गाढा कफका थूकना रहहो बल वीर्य्यका नाश शिरमें दर्द जडता देहका भारीहोना ये लक्षण वैद्यों ने कफकी खांसीके कहेहैं ५ राद के वर्णकेसमान थूकना मुख नाक में वासआवै तथा विवर्ण महाश्वास का चलना देह तेज वीर्य्य इन का घटना ऐसा खासी वाला अमृत सेभी नहीं जीवै ६ ॥

(असाध्यखांसीकेलक्षण) मुखेयस्यशोथोरुचिर्वेपथुर्यःसरक्तश्चनिष्ठीवनंफेनिलंवा ॥ तृषाशूलमुग्रंभवेदुष्टगंधिसकासीनजीवेत्सहस्रैर्भिषग्भिः ७ वृद्धक्षीणतमः कासी साध्योदानजपादिभिः ॥ तरुणोबलवान्साध्यः पथ्यैरौषधिभिर्बुधैः ८ ॥ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेकासलक्षणम् ॥

मुखपर जिसके सूजनहो अरुचि कंप रुधिर मिला तथा झाग मिला थूकना प्यास शूल दुर्गंधि का मुखमें आना ऐसे लक्षणवाला रोगी हजार वैद्योंसे भी नहीं जीवै ७ बूढा तथा जो क्षीण पडगयाहो वो रोगी दानजपादिकों से साध्यहै और जो रोगी तरुणहो तथा बलवान्हो वो पथ्य और औषधियोंसे पंडितों ने खासीवाला साध्य कहाहै ८ ॥ इति हंसराजार्थबोधिन्यांकासरोगलक्षणंसमाप्तम् ॥

अथ हिक्कालक्षणम् ॥

(हिक्कारोगकीउत्पत्ति) रजोधूम्रपानान्मुखेनासिकायां गरिष्ठान्नपानाज्जलस्यावगाहात् ॥ अनाद्ध्ववेगात्तृषार्तैररुच्या भवेयुर्नृणांपंचधारौद्रहिक्का १ प्राणोदानसमानकोपजनिताहिक्कान्त्रवृद्धिप्रदा कष्टंहंतिकरोतिजन्मसमयेबालस्यवृद्धिमुखम् ॥ तेजोजोबलवीर्यवृद्धिमधिकांहर्षंरुचिवर्द्धते रक्तास्यंतनुकंपनंनयनयोर्विस्फारमाद्रंगलम् २ तारुण्येवयसिस्थितेकफमरुज्जातानहिक्का

हिता वैरस्यंवदनेगलेसरसतांकुक्षौप्रपीडांरुतम् ॥ आटोपंहृदये रुणद्धिपवनेमर्माणिसंतोदते छर्दैं सा कुरुतेरतिंवितनुते हल्लासमुल्लासते ३ ॥

धूलि धुआं इनका मुख और नाकमें जानेसे गरिष्ट अन्न के भोजन मे जलमें बहुतदेरके रहनेसे श्रमसे रस्तेके चलने से चौदह वेगों के रोकने से प्याससे अरुचिसे मनुष्यों के पांच प्रकारकी घोर हिचकीका रोग पैदा होता है १ प्राण उदान समान पवनों के कोप करनेसे हिचकी आंतों को बढ़ावे कष्टकरै तथा रोगीको मारती है औ बालकके जन्मसमय बालक को बढ़ावै तथा सुखदे और तेज बल वीर्य्य की बढ़वारको करै तथा हर्ष रुचिको बढ़ावे मुखको लालकरदे शरीरको कॅपावे नेत्रों को फटे से करदे कंठको गीलाकरदे २ तरुण अवस्थामें जो वातकफ से पैदा हुई हिचकी सो अहितहै मुखको विरस करदे गलेमें सरसता करदे कांखमें पीड़ाकरे छातीको घेरले श्वासको रोकदे मर्ममर्ममें पीड़ाकरै वमन तथा मनका न लगना खांसी सूखी रद्द ये लक्षण करै ३ ॥

वार्द्धक्येवयसिस्थितेसतिमहाहिक्कायदाजायते पित्तश्लेष्ममरुद्भवाप्रकुरुतेपीडांगलेमस्तके ॥ शूलाध्मानतृषारुचिंवितनुते हल्लासहृत्पीडनम् पंचत्वंवितनोतिरोगमखिलंप्राणान्निहंतिद्रुतम् ४ उदानवायुकोपेनपंचहिक्काभवंतिताः ॥ कुर्वंतिविविधान्रोगान् तासांनामानिकथ्यते ५ गम्भीरामहतीतथाचयमलाक्षुद्रान्नजा पंचवागम्भीरोदरगर्जनीज्वरकरीमर्माणिसंतोदतामन्त्रोपद्रवकारिणीबलहरीनाभेःप्रवृत्ताहिसा अन्यायामहतीकरोतिचतनौकंपं शिरःपीडनम् ६ ॥

वृद्ध अवस्था में जो हिचकी हो वो वात पित्त कफ तीनों दोषों से पैदा होतीहै वो घोर हिचकी कंठमें तथा शिरमें दर्दको करैहै शूल अफरा प्यास अरुचि खाली रद्द हृदयमें दर्द और सबरोग ये लक्षणहों तो मनुष्य जल्दी मरजावे ४ उदान पवनके कोपसे पांच तरहकी हिचकी पैदाहोतीहै और अनेक तरहके रोगों को पैदा करतीहै उन पांचों के नाम कहते हैं ५ १ गंभीरा २ महती ३ यमला ४ क्षुद्रा ५ अन्नजा प्रथम गंभीरा के लक्षण कहते हैं गंभीरा पेटमें गुड़गुड़ाहटकरे ज्वरको करै मर्ममर्म में पीड़ाकरै

और सब उपद्रवों को करै बलका नाशकरै यह हिचकी नाभी से उठती है अब दूसरी महती का लक्षण कहते हैं शरीर कांपे शिरमें दर्दहो ६॥

वातश्लेष्मभवांकरोतियमलाहिक्कांत्रपीडारुजंग्रीवातालुविभेदिनीवलहरांग्रीवाशिरःकंपनम् ॥ क्षुद्रानाभितलोद्भवारसचयंचोर्ध्वंनयेत्कष्टदा वैरस्यंवदनेन्नजावितनुतेगात्रेगुरुत्वंतथा ७॥ इति भिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेहिक्कालक्षणंसमाप्तम्

तीसरी वात कफसे पैदाहुई जो यमलानाम हिचकी सो आंतोंको पीड़ा दे कंठतालु में दर्दकरै बलका नाशकरै नाडशिर इनको कँपावै चौथी क्षुद्रानासंकूर प्रसिद्ध जो हिचकी सो नाभीके नीचे उठतीहै वो रसको ऊपर लेजातीहै अर्थात् उलटी करावै और कष्टको पैदाकरै मुखको विरस करती है पांचवीं जो अन्नसे पैदाहुई हिचकी सो शरीर को भारी करती है ७॥ इति हंसराजबोधिनीमेंहिक्कालक्षणसमाप्तहुआ॥

(श्वासरोगनिदानम्) प्राणोदानसमानकोपजनितःश्वासोरुषावर्द्धनेकुर्द्धोर्ध्वंव्रजतेमुहुर्मुहुरथोदोधूयमानंनरम्॥निद्रांहंतिमहातृषांवितनुतेशीतज्वरंकंपनं प्रस्वेदंकुरुतेतनौविकलतांदाहंभ्रमंबिभ्रते १ शुष्कास्यंकुरुतेरुणद्धिपरतःस्रोतांसिरक्ताननं हृत्कंठोष्ठमुखेषुशोषमरतिंश्वासोरुचिंनाशते॥ आध्मानंतनुतेशिरांविधमतेनृणांतनुंकंपते शूलंवेदनयायुतंविकलतांशब्दंपरंरुंधते २ श्वासःस्वाभाविकोमंदाह्यतिश्वासोरुजाकरः॥ मृतिप्रदोमहाश्वासस्त्रिविधंश्वासलक्षणम् ३॥

प्राण उदान समान इनतीनों पवनों के कोप करनेसे क्रोधकर चढ़ती और ऊपर नीचे विचरती है कभी ऊपर चढ़े कभी नीचे उतरै नींदका नाश तथा घोर प्यासको पैदाकरै शीतज्वर कंप पसीना इनको पैदाकरै शरीर में बेकली दाह भौंर ये लक्षण श्वासरोग करताहै १ श्वास मुखको सुखावै नाडियों के मार्गको रोकदे चेहरेको लाल करताहै हृदय कंठ ओठ मुख इनमें शोषहो मनका न लगना अरुचि अफरा नाड़ीनको धमावै शरीर कँपावै वेदनायुक्त शूल तथा बेकली और आवाजको निहायत कम करतीहै २ और जो श्वास सो स्वभावसेही मंदहोतीहै परंतु अतिश्वासरोग करतीहै और महाश्वास मौतकी देनेवाली है ये तीनप्रकारके लक्षणहैं ३॥

छर्दिर्भवेदध्वपरिश्रमैःपरैः २ (वातकीछर्दिकेलक्षण) छर्दिर्वातभवाकरोतिविविधान्रोगानलंभोजनी कृष्णाभाहरितारुचिःशिथिलतांहृत्पार्श्वपीडांभ्रमम्॥ उद्गारंस्वरभेदनंचमहतींजृम्भांगलेपीडनंशूलंरूक्षवपुस्तृषांचशमनंवह्नेस्तनोशोषणम् ३ ॥

वातपित्त कफसे तथा सन्निपातसे तथाबुरीवस्तुके देखनेसेउलटीकारोग पांचप्रकारकाहोताहै १ चिकनीसूगलीनोनकीपतली तथालताआदिकेखाने बहुतभोजनसे क्रोधसे बहुत जलके पीनेसे डरके लगनेसे सूगली वस्तुके देखनेसे बहुत रास्ताके चलनेसे अपर कहिये कृमिके पड़नेसे स्त्रीके गर्भ रहनेसे छर्दिनाम रदकारोग पैदा होताहै २ जो मनुष्य बहुत भोजनकरे उसके वातकी छर्दि अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न करती है तथा कालेरंगकी तथाहरेरंगकीहो और शिथिलताकोकरै हृदयमें पसवाड़ोंमें पीड़ाकरै भ्रम कोकरै डकारबुरीकाआना स्वरभंग घोरजंभाईकंठमेंपीड़ा शूलशरीरमेंरूखा पन प्यासका अवरोध शरीरमें आगसी जलै और शोषको करै ३ ॥

(पित्तकीछर्दिकेलक्षण) छर्दिःपित्तसमुद्भवारुणनिभापीतानिभासाक्वचित् कोष्णादाहयुतांगपीडनपरा तृट्शूलमूर्च्छान्विता॥ हृत्कंठोष्ठमुखेषुतालुरसनाशीर्षेषुपीडाप्रदा संतापभ्रमकारिणीरुचिहरीश्लेष्मांशकासाभवेत् ४ (कफकीछर्दिकेलक्षण) छर्दिःश्लेष्मसमुद्भवासितनिभाफेनान्वितामेदुरा क्षारास्यंकुरुतेरुचिंवितनुतेतंद्रांप्रसेकंवमिम्॥ आलस्यंजडतांवपुर्गुरुतरंलालांचनिष्ठीवनं रोमांचंहृदिवेपथुंमुखमलंकासंतनौशीतताम् ५ (सन्निपातकीछर्दिकेलक्षण) छर्दिःपित्तमरुत्कफैःप्रजनितानानानिभाकष्टदा श्वासंकासयुतंतनोतिकृशतांदाहंतृषाकंपनम्॥ हृल्लासंतमकं वपुर्विकलतांमूर्च्छामतीसारकं शूलंमूत्रविरोधनंज्वरतमांहिक्कांत्रिवर्णवमिम् ६ ॥

पित्तकीछर्दिरोगके ये लक्षणहैं लालरंग तथा पीलारंगकी तथा गरमहो दाहयुत शरीरमें पीड़ा प्यास शूल मूर्च्छा हृदय कंठ ओठ मुख तालू जबान शिर इनमें पीड़ाहो खेद भ्रम रुचिको नाशकरै कफ को नाश करे ४ पित्तकी छर्दि रोगके ये लक्षणहैं सफेदरंगहो झागसेंआच्छादितहो चिकनी खारामुख अरुचि तन्द्रा पसीनेका आना रद सुस्ती जड़पना देहभारी

लारका गिरना वारवार थूकना रोमांच हृदयमें कंप मुखमलीन खांसी शरीरको शीतलेगे ५ त्रिदोपसे पैदाहुई जो छर्दि उसको चित्रविचित्र रंग हो कष्टको पैदाकरे श्वास खांसी तथा शरीरमें कृशता दाह प्यास कंप खांसीउलटी तमक देहमें बेकली मूर्च्छा अतीसार शूल मूत्रका रुकना ज्वर अंधेरेकाआना हिचकी वर्ण औरही तरहका और वमन ये लक्षणहोंद ॥

(छर्दिरोगकेउपद्रव) कासोहिक्कातृषाश्वासो हृद्रोगस्तमको ज्वरःमूर्च्छावैचित्र्यमित्येतेज्ञेयाश्छर्देरुपद्रवाः ७ (छर्दिरोगका साध्यासाध्यलक्षण) छर्दिःसोपद्रवाऽसाध्यारक्तपूयवहातथा ॥ नोपद्रवाभवेत्साध्याज्ञात्वाभैषज्यमाचरेत् ८ ॥ इति श्रीभिषक्च क्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेछर्दिलक्षणंसंपूर्णम् ॥

खांसी हिचकी प्यास श्वास हृदयमें पीडा तमक ज्वर मूर्च्छा बेहोशी ये छर्दिरोगके उपद्रवहैं ७ उपद्रवसहित छर्दिरोग असाध्यहै, और जिसमें रुधिर और रादगिरती हो वोभी असाध्यहै और जिसमें उपद्रव नहीं वो साध्यहै ऐसे साध्य असाध्य परीक्षाकरपीछेदवादे ८॥ इति हंसराजार्थबोधिन्याछर्दिरोगनिदानंसमाप्तम् ॥

(अथ तृष्णालक्षणम्) कफोद्भवापित्तभवामरुद्भवात्रिदोष जाभुक्तभवाक्षतोद्भवा ॥ भयश्रमाभ्यांजनिताक्षयोद्भवाभवंतितृ ष्णाष्टविधाश्चदुःसहाः १ (तृष्णारोगकीउत्पत्ति) वाताशनाध्व श्रमतापरक्तैःस्रोतस्त्वपांवाहिषुशुष्कितेषु ॥ हृत्कंठतालूनिदहंति दोषास्तृषातदासंजनितानराणाम् २ (वातकीतृष्णारोगकाल क्षण)तृष्णावातसमुत्थिताचकुरुतेस्रोतोनिरोधंश्रमं शोषंशंखशि रोगलेपुविरसंवक्त्रंनिरुत्साहसम् । संकोचंपरितस्तनौप्रलपनंचि त्तभ्रमंरूक्षतांशीतोदैःपरिवर्द्धिताबितनुतेहिक्कामजीर्णज्वरम् ३ ॥

तृष्णा अर्थात् प्यासका रोग आठतरेहकाहै ऐसे वैद्य कहतेहैं १ कफसे २ पित्तसे ३ वादीसे ४ सन्निपातसे ५ भोजनके करनेसे ६ घावसे ७ भय और श्रमसे ८ क्षयीरोगके होनेसे १ वातसे भोजनके करनेसे मार्गके चलनेसे श्रमके करनेसे गरमीसे रुधिरके बिगडनेसे कुपितहुये जो वात पित्त कफ सो जलके बहनेवाली नाडीनको सुखाकर हृदय कंठ तालूमें

दाहको पैदाकरैं तव मनुष्योंके तृषारोग पैदा होताहै २ वातकी तृषा ये लक्षण पैदाकरती है बहिरापना परिश्रम कनपटी मस्तक गला इनमें शोष मुखमें विरसता तथा साहसहीन देहमें संकोच बकना चित्तमें भ्रम तथा देह रूखा शीतल जलके पीनेसे जो तृषा पैदाहो वो हिचकी और अजीर्ण ज्वर को बढावै ३ ॥

(पित्तकीतृषारोगकालक्षण) आधिव्याधिसमन्विताभयकरीपित्तात्मिकाशोषणी तृष्णादाहविवर्द्धिनीसुखहरीकार्यस्यविध्वंसनी ॥ उष्णत्वेविदधातिदोषमखिलंशीतेसुखंबिभ्रते रक्तास्यंकुरुतेमुखेविरसतांमूर्च्छांप्रलापंभ्रमम् ४ (कफकीतृष्णाकेलक्षण) मूत्रावरोधंजठराग्निनाशंनिद्रांविधत्तेगुरुतांशरीरे ॥ हृत्कंठपीडांवितनोतिकासंश्लेष्मात्मिकाछर्दिकरीचतृष्णा ५ (त्रिदोषजनिततृषाकेलक्षण) त्रिदोषजनितातृष्णातेजोवीर्यबलौजसाम् ॥ नाशिनीरुक्करीघोरामनोक्षप्राणहारिणी ६ ॥

आधि कहिये मानसिकरोग व्याधिकहिये ज्वरादिरोग तथा भय पैदाकरै शोष दाहको बढावै सुखको दूरकरै देहको विध्वंस करै गरमीसे सकल रोग पैदाकरै और शरदीके होनेसे सुख मालूमहो लाल और रसरहित मुखहो मूर्च्छा प्रलाप भ्रम येलक्षण पित्तकी तृष्णाके हैं ४ मूत्रका रुकना तथा मंदाग्नि नींदकाआना शरीरभारी हृदयमें कंठमें पीडा खांसी रद ये लक्षण कफकी प्यास रोगकेहैं ५ सन्निपातकीतृषा तेज वीर्य बल ताकत का नाश करनेवाली है घोररोग पैदाकरै मन प्राणकी हरनेवालीहै ६ ॥

(तृषारोगमेंसाध्यासाध्यविचार) अल्पदोषकरीतृष्णाश्रमघाताध्वभोजनैः ॥ जाताशीतोदपानेननाशमेतिगरीयसी ७ (अथ तृषारोगेपथ्यम्) गुर्वन्नभोजनंस्निग्धंतीक्ष्णोष्णंलवणामिषम् ॥ व्यायामंसूर्यसंतापंतृष्णावान्परितस्त्यजेत् ८ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेतृष्णालक्षणम् ॥

जो श्रमसे चोटसे रास्ताकेचलनेसे भोजनसे जो तृषाअर्थात् प्यासलगैवो साध्यहै और जो ठंढेपानीके पीनेसे प्यासलगैसो प्राणकीनाशकरनेवाली

जाननी चाहिये ७ भारीअन्नकाभोजन चिकनीवस्तु तीखीगरम नोनकी मांस डंड कसरतका करना सूर्य्यका तेज ये तृषारोगवाला त्यागदे ८ इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यांतृष्णारोगनिदानं सम्पूर्णम् ॥

(मूर्च्छारोगकीउत्पत्ति) क्षीणस्यगतसत्त्वस्यविरुद्धाहारसेविनः ॥ धाविनःसक्षतस्यापिबीभत्सस्यविलोकिनः १ तस्यनाडीपु सर्वासुदोपाःसर्वेप्रकोपिताः ॥ रुषाविशंतिकुर्वंतिमूर्च्छांवैचित्य कारिणीम् २ वातपित्तकफैर्मद्यैःशोणितेनविषेणच ॥ मूर्च्छाभवन्ती साकुर्यान्नरंकाष्ठमिवानिशम् ३ ॥

अथ मूर्च्छारोगनिदानम् ॥ जो मनुष्य क्षीणहो ताकत रहितहो विरुद्ध आहारका खानेवालाहो दौडनेवालाहो और जिसके शरीरमें घावहो घिनायदी वस्तुदेखीहो १ ऐसे पुरुषके कोपको प्राप्तहुये जो तीनों दोपसो सर्व नाड़ियों में क्रोधसे धसकर वेहोशी करनेवाला मूर्च्छारोग पैदाकरतेहैं २ सो मूर्च्छारोग वात पित्त कफ और सन्निपातसे और मद्यके पीनेसे रुधिरसे विपभक्षण करनेसे सातप्रकारका होताहै वो मूर्च्छामनुष्यको काष्ठकीतरह पृथ्वीपर वारवार गेरदेतीहै ३ ॥

(वातकीमूर्च्छाकालक्षण) दृष्ट्वाकाशंश्यामनीलावभासंपश्चाद्दुर्थ्यांवातजामेतिमूर्च्छाम् ॥ योमर्त्यस्तंपीडयंतीतिरोगाजृम्भाकंपश्वासतृष्णाप्रसेकाः ४ (पित्तकीमूर्च्छाकालक्षण) पीतारुणंनभःपश्यं स्तमःपश्यंस्ततंपरम् ॥ नरोयःपततेभूम्यां तांमूर्च्छांपित्त जांवदेत ५ जंतौप्रबुद्धेतमसिप्रणष्टे मूर्च्छांतुपित्तप्रभवाकरोति ॥ प्रस्वेदतृष्णापरिवेपथुत्वं दाहंचतापंमुखशोषमारतिम् ६ ॥

(कफकीमूर्च्छाकालक्षण) शुभ्रनभोनरःपश्यन्मूर्च्छयेोऽर्यंप तेद्यथा॥ निश्चेष्टोदंडवन्नूनं तांविद्यात्रकफात्मिकाम् ७ प्रबुद्धे मनुजेकुर्यान्मूर्च्छांनिद्रांकफात्मिका॥ शैथिल्यंगौरवंतंद्रांहल्लासंकासतृड्ज्वरम् ८ (संनिपातकीमूर्च्छाकेलक्षण) त्रिदोषजनितामूर्च्छा सर्वरोगवहानरम्॥पातयत्याशुमोहाब्धौविनाबीभत्सदर्शनम् ९॥

जो मनुष्य आकाशको धवलादेखे फिर गिरपडै चेष्टारहित लकडी कीसी तरह उस मूर्च्छाको कफकी कहतेहैं ७ जब मनुष्यसावधान होजाय तबनींद आवे तथा शिथिलता होय देहभारीहो तंद्राहो सूखी रद्दआवे खांसी हो तथा प्यासहो ये कफकी मूर्च्छाके लक्षणहैं ८ त्रिदोष अर्थात् संनिपात से पैदा हुई मूर्च्छा सर्वरोग प्रकट करै और मनुष्यकोमोहरूपी समुद्रमेंगेरदेवे विनासूगली वस्तुकेदेखे जोपैदाहो उसको सन्निपातकी मूर्च्छाकहतेहैं ९॥

(रुधिरकीमूर्च्छाकालक्षण) घ्राणेनरक्तस्यचदर्शनेनमूर्च्छेति कोस्त्रीजनभीरुबालाः॥ बुद्धेषुचिह्नानिभवंतितेषांमोहांगकंपोतिभयोजडत्वम् १० (मद्यकीमूर्च्छाकालक्षण) मद्येनमूर्च्छाजडतां करोतिनेत्रेरुणत्वंशिथिलंशरीरम् ॥ हर्षप्रलापंपरिबुद्धिनाशंनिद्रांवमित्वंभ्रमतांप्रसेकं ११ (विषकीमूर्च्छाकेलक्षण) नासाकर्णमुखेषुशोषमधिकं मूर्च्छाविषात्संभवाद्दाहंतीव्रतरंदधातिहृदयेकंठेतिपीडारती॥ दृष्टिनाशयतेकरोतिविकलंदेहस्यविक्षेपणं तेजोवीर्यबलौजसांप्रतिपलंविध्वंसिनीशोषणी १२॥

नाकसे रुधिरकेगिरनेसे स्त्रीजन तथा डरपोकना तथा बालक ये देखकर मूर्च्छाको प्राप्तहोतेहैं होश होनेपर ये लक्षण होते हैं मोह शरीरका कांपना डरका लगना तथा जडत्व १० बहुत व दुष्टमद्य के पीनेसे जो मूर्च्छा हुई उसके ये लक्षण हैं जडत्व और नेत्रलाल शरीर शिथिल हर्ष बकना बुद्धिका नाश निद्रा वमन भ्रम मुखसे लारका गिरना ये ११ विषके खानेसे व सूंघनेसे जो मूर्च्छाहो उसके ये लक्षणहैं नाक कान मुख इनका सूखना तीव्र दाह हृदयमें कंठमें दर्द मनका न लगना नेत्रोंसे कम देखना बेकली देहका पटकना तेज वीर्य बल ताकत इनकानित्यघटना और शोषहो १२॥

(क्लमकेलक्षण) व्यायामेनविनाकायेश्रमःस्याच्छ्वासवर्जितः॥ इंद्रियाणांहिवृत्तिघ्नःक्लमःसेवोच्यतेबुधैः १३ इति श्रीभिषक्चक्रचित्रोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेमूर्च्छालक्षणंसमाप्तम् ॥

जिस मनुष्यके डंड कसरत के विनाहीं श्वासरहित श्रमहो और इंद्रियों का जो स्वभाव तिसको पलटदे उसको पंडित क्लमरोग कहतेहैं १३॥ इति हंसराजार्थबोधिन्या मूर्च्छारोगनिदानं सम्पूर्णम् ॥

(दाहरोगनिदानम्) देहेशोणितमुच्छ्रितंप्रकुनेदाहंमहादारुणंचांगंयद्व्रजतेतदेवदहतेबाह्यत्वचंचांतरैः ॥ मांसंशोणितनाडिकास्थिनिचयान्श्लेष्मंवसंमज्जिकां सर्वांगेषुगतंदहत्यवयवंसर्वेरुषाहर्निशम् १ (धातुक्षीणदाहकालक्षण) क्षीणेधातावुत्थितोघोरदाहोमूर्च्छांकुर्यान्मर्मघातंज्वरार्त्तिम् ॥ तृष्णाशोषंक्षीणशब्दंकृशत्वंवैद्यैरुक्तोसौनरःकष्टसाध्यः २ मर्यादादधिकंरक्तंदेहसंस्थितमामयं ॥ लोहगंधंदहत्यंगंपित्तवातस्यभेषजम् ३ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेदाहलक्षणंसम्पूर्णम् ॥

जिस मनुष्यके देहमें रुधिर बढताहै उसके महादाहका रोग पैदाकरताहै जिस अंगमें रुधिर प्राप्तहो उस अंगको दाहन करै और भीतर दाहके होने से बाहरकी त्वचामे दाहहो और मास रुधिर नाडी हड्डी इनके समूहको तथा कफ और बसाको मज्जाको दहनकरे सर्वांगमें प्राप्तदाह सब अंगके अवयवों को क्रोध.करके निरंतर दहनकरै १ जिस मनुष्यकी धातु क्षीणहो उसकेघोर दाह रोग पैदाहो उसके ये लक्षणहैं मूर्च्छाहो मर्म मर्ममें पीडाहो ज्वरहो प्यास शोष मंदशब्द हो और कृशदेहहो वो रोगीवैद्योंने कष्टसाध्य कहाहै २ मर्य्यादासे अधिक रक्त देहमें बढताहै तब दाहरोग होताहै और जब रुधिर निकले तब लोहकीसी वासआवे सबदेहमे दाहहो उस में वातपित्तकी दवाई करना चाहिये ३ ॥ इति हंसराजार्थबोधिन्यांदाहरोग लक्षणंसमाप्तम् ॥

(मदात्ययरोगकालक्षण) दोषाविपर्ययेसर्वेसुधायाश्चापियेगुणाः॥तेमद्येपरितिष्ठंतियुक्तयायुक्त्यापिबेन्नरः १ अयुक्त्यायःपिबे

न्मद्यन्तरयरोगोभवेद्भृशम् ॥ तस्माद्युक्त्यापिबेन्मद्यंसौख्यायाममृतवन्मुहुः२ (अयुक्तिमद्यपानेदूपणं) सूर्याग्नितप्तेनबुभुक्षितेनरोगान्वितेनापिपिपासितेन॥श्रमान्वितेनाध्वपरिश्रमेणवेगावरोधेनभयान्वितेन ३ ॥

विपके सर्वदोष और अमृत के सर्वगुण मद्यमें रहतेहैं युक्तिसे औ.अयुक्ति से पीवे तो गुण और अवगुण करताहै १ उसीको दिखाते हैं जो मनुष्य वेतरकीबसे मद्य पीताहै उसके बराबर रोगपैदाहोता है इसीसे मद्यपान विधिपूर्वक करना चाहिये क्योंकि विधिपूर्वक पियाहुआमद्य अमृतकेगुणों को करताहै २ सूर्य्यके घामसे वा अग्निसे तपाहुआ भूखसे व्याकुल रोगी प्यासा श्रमसे थका रास्तेके चलनेसे चौदहवेगोंके रोकनेसे व्याकुल भययुक्त ३ ॥

क्षीणेनशोकाभिभवेनचैवकोपाभिभूतेनचानिर्बलेन ॥ अत्यम्लभक्ष्येणचसेवितंबहुकरोतिमद्यंविविधान्विकारान् ४ लज्जाबुद्धिविनाशनंविकलतांछर्दिंगुरुत्वंतनौ पांडुत्वंकृशतांमुखेविरसतांनिद्रांविमूर्च्छांतृषां॥ हल्लासंनमकंवमिंशिथिलतांगुह्यप्रकाशंतमःकार्य्याकार्यविमूढतांप्रकुरुतेमद्यश्चदोषाकरं ५ मद्ये संत्यमृतोपमागुणगणायुक्त्याप्रपीतेनिशक्षुद्बोध.स्मृतिपुष्टितुष्टिरुचयोनीरोगताकांतयः ॥ आनंदांकुरुकोटयोमधुरतास्त्रीषुप्रहर्षोत्सवावीर्यौजोबलधैर्यशौर्यमतयःसौजन्यसौख्यादयः ६ ॥

क्षीणमनुष्य शोकयुक्त कोपयुक्त निर्बलता अत्यंतखटाई खाईहो और बहुत मद्यपियाहो ऐसे मनुष्यों के मद्य अनेक विकार करता है ४ लज्जा बुद्धिको दूरकरता है बेकली रद्द देहभारी पीलिया शरीरकृश मुखमें सवाद नहो निद्रा मूर्च्छा प्यास सूखी उलटी तमक वमन शिथिलता छिपीवात को कहना अंधेराआना कार्य अकार्यको न जानना दोषोंकी खानि ऐसी अयुक्ति से पियाहुआ मद्य करता है ५ अथमद्यपानगुणम् ॥ युक्तिसे मद्यपानकिया अमृतके समानगुण करताहै क्षुधाको बढ़ावे स्मृति पुष्टता तुष्टता रुचिनीरोगता कांति आनंदके अनेकअंकुरपैदाकरै मधुरतास्त्रियोंमें रुचि उत्सव वीर्य ओजबल धीर्यता शूरतामति सुजनता सुखादिइत्यादिकोंकोपैदाकरताहै ६॥

मद्येनवुद्धिःप्रथमेनमोदःस्त्रीपुप्रहर्षोवहुभोजनेच्छा ॥ वादित्र गीतेपुरुचिःसुखंचनिद्रारतिःस्यान्मनसोत्सवंच ७ मद्येद्वितीयेपु रुषःप्रमत्तःस्यान्नष्टवुद्धिर्विगतात्मचेष्टः ॥ घूर्णाननोहर्षयुतोति निद्रोदुर्वाक्यशीलोवहुलीलयायुक् ८ तृतीयेमदेनष्टदृष्टिर्मनुष्यो वदेत्सर्वंगुह्यानिगच्छेदगम्याम् गुरुंनैवपश्येदभक्षेत्समंताद्विल ज्जःस्वतंत्रोभवेद्भग्नशीलः ९ ॥

प्रथम पियाहुआ मद्य वुद्धिको वढावै मोदको स्त्रीगमन में रुचि पैदा करै वहुत भोजनकी इच्छा वाजे और गीत सुनने में इच्छा सुखनींद मनका एकाग्रलगना मनमें उत्साह ये गुणकरता है ७ दूसरी दफे मद्य पियाहुआ आदमीको मस्तकरदेताहै वुद्धिनष्टकरदे चेष्टारहित करदे तिरछी दृष्टि हर्षयुक्त अतिनिद्रा खोटावोलै अनेक लीलाकरै ८ तीसरीदफे पिया मद्य मदसे नष्टदृष्टी करदे और सव छिपीवात को कहै और मा वहिन वेटी गुरूकी स्त्रीसे भी खोटाकाम करने की इच्छाहो गुरुकोभी न देखे अभक्ष्य भोजनकरै लज्जात्यागदे अपनी इच्छाकाकाम करै मारधाड़करै९॥

चतुर्थेमदेमृत्युतुल्योमनुष्योभवेज्ज्ञानहीनः स्वकार्येविका र्ये ॥ क्रियाचारशौचादिहीनोविमूढः परंस्वंनजानातिमत्तोविल ज्जः १० ॥ (पित्तकेमदात्ययकेलक्षण) पार्श्वशूलशिरःकंपश्वा सहिक्काप्रजागरैः ॥ मुखशोषेणपित्तस्यतमवेहिमदात्ययम् ११ ॥ (कफकेमदात्ययकेलक्षण) तंद्राहृल्लासस्तैमित्यच्छर्द्यरोचकगौ रवैः ॥ शीतलाङ्गस्यतंविद्यात्कफप्रायंमदात्ययम् १२ ॥

चौथीवार पियाहुआ मद्य मुरदेके समानकरदे ज्ञानरहित करदे अपने पराये कामको न समझे क्रिया आचार शौच इनकरके रहित करदे मूढ करदे अपना पराया न जाने और मस्त लज्जारहित होजावे १० पसवाड़ोंमें शूलहो शिरकांपे श्वासहिचकी जागना मुखकासूखना ये पित्तके मदात्ययके लक्षणहैं ११ तंद्रा सूखीरद गीलेकपड़े से पोंछासादेह वमन अरुचि देह भारी और शीतल अंगहो उसको कफका मदात्ययकहते हैं १२ ॥

अंगमर्दतृषाशूलरूक्ष्यगात्रविवर्णता॥ हिक्काभ्रमैश्चतंविद्यात्

वातप्रायंमदात्ययम् १३ (त्रिदोषकेमदात्ययकालक्षण) सोपद्र वैःसर्वलिंगैस्त्रिदोषोत्थैर्मदात्ययम्॥ त्रिदोषजनितोज्ञेयःसाध्योयं चभिषग्वरैः १४ चिह्नंचतत्परमदस्यवदंतिवैद्याश्छिक्कातृषांगगु रुताबहुपर्वभेदः ॥ विण्मूत्रशक्तिररुचिर्विरसास्यताचश्लेष्मो ज्वरस्तुकृशतारुजताकपाले १५ ॥

अंगोंका टूटना प्यास शूल रूखा शरीर तथा विवर्णदेहका हिचकी भ्रम ये लक्षण बातके मदात्ययकेहैं १३ जो उपद्रवके साथहो और तीनों दोषों के लक्षणमिलतेहों उसको सन्निपातका मदात्यय जानना १४ और भी सन्निपात मदात्ययके चिह्न कहतेहैं जिसमें छींक प्यास शरीरभारी संधि में पीड़ा विष्ठा मूत्रका निकलजाना अरुचि मुखसे सवाद जातारहै कफ और ज्वर तथा मस्तकमें पीड़ाहो १५ ॥

(मद्यपानोत्थअजीर्णकेलक्षण) अजीर्णमद्यपानोत्थंकुर्यादाह मचेतसम् ॥ तृष्णामाध्मानमुद्गारंसंधिभेदंशिरोरुजम् १६ (मद्य पानोत्थभ्रमकेलक्षण) भ्रमोमद्यपानोत्थितःकंठधूमं कफंदाहमुग्रं ज्वरंश्यामजिह्वम् ॥ प्रशोषंपिपासांवमिंपार्श्वशूलंगरिष्ठोदरंनील मोष्ठं प्रकुर्य्यात् १७ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृते वैद्यशास्त्रेमदात्ययपरमदअजीर्णविभ्रमाणांलक्षणानि ॥

मद्यपीनेसे हुआ अजीर्ण वो ये लक्षण करताहै होश न रहै ऐसादाहको करै प्यास और पेटकाफूलना तथा डकारका आना संधि संधिमें पीड़ा मस्तकमें दर्द १६ मद्यके पीनेसे हुआ जो भ्रम वो ये लक्षणकोकरै कंठसे धुंयेंका निकलना कफनिकलना दाहहो ज्वर जीभ काली पड़जाय मुख शोष प्यास वमन पसवाड़ोंमें दर्द या शूल उदरमें भारीपना ओठनीले १७॥ इति हंसराजार्थबोधिन्यांमदात्ययरोगस्समाप्तः ॥

(अथोन्मादलक्षणानि) विक्षिप्ततामनोवृत्तिर्दोषैर्वातादिभिर्भवे त्॥समस्तैर्वासमस्तैर्वासोन्मादःकथितोबुधैः १ वार्त्तायाविस्मृति र्येनगानेगीतस्यविस्मृतिः॥ शौचाशौचमजानातिसोन्मादः कथि तोबुधैः२(उन्मादरोगकेलक्षण) उन्मादहेतुर्द्विजदेवतानांसंन्या

सिनांसाधुपतिव्रतानाम्॥आधर्षणंकुत्सितमंत्रसाधनं दुष्टाशुची नामशनंचपानम् ३ ॥

उसको पण्डितोंने उन्माद रोग कहाहै जिसमें समस्त वा न्यून वातादि दोषोंकरके मनकी वृत्तिमें विक्षिप्तता अर्थात् बावलापना पायाजाय १ बात करनेकी विस्मृति और गानेमें गीतकी विस्मृति जिस करके हो और शौच भ्रष्टताको जो न जाने उसको पंडितोंने उन्मादरोग कहाहै २ ये उन्मादरोग होनेके कारणहैं ब्राह्मण देवता संन्यासी साधु पतिव्रता स्त्री इनको दुःख देनेसे और खोटेमंत्रके साधनसे अपवित्र और दुष्टपदार्थ के भोजनसे वा पीने से ३ ॥

(वातोन्मादकेलक्षण) वातोन्मादगृहीतःक्वचिदपिहसतेरोद तेक्वापिकालेरूक्षांगःशून्यचित्तःपरिवदतिवचोनिष्ठुरंह्यर्थहीनम्॥ शीघ्रोत्साहंविधत्तेस्मितचलनयनोगीतनृत्यंकरोति स्वांगानांक्षे पणंवाविकलकृशतनुःक्षीणधातुर्मनुष्यः ४(पित्तउन्मादकेलक्षण) पित्तोन्मादेनयुक्तः सततजलरुचिर्भोजनेदत्तदृष्टीरक्ताक्षस्तब्धने त्रोभ्रमविकलतनुःशुष्ककंठोष्ठतालुः ॥ शीतेच्छामर्मदाहःपरिवद तिवचोरौत्यमर्षंविधत्ते भक्ष्याभक्ष्यंपरेषांपरिहरतिहठाद्वाग्विवा दंकरोति ५ (कफउन्मादकेलक्षण) कफोन्मादेचिह्नंभवतिकृश ताछर्द्यरुचयःकफोद्रेकःकंठेमनसिजडतांगेविकलता ॥ गतोजो मूकत्वंश्रुतिबधिरता देहगुरुतावमिर्निद्रालालोरसिकृमिशतंवा क्लिथिलता ६ ॥

वातउन्मादयुक्त मनुष्य के ये लक्षण होतेहैं कभीहँसे कभी रोवै रूखा शरीर होजाय शून्यचित्त दुष्टवचन बोलै व्यर्थबोलै कभी उत्साह युक्तहो कभीस्मितयुक्त चंचलनेत्र कभी गीतगावै कभी नाचनेलगै कभी अंगोंको चलाने लगै विकलहो शरीरकृश क्षीणधातु ४ जलपीने और भोजनकी इच्छाहो लाल तिरछे नेत्रहों भ्रम और देह में बेकलीहो कंठ तालु ओठ इनका सूखना शीतल वस्तुकी इच्छा मर्म मर्म में दाह बुराबोलै रोवै क्रोधयुक्तहो पराया भोजन भक्ष्य अभक्ष्यको हठसे लूटले वादकरने लगै येलक्षणपित्तोन्मादयुक्त केहैं ५ देह कृश वमन अरुचि कफकावढ़ना कंठ में मनमें जड़ता देह विकल गति और ताक़त इनका बंद होना गूंगापना

बहिरापनो देहभारी रूक्षहोना निद्रा और लारका गिरना पेटमें कृमि पड़ जावें वाणी शिथिल ये कफके उन्माद के लक्षणहें ६ ॥

(संनिपातकेउन्मादकेलक्षण) उन्मादेनत्रिभिर्दोषैर्जातेनग्रसितोनरः ॥ सोपद्रवैरसाध्योयं कथितोभिषजांवरैः ७ (औरभी कारणलिखते हैं) चौरैर्नृपेन्द्रैररिभिस्तथान्यैःसंत्रासितःक्षीणधनोभिघातः ॥ शोकाभितप्तोमुनिभिःप्रशप्तःसंजायतेतस्यमनोविकारः ८ ॥ इति श्रीहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेउन्मादलक्षणम् ॥

त्रिदोष उन्मादकरके ग्रसागया जो मनुष्य और उपद्रवयुक्तहो वो रोगी असाध्यहे ऐसे श्रेष्ठ वैद्योंने कहाहै ७ चोरोंने राजाने वैरियोंने और किसी ने इस मनुष्यको त्रास दिखायाहो और जिसका धन नष्टहोगयाहो चोट लगीहो शोकयुक्तहो ऋषिमुनिकरके शाप दियागयाहो ऐसे मनुष्यके मन विकार अर्थात् उन्मादरोग होताहे ८ इति हंसराजार्थबोधिन्यामुन्माद रोगस्समाप्तिमगमत् ॥

(अथ भूतोन्मादलक्षण) ब्रह्मण्योगुरुदेवपूजनरतोदाताप्रव्यक्ताक्षरः संतुष्टोमितभुक्सुगंधिवनिताप्रीतिर्विनिद्रोऽनिशम् ॥ तेजस्वीवलवाञ्छुचिर्नयपरोभिज्ञोतिहर्षान्वितो देवोन्मादयुतो नरःसभवतिब्रह्मात्मकोब्रह्मवित् १ (दैत्यलगेहुये मनुष्य के लक्षण) देवब्राह्मणसाधुवैष्णवगवांस्त्रीणांचसंन्यासिनां विद्वेषीमर्यदोतिनिष्ठुरवचोतुष्टोन्नपानादिषु ॥ दुष्टात्मापरमर्मभिद्गतभयः क्रोधीचमानीनरः स्तब्धोगर्वसमन्वितोदनुजयुक्क्रूरोसहिष्णुर्बली २ (गंधर्वलगाहोउसकेलक्षण) संचारीविपिनेनदीपुलिनयोरम्यस्थलेपर्वते हृष्टात्मारुणकंजचारुनयनो वादित्रगीतप्रियः ॥ तुष्टोनीतिपरायणोतिचतुरोवाग्मीसुगंधान्वितो गंधर्वग्रहपीडितःसुवचनःस्वाचारभुग्मानवः ३ ॥

जो ब्राह्मण गुरु देव इनका पूजन कराकरे दाताहो शुद्धबोले संतुष्टहो थोड़ाखानेवाला सुगन्धी और स्त्रीमें प्रीतिहो रातदिन निद्रा न आवे तेजस्वीहो वलवान्हो पवित्ररहै नीतिका जाननेवालाहो सर्व बातोंको जाने हर्षयुक्तहो ब्रह्मका जाननेवाला ब्रह्मात्मक ऐसा मनुष्य देवताका उ-

न्मादवाला जानना १ जो मनुष्य देव ब्राह्मण साधु वैष्णव गो स्त्री संन्यासी इनसे वैरकरै इनको भयदे तथा खोटाबोलै अन्नजलसे जो तुष्ट न हो दुष्ट हो पराये मर्मका छेदनेवालाहो निडरहो क्रोधीहो मानीहो स्तब्धहो गर्व युक्तहो क्रूरहो सहनशील तथा बलीहो ऐसे मनुष्यको दैत्यकी बाधाजाने २ जो मनुष्य वन नदी पुलिन रमणीकस्थल पर्वत इनमें विचरनेवालाहो प्रसन्नचित्त लालकमलकेसे नेत्रहों बाजा और गीत जिसको प्यारालगे तुष्टहो नीतियुक्तहो अतिचतुरहो शुभ बोलनेवालाहो सुगन्धयुक्तदेहहो वाग्मी अपने वित्तमाफिकभोजनकरे ऐसेमनुष्यको गंधर्वकी बाधाजाननी ३॥

(यक्षग्रस्तकेलक्षण) गंभीरोऽल्पवचोऽरुणाम्बरधरोधीरोतिशूरोमहान् भोमर्त्याःप्रवदन्तुमेझटितिकिंदास्यामिकस्मैवरम् ॥ योयक्षग्रहपीडितोवदतिनानान्योरुणाक्षोनिशं तेजस्वीबलवान्वरोद्रुतगतिर्वाग्मीसहिष्णुर्भृशम् ४ (महासर्पआदियुक्तउन्माद केलक्षण)क्रोधात्माभुजगग्रहेणपरितोग्रस्तोहियोमानवो रक्ताक्षो रुधिरप्रियोतिबलवान्प्रेप्सुःपयःपायसे ॥ शौचाचारबहिर्मुखो विलिहितोऽसृक्सृक्कणीजिह्वया शून्यागाररतःक्वचित्प्रसरतेसर्प्पवद्धिंसाप्रियः ५ (पित्रीश्वरोंकेदोषकालक्षण) दध्योदनेपायसशर्करासु मध्वाज्यमांसेषुचरक्तवस्त्रे ॥ सुगन्धपुष्पेष्वतिशीतलोदे पितृग्रहग्रस्तनरोभिलाषी ६ ॥

जो मनुष्य गंभीर और अल्पवाणीका बोलनेवालाहो लालकपड़े पहिने धीर अतिशूरहो और जो कहे कि हे मनुष्यो ! मुझसे वरमांगो क्यादूं और लाल नेत्रहों तेजस्वीहो बलवान्हो जल्दी चलनेवालाहो श्रेष्ठ बोलनेवाला सहनशील ऐसामनुष्य यक्षकी बाधायुक्त जानना ४ क्रोधीहो और रुधिर प्यारालगे बलीहो दूध और खीरके भोजनकी इच्छाहो शौच और आचार रहितहो बिले सरीखा घर प्यारालगे लालनेत्रहों जीभ से ओठों के रुधिर लगेको चाटे शून्यघर में रहाकरै कभी पसरजाय सांप कीसीतरह हिंसा करना प्यारालगै ऐसे मनुष्यको भुजंग अर्थात् महासर्प की बाधा समझनी चाहिये ५ दही भात खीर बरा शहद घी मांस लालवस्त्र सुगन्ध पुष्प शीतलजल ये पदार्थ जिसको प्यारेहों उसमनुष्यको पित्रीश्वरों की बाधा जाननी ६ ॥

(राक्षसलगेहुयेमनुष्यकेलक्षण) सुरामांसरक्तेषुलिप्सुर्विलज्जोमहाक्रोधयुक्तोतिशूरोसहिष्णुः॥ बलीनिष्ठुरः क्रूरकर्माविरूपोग्रहीतोनिशाचारिभिर्योमनुष्यः ७ (प्रेतग्रस्तकेलक्षण) भ्रमतिरुदितिनित्यंगह्वरारण्यसेवी विलपतिकिलमूर्च्छामेतिकंपंविधत्ते॥ हसतिलिखतिभूमिंभक्ष्यपानैरतृप्तो वदतिविकलवाणींप्रेतग्रस्तोमनुष्यः ८ बालभीरुस्त्रियादेहेप्रविशंतिसुरादयः॥ शीतादयोयथाकायेमन्यंतेप्रतिबिम्बवत् ९॥

मद्य मांस रुधिर इनकी इच्छाहो लज्जारहित महाक्रोधी शूर सहिष्णु बली निष्ठुर क्रूरकर्म का करनेवाला विरूप ऐसा मनुष्य राक्षसग्रस्त जानना ७ डोलाकरै निरधरोयाकरै पर्वत वनमें रहाकरै विलापकरै कभी मूर्च्छासे गिरपड़े कांपै हँसै धरतीको लिखे भोजन और पीनेसे तृप्त न हो विकलवाणीबोले ऐसा मनुष्य प्रेतग्रस्त जानना ८ बालक डरपोंके स्त्री इनके देहमें देवताआदि प्रवेश करते हैं जैसे शीत घाम देहमें लगे तिसी तरह प्रतिबिम्ब उनका मालूम होताहै ९॥

विशन्तिदेहेमनुजस्यसर्वतोग्रहादयःकैरपिदृश्यतेनते॥ कुर्वंतिपीडांमहतींसुदुस्सहांगच्छन्तिशांत्याबलिमंत्रकादिभिः १० विशन्तिनरदेहेषुपूर्णमास्यामरग्रहाः॥ संध्ययोर्दानवादैत्यागन्धर्वाचाष्टमीद्वयोः ११ पितरःकृष्णपक्षेचयक्षायेप्रतिपत्तिथौ॥ पञ्चम्यामुरगारात्रौगन्धर्वाराक्षसादयः १२ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेभूतोन्मादलक्षणंसंपूर्णम्॥

ग्रहादि संपूर्ण मनुष्यके देहमें प्रवेशकरते किसीको नहीं दीखे और दुस्सह तथा भारी पीड़ाको करते हैं वो सर्वशांति और बलिदान तथा मन्त्रजाप से शान्ति होते हैं १० देवता ग्रह मनुष्यके देहमें पूर्णमासीको प्रवेश करते हैं और असुर दानव पूर्णमासी और अमावास्या इनकी सन्धिमें प्रवेश करते हैं और गन्धर्व दोनों शुक्ल व कृष्णपक्षकी अष्टमी में प्रवेश करते हैं ११ पितर कृष्णपक्षमें और यक्ष पड़वामें सूर्य पंचमी में रात्रिमें राक्षसादिक चतुर्दशी में पिशाच ये प्रवेश करते हैं १२ इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्याभूतोन्मादलक्षणंसम्पूर्णम्॥

(वातअपस्माररोगकेलक्षण)मासेपक्षेदशाहेप्रकुपितमरुतामं भवोघोररूपोरोगोपस्मारसंज्ञःसपदिमकुरुतेपातयित्वानरंगाम्॥ श्वासंकासंचमूर्च्छांकरचरणशिरःक्षेपणंशून्यदेहं दोषोद्रेकंविसंज्ञांकफचयवमनंस्वेदशोषांगपीडाः१(पित्तकीमृगीरोगकेलक्षण) पित्तापस्माररोगीपततिभुविनभःपीतरक्तंचदृष्ट्वा फेनंपीतंकफस्य प्रवमतिमुखतःपीतनेत्रास्यकायः ॥ उत्तप्ताक्षोविसंज्ञःक्षिपतिकरपदःकंपतेसप्रसेकः संरंभश्वासमूर्च्छाभ्रमतिबहुतरंशुष्कहृत्कंठतालुः २ (कफकीमृगीरोगकेलक्षण) श्लेष्मापस्माररोगीवितरतिबहुशोहस्तपादप्रकंपं संरंभाद्दर्शयित्वासपदिसितनभःपातयित्वामनुष्यम् ॥शीतांगःशुक्लनेत्रःसितकफनिचयं वक्त्रदेशोद्गिरंतंरोमांचश्वासशीतंजडनरहृदयंगौरवांगंस्फुरन्तम् ३ ॥

मासमें पक्षमें दशदिनमें कुपितहुआ जो वात सो अपस्मारनाम मिरगीरोगको पैदाकर ये लक्षणों को करताहै मनुष्यको पृथ्वीपर गेरदेता है और श्वास खासी मूर्च्छा तथा हाथ पैरोंको इधर उधर पटकना तथा शिरको पटकना शून्यदेह दोषोंको बढ़ावे बेहोशी कफकी उलटी करे पसीने शोष अङ्गों में पीड़ा १ पित्तकी मृगीवाला रोगी धरती में गिरपड़े और आकाशको लाल पीला देखै और मुखसे पीले झाग कफके गेरे पीलेनेत्र पीलाहीदेह होजाय नेत्र तप्त होजावें बेहोशी हो हाथ पैर पटके कांपे पसीने हो श्वासका बढ़ना मूर्च्छा बहुत डोले तालू कण्ठ हृदय सूखै ये पित्तकी मृगी रोगवाला करै २ कफकी मृगीरोगवाला मनुष्य ये लक्षणों को करै हाथ पैरको कँपावै जल्दी से श्वेत आकाशको देख पृथ्वीपर गिर पड़े देह शीतल होजावे नेत्र सफेद श्वेत कफको मुखसे गेरे रोमांचहो श्र्यामहो शरदीलगे हृदय जकड़जावे शरीरभारी तथा देहफड़के ३ ॥

(सन्निपातकीमृगीरोगकेलक्षण) वातपित्तकफैर्युक्तश्चिह्नैःसर्वैः समन्वितः ॥ अपस्मारःप्रकुरुतेपंचत्वंरोगिणोनिशम् ४ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेऽपस्मारलक्षणम्

वादी कफ पित्त तीनोंदोषों के चिह्नोंकरकेयुक्त जो मृगीरोगवाला सो मरजावे ४ इति हंसराजार्थबोधिन्यामपस्माररोगनिदानंसमाप्तम् ॥

(वातव्याधिरोगकेलक्षण) व्यायामेनक्षुधातृषातिकटुकक्षाराम्लरूक्षाशनैःशोकव्याधिविकर्षणातिगमनैरत्यम्बुपानादिकैः॥ [illegible] वातःसंकुपितःक [illegible] ांसिसर्वाणिशरीरजानिरिक्तानिधातुप्रवहाणितानि॥ प्रपूर्यत्वातिरुषाशरीरेमर्माणिसंतोदतिचंडवातः २ हृत्पाइर्वोदरबस्तिहस्तचरणग्रीवाशिरःकूजनंनासाकर्णमुखाक्षिदंतरसनागुलमांत्रसंपीडनम्॥ कुब्जत्वंबधिरंकृशत्वमरतिखाञ्ज्यंशिरःकंपनं चार्द्धांगेजडतांकरोतिकुपितोवातोमहादारुणः ३॥

दण्ड कसरत के करनेसे क्षुधा तृषा के रोकनेसे अतिकडुआ खारा खट्टा रूखा ऐसेपदार्थ के खानेसे शोचसे देहमें रोगके होनेसे बहुत चलनेसे बहुत जलपीनेसे धातुकेक्षयहोनेसे घातसे गिरपडनेसे स्त्रीके बहुतसङ्ककरनेसे वातकुपितहो मनुष्योंको महादारुण अनेकवात के रोग पैदाकरे १ जितनी शरीरमें धातुकी बहनेवाली नाडी तिनको वात शुष्ककरदे औ रोषको प्राप्तहुई जो वात सो सर्वनसों में प्रवेशकर प्रचण्डवात मर्म मर्म में पीडा करती है २ हृदय पसवाडा पेट वस्ती हाथ पैर नाड शिर इनका गूंजना नाक कान मुख नेत्र दांत जीभ टकना आंत इनमें पीडाहो कुबडा होजाय बहिरा तथा लटजावे मनका न लगना खञ्जापना शिरका हिलना अर्द्धाङ्गवायुहोजायतथावादीसेजकडजाययेलक्षणकुपितमहावातकरतीहै३

सर्वांगेषुगतोमरुद्गुरुतरंशूलंकरोतिद्रुतं भेदंसंधिषुकंपनंकरपदामस्थ्नांचसंस्फोटनम्॥ सर्वांगस्फुरणंविनिद्रमनिशंशोफंशरीरेभ्रमंचाध्मानंकटिपीडनंहृदिरुजंविण्मूत्रयोस्स्तंभनम् ४ वातःकुर्यात्कोपितोदंतबंधंजिह्वास्तंभंकर्णयोर्गुंजशब्दम्॥ नाडीस्तब्धंरक्तवीर्यादिशोषंह्यस्थिस्फोटंदेहसंकोचवृद्धिः ५ जृम्भोद्गारंच हिक्कांवितरतिपवनःपीतवर्णंशरीरं हल्लासंश्वासकासंमलसिविकलतांछर्द्यतीसारगुल्मम्॥ अंतर्दाहंविसंज्ञांकृशतनुमरतिंकामलांपांडुरोगंह्युद्वेगंसंधिभेदंव्यथयतिसततंसर्वकायेमनुष्यम् ६॥

सबअङ्गोंमें प्राप्तहुई जो वात सो ये लक्षणोंकोप्रकटकरे प्रबलशूल संधिन

मेंपीडा हाथपैरोंका कांपना हड्डी हड्डीका फूटना सबशरीरका फडकना नींदका न आना सूजन तथा भ्रम पेटका फूलना कमरमेंपीडा हृदयमें दुःख विष्ठामूत्रका रुकजाना ४ कुपित वात दन्तवन्ध जीभकास्तम्भन कानोंमें गुञ्जारशब्द नाडियोंका स्तम्भ रुधिर और वीर्य का सूखना हड्डीहड्डीमेंपीडा देहका घटना बढ़ना ये लक्षण करतीहै ५ जम्भाई डकार हिचकी पीलिया सूखी रह श्वास खांसी मनमें बेकली उलटी अतीसार गोला भीतरी दाह बेहोशी शरीरकृश मनका न लगना कामला शरीरका रंग पीला उद्वेग सन्धिनमेंपीडा सबशरीरमें व्यथा ये लक्षण सर्वांगकी पवन करती है ६ ॥

करोतिकोपितोनिलोहलीमकंचगृध्रसीं ॥ विसूचिकांविलम्बिकांप्रलापमंगपीडनम् ७ (त्वचामेंप्राप्तवातकालक्षण) त्वग्गतः पवनःकुर्याद्रूक्षत्वंत्वचिकृष्णताम् ॥ कार्कश्यंशून्यताकार्श्यंवैवर्ण्यंस्फुटितारुजम् ८ (रुधिरमेंप्राप्तवातकालक्षण) वातोरक्तगतःकुर्यात्कार्श्यंरुधिरशोषणम् ॥ तीव्रतापंव्रणंगुल्मंखर्ज्जुंदद्रुविचर्चिकाम् ९ ॥

कुपितहुई जो वात सो मनुष्यकी देहमें हलीमक गृध्रसी विसूचिका विलम्बिका प्रलाप अंगोंमें पीडाकरतीहै ७ त्वचामें प्राप्त पवन शरीररूखा तथा कालावर्ण को करे कर्कशस्वभाव तथा देहमें शून्यता और कृशपना विवर्ण तथा देह को फटना ये लक्षण करती है ८ रुधिरसे प्राप्तवादी शरीर कृशकरे रुधिरमात्र को सुखाय देय तीव्रज्वरकरे फोडा और गोलान को पैदाकरै खुजली दाद खाज को करती है ९ ॥

(मांसमेदागतवायुकेलक्षण) मांसमेदगतोवातोगुर्वंगंकुरुतेश्रमम् ॥ स्तब्धांगमरुचिंतापमरतिंरक्तशोषणम् १० (मज्जास्थिगतवातकेलक्षण) वातोमज्जास्थिगःकुर्याद्भेदःपर्वास्थिसंधिषु ॥ वलमांसक्षयंशूलंत्रिनिद्रंवीर्यनाशनम् ११ (शुक्रगतवातकेलक्षण) शुक्रस्थःपवनःकुर्यादरुचिंत्रिषुपीडनम् ॥ वीर्यशोषंमनस्तापंवलकांतिसुखक्षयम् ॥ १२ ॥

मांसमेदामें प्राप्त वात देह को भारीकरै अनायास श्रम को करै शरीर जकडजाय अरुचि ताप मनका न लगना रुधिरका सूखना १० मज्जा और हड्डीमें प्राप्तहुई जो वात सो गांठोंमें पीडा हड्डी और संधिनमें पीडा

मांस और वलका क्षयहोना शूल और नींदकानाश तथा वीर्यका नाश ये लक्षणोंको करै ११ शुक्रमें प्राप्तहुई वात सो अरुचि मन वाणी देह इनमें पीड़ा वीर्यकाशोप मनमें ताप वल कान्ति सुखकोनाश ये लक्षणोंकोकरै१२

(नाड़ीगतवातकेलक्षण) वातःशिरागतःकुर्यात्कुब्जखांज्यं महारुजम्॥ शिरासंकोचस्तब्धत्वंबधिरंवमनंकृशम् १३ (कोष्ठगतवातकेलक्षण) कोष्ठस्थानगंतोवातःकुरुतेमूत्रवन्धनम्॥ शूलाध्मानमुदावर्त्तगुल्मार्शांसिभगन्दरम् १४ (सर्व्वांगगतवातकेलक्षण) सर्वांगस्थोपिकुपितः पवनोविविधान्रुजान्॥ कुरुते वर्द्धतेसर्वान्वाह्याभ्यन्तरपीडकान् १५॥

नाड़ीगत वातरोग ये लक्षणोंको करै कुबड़ापना खंजापना नाड़ीनका सुकड़ना तथा जड़ता वहिरापना बौनापना और कृश १३ कोष्ठमें प्राप्त भई जो वात सो मूत्रवन्ध को करै शूल और अफराको करै उदावर्त गोला ववासीर भगन्दर इनको करती है १४ सर्वांग में प्राप्तभई पवन सो तरह तरहके रोगोंको पैदाकरतीहै और सब कुपित बाहरके रोगोंको तथा भीतर के रोगोंको बढ़ाती है १५॥

(सन्धिनमेंस्थितवातकेलक्षण) संधिस्थःपवनःकुर्याच्छोफं शूलंचदारुणम्॥ संधीन्विस्फोटयेत्सद्यःसचकर्षतिवर्द्धति १६ धातवःपंचदेहस्थाहेतवःसुखदुःखयोः॥ स्वस्थानेसुखदाःसर्वेपरस्थानेषुदुःखदाः १७ (पंचवातकेअलगअलगलक्षण) प्राणोवायुर्वसतिहृदयेऽपानसंज्ञोगुदान्ते नाभेश्चक्रेभ्रमतिपरितोजीवभूतःसमानः॥ कण्ठस्थानेचलतिपवनोयोह्निरात्रावुदानः सर्वांगेषुप्रसरतिमरुद्व्यानसंज्ञोनितांतम् १८॥

सन्धियों में प्राप्त वात सूजन और दारुणशूल संधिनमें पीड़ा और सुखावै तथा बढ़ावै १६ पांच वात देहमें सुख दुःखकी देनेवाली रहती हैं यदि वो अपने स्थानपर रहैं तो सुखदायक और दूसरे के स्थानपर जानेसे दुःखदायकहोती हैं १७॥ १ प्राणवात हृदयमें रहती है २ अपानवायु गुदामें रहती है ३ जीवभूतसमानवायु नाभीचक्रमें रहतीहै और ४ रातदिनकी वहनेवाली उदानवायु कंठमें रहतीहै और ५ सब देहमें रहनेवाली व्यानवायु है १८॥

(पित्तान्वितप्राणवातकेलक्षण) प्राणःपित्तान्वितःकुर्याद्दूष्माणंचित्तविभ्रमम् ॥ तृष्णांशूलंश्वासहिकांछर्दिश्वदुस्सहाम् १९ (कफान्वितप्राणवातकेलक्षण) प्राणःकफावृतःकुर्याद्दौर्बल्यालस्यसादनम् ॥ वैरस्यमरुचिंतंद्रामुत्क्लेदंदोषसंचयम् २० (पित्तकफयुक्तउदानवातकेलक्षण) उदानःपित्तयुक्कुर्य्यान्मूर्च्छांदाहंभ्रमंक्लमम् ॥ कफान्वितोतिमंदाग्नि शीतंहर्षंचकंपनम् २१ ॥

पित्तसंयुक्त प्राणपवन देहमें गरमीको करै तथा चित्तभ्रम प्यास शूल सूखी रद्द हिचकी वमन ये लक्षणोंको करै १९ कफसंयुक्त प्राण वात ये लक्षण करती है दुर्बलता आलस्यका स्थान विरसता अरुचि तंद्रा उकलाट दोषके समूहको बढ़ाती है २० पित्तकेसाथ मिली जो उदानवायु सो ये लक्षण करै मूर्च्छा दाह भ्रम ग्लानि और जो उदानवायु कफके साथ मिलीहो तो मंदाग्नि शीत हर्ष तथा कंपको करती है २१ ॥

(पित्तकफयुक्तसमानवातकेलक्षण) समानपित्तयुक्तृष्णांमूर्च्छामूष्माणमेवच ॥ कुर्य्यात्कफान्वितोहर्षं विण्मूत्ररोमहर्षणम् २२ (पित्तयुक्तअपानवातकेलक्षण) अपानःपित्तयुक्कुर्य्याद्रक्तातीसारमुल्वणम्॥ ऊष्माणमरतिंदाहमर्शांसिचभगन्दरम् २३ (कफयुक्तअपानवातकेलक्षण) कफयुक्तोयदापानोगुदान्तेकृमिसंचयम् ॥ कुरुतेगुरुतांमूत्रमालस्यंवलनाशनम् २४ ॥

समानवायु पित्तके साथ मिलीहुई तृष्णा मूर्च्छा गरमीको करती है इसीतरह कफयुक्त समानवायु हर्ष विष्ठा मूत्रका रुकना रोमांचको करती है २२ अपानवायु पित्तके संयुक्त ये लक्षणकरती है रक्तातीसार गरमी मनका कहीं न लगना दाह ववासीर भगंदर २३ कफयुक्त अपानवायु गुदा में कृमिरोगकरे शरीरभारी बहुत मूत्रकाहोना आलस्य वलकानाश ये लक्षणोंको करै २४ ॥

(पित्तकफयुतव्यानवातकेलक्षण)व्यानःपित्तान्वितःकुर्य्यादंगविक्षेपणक्लमम्॥दंडकंस्तम्भनंदाहंशोफंशूलंकफान्वितः२५ नाडीय

दासमभ्येत्यकुपितःपवनोबली ॥ देहविक्षेपणंकुर्याच्छिरःकंपं करोतिच २६ यदासंकुपितोवातो नानाहेतुभिरूर्ध्वगः ॥ तदासं कुरुतेदोषं हृच्छिरःशंखपीडनम् २७ ॥

व्यानवायु पित्तके साथ मिलीहुई अंगोंका पटकना ग्लानिको करतीहै उपतापस्तंभ दाह सूजन शूल ये व्यानवायु कफसंयुक्त करतीहै २५ बली पवन कुपित नाडीनमें प्राप्तहो शरीरका इधर उधर पटकना करती है और शिर कंपको करतीहै २६ जब बादी नाना हेतूनसे कुपित उपजती है तब हृदयमेंमस्तकमें कनपटीमें पीडाकरतीहै और अनेकदोषोंकोकरती है २७॥

गत्वोर्ध्वंस्वगृहात्करोतिपवनोदेहंचकोदण्डवत् कण्ठःकूज तिकोकिलेवसततंगात्रंमुहुःक्षेपणम् ॥ स्तब्धत्वंनयनद्वयोर्वितनु तेशोषंमुखेवक्रिमां श्वासंकाससमन्वितंचजठरेशूलंतृषांसंभ्रम म् २८ (पित्तयुक्तवातकेलक्षण) दाहंपित्तान्वितःकुर्यात्तृष्णांछ र्दिंशिरोव्यथाम् ॥ हल्लासंहृदयग्रंथिहिक्कांकंठहनुग्रहम् २९ (क फयुक्तवातकेलक्षण)कफान्वितोवमिंकुर्यात्तंद्रान्निद्रांगगौरवम्॥ जाड्यंशैत्यंसरोमांचंक्षवंशोफंचवेपथुम् ३० ॥

अपने स्थानसे ऊपरको चढीहुई वात मनुष्यके देहको धनुषकी तरह बांकाकरदे और कंठकोकिलाकी वतौर बोले तथा शरीर को इधर उधर पटके दोनोंनेत्रों का स्तब्धत्वहो मुखका सूखना तथा मुखटेढा होजाय श्वास खांसीके साथ पेटमें दर्दहो और प्यास तथा भ्रमहो २८ पित्तयुक्त वात दाहकरै प्यास और वमनकोकरै शिरमेंदर्द सूखीरद हृदयमें गांठ हिचकीकंठमें हनुग्रह इन रोगोंकोकरै २९ कफयुक्तवात वमन तन्द्रा निद्रा देहभारी जड़ता शीतलगना रोमांच छींक सूजन कंप ये रोगकरती है ३० ॥

(कफपित्तयुक्तवातकेलक्षण) कफपित्तान्वितोवायुःपक्षाघातंक टिग्रहम् ॥ कुब्जंखंजंशिरःकंपमंगभंगंप्रपीडनम् ३१ (अधोभा गमेंप्राप्तवातकेलक्षण) गत्वाधःकुपितःकरोतिमरुतोरुस्तंभनं कुण्डलं शूलाध्मानविलम्बिकागुदरवंगुल्मोपदंशंभृशम् ॥ शूका र्शांसिभगंदरंकटिरुजंविण्मूत्रयोस्स्तम्भनम् ॥ जंघोरुगुदाशि ण्योनिदूषणानांपीडनंदण्डकम् ३२ हेतुभिःकुपितोवातोहाति

कोपोन्यदोषयुक् ॥ महाकोपस्त्रिदोषाभ्यांसर्वैभवतिरोगदः ३३ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेवातव्याधिलक्षणम् ॥

कफ पित्त मिलीहुई वात पक्षाघात कमरमें दर्द कुवड़ापना खंजत्व शिरकाहिलना अङ्ग भङ्ग और पीड़ा करती है ३१ नीचेके भागमें प्राप्तहुई जो पवन सो ऊरुस्तंभ कुंडलरोग शूल अफरा विलंबिका गुदामेंशब्द पेटमें गोला उपदंशशूकरोग ववासीर भगन्दरकमरमेंदर्द दस्त पेशावकारुकजाना जंघाऊरू लिंगेन्द्रिय योनि अंडकोश इनमें दर्द तथा दंडकरोग इनकोकरती है ३२ हेतूनसे कुपित वातरोग करती है और दोषके मिलने से अति कोप को प्राप्त होती है और त्रिदोषसे महाकोपको प्राप्त होती है तब बराबर रोग करती है३३इति हंसराजार्थबोधिन्यांवातव्याधिरोगनिदानंसम्पूर्णम्॥

अथ वातरक्तरोगनिदानम् ॥

(तत्रादौवातरक्तरोगोत्पत्तिः) रूक्षोष्णाम्लकषायतीक्ष्णकटुकस्निग्धाशनैर्भूयसः निष्पामांसकुलत्थशाकमधुरक्षारान्नपित्ताशनैः॥तक्राम्लासववारुणीदधिपयःपानैर्निशाजागरैःप्रायःकुप्यति वातरक्तमपरैर्व्यायामशोकादिभिः १विरुद्धदुष्टाशुचिपानभोजनैर्जलावगाहैर्वनितातिसंगमैः ॥ रात्रौदिवाजागरणैःप्रधर्षितोरक्तप्रकोपंकुरुतेमरुत्तदा २ स्रोतांसिरक्तप्रवहानिरुध्वाकरोतिवातोरुधिरंचकृष्णम् ॥ रोषात्तथाशोणितमुच्छलन्तिसमस्तरोगान्वितनोतिनूनम् ३ ॥

रूखा गरम खट्टा कषैला तीखा कड़ुआ चिकना भोजनकरनेसे निष्पाव तथा मांस कुलथी शाक मीठा खारमिला अन्न पित्तकी करनेवाली वस्तुके खानेसे छांछ आम्र आसव मद्य दही दूध के पीनेसे रातमें जागनेसे दंड कसरतके करनेसे शोचसे वातरक्त कोपको प्राप्त होताहै १ विरुद्धदुष्ट अपवित्र वस्तुके पीनेसे तथा खाने से स्नानसे बहुत स्त्रीसंगसे रातदिन के जागनेसे और डरनेसे वातरक्तरोग पैदा होताहै २ रुधिरकी बहनेवाली नाड़ीनके मार्गको रोंककर वातरुधिरको कालारंगकाकरदेवै फिर क्रोधको प्राप्तहुआ जो रुधिर सो देहके बाहर तथा भीतर अनेकरोगोंको पैदाकरै ३॥

करोत्यालसंमंडलंवातरक्तंशरीरंविवर्णरुजंरूक्षगात्रं ॥ भ्रमं मूत्रकृच्छ्रंक्लमंमर्मतोदंज्वरंवेपथुत्वंशिरःपीडनंतत् ४ (पित्तान्वित वातरक्तकेलक्षण) करोत्येवपित्तान्वितंवातरक्तंमुदंदाहसम्मोह तृष्णांगशोषम् ॥ भ्रमोष्मारतिश्छर्दिस्वेदांगतोदंकटुत्वंमुखेशो फमूर्च्छाविनिद्रम् ५ (कफयुक्तवातरक्तलक्षण) कफेनान्वितंवा तरक्तंगुरुत्वंकरोत्यालसंमंडलंरक्तपीतम् ॥ वमिंमंदचेष्टेन्द्रियेषु प्रलापंशरीरेतिपामाकृशत्वंक्षवत्वम् ६ ॥

आलकस कालेकाले देहमें चकत्ता तथा शरीरका विवर्ण रूखा देहकरदे पीड़ाहो भ्रम मूत्रकृच्छ्र ग्लानि मर्ममर्ममें पीड़ा ज्वरकंप शिरमें पीड़ा ४ पित्तान्वित जो वातरक्तसो मस्तपना दाह मोह प्यास अंगशोष भ्रम गरमी मनका डमाडोलपना वमन पसीनेकाआना अंगोंमेंपीड़ा मुखकडुवा सूजन मूर्च्छा निद्राका नाश इनलक्षणों को करताहै ५कफयुक्त वातरक्त देह भारी करै आलकस देहमें लालपीले चकत्ते करे वमन इंद्रियोंकी मंदचेष्टाहोना बकना देहमेंखाज तथा देहकृश औरै छींकका आना इन लक्षणको करै ६ ॥

पांगुल्यंचविसर्पिकारुचिमदोमूर्च्छांगुलीवक्रता हिक्कादाहप्र वेपिकाभ्रमतृषाश्वासक्लमःस्फोटता ॥ कासोमोहशरीरशोषमधि कंमर्मग्रहश्चार्बुदः संप्रोक्तास्समुपद्रवामुनिवरैस्तेवातरक्तेऽहि ताः ७ सोपद्रवंत्याज्यतमंभिषग्भिर्द्विदोषजंकष्टतरेणसाध्यम् ॥ जपेनदानेनशिवार्चनेनयत्नौषधीभिर्नुवातरक्तम् ८ इति श्री भिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेवातरक्तलक्षणम् ॥

पांगुरा विसर्परोग अरुचि मद मूर्च्छाउंगली टेढ़ीहोजायँ हिचकी दाह कंप भ्रम प्यास श्वास ग्लानि शरीरका फटना खांसी मोह देहमें शोष मर्म स्थानों में पीड़ा अर्बुदरोग ये वातरक्त रोगके उपद्रव मुनीश्वरों ने अ- साध्य कहेहैं ७ वैद्यों करके उपद्रवकेसाथ जोवातरक्त सोत्याज्यहै और दो दोषसे पैदाहुआ जो वातरक्त सो कष्टसाध्यहै वो जप दान शिवपूजन और उपाय तथा औषधीकरके अच्छाहो ८ इति हंसराजार्थबोधिन्यांवातरक्त निदानंसम्पूर्णम् ॥

(अथऊरुस्तम्भनिदानम्) नीत्वाधःकुपितोवातःसञ्चयं श्लेष्ममेदयोः ॥ जंघोरुसक्थिगुल्फेषुपूर्यित्वास्तम्भयेद्गतिम् १ (जंघोर्वोश्लेष्ममेदाभ्यांसम्पूर्णोभवतोबलो ॥ ऊरूस्तम्भःसविज्ञेयोभिषग्भिःप्राकृतैर्भृशम् २(ऊरुस्तम्भलक्षणम्) ऊरूस्तम्भेतिपीडाभवतिचरणयोरोमहर्षोजडत्वं शीतंसर्वाङ्गकम्पोवयसिशिथिलताछर्दिनिद्राकृशत्वम् ॥ कृच्छ्रोन्न्यासम्पदानामरुचिरतिवमिमन्दवह्निर्गुरुत्वं चिह्नान्येतानिनूनंमुनिगणवचनात्कीर्तिताहंसराजैः ३ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृते वैद्यशास्त्रेऊरुस्तम्भलक्षणम् ॥

अथऊरुस्तम्भलक्षण ॥ कोपको प्राप्तहुई जो वात सो कफ और मेदाके समूहको नीचेलेजायकर जांघ ऊरू जानू टकना इनमेंव्याप्तकरके चलनेकी शक्ति को स्तंभन करदे उसे ऊरुस्तम्भरोग कहतेहैं१जांघऊरू जब कफ और चर्बीसे परिपूर्णहोजायं और चला न जावे तो उसको वैद्योंने ऊरूस्तंभ रोग कहाहै २ऊरूस्तंभ रोग में ये लक्षण होते हैं दोनों पैरोंमें पीड़ा रोमांच जड़त्व शीतका लगना सर्वदेहमें कंप अंगोंमें शिथिलता रद्द निद्रा कृशता पैरोंका कठिनतासे उठना अरुचि मनका न लगना वमन मन्दाग्नि देह-भारी ये ये ऊरूस्तंभरोगके लक्षण मुनीश्वरों के वचनके अनुसार हंसराज कविने कहे हैं ३ इति हंसराजार्थबोधिन्यामूरूस्तंभरोगनिदानंसम्पूर्णम् ॥

(अथामवातलक्षणम्)व्यायाममन्दाग्निविरुद्धभोजनैःस्निग्धाशनेनातिविहारचेष्टया ॥ रात्रौदिवाजागरणेनकोपितःश्लेष्मस्थलेह्यामचयंनयेन्मरुत् १ आमान्नस्यरसोपक्वोमरुताक्रियतेपुनः ॥ दूषितःकफपित्ताभ्यांनाडीभिःपीयतेनिशम् २आमसंज्ञःसरावायंयोजीर्णजनितोरसः॥रोगाणामाश्रयोघोरःस्रोतांसितुदतेभृशम्३

तीनश्लोककरिके प्रथमआमरोगकीउत्पत्तिलिखतेहैं दंड कसरतके करनेसे विरुद्ध भोजनसे चिकने पदार्थखानेसे अत्यन्त स्त्रीआदिसेवन करने से रातदिन जागनेसे कोपको प्राप्तहुई जो वात सो कफके स्थानमें आमके समूहको प्राप्त करतीहै १ अन्नका जो रस विना पका उसको वात दूषित करै तथा पित्त कफकर दूषित भयाहो उसको नाड़ीपीती है २ उसी अजीर्ण

से पैदाहुये रसको आमरोग घोररोगोंका आश्रय करतेहैं और नाड़ीके मार्गों को रोकदेती है ३ ॥

आमोरुग्विदधातिशोफमधिकंसंकोपितोवायुना जंघोरूकर सन्धिपादवृषणस्कन्धास्यनेत्रेषुच ॥ मांसास्थित्रिककुञ्चनञ्चहृदयेकम्पंज्वरंशोषणं स्तब्धांगंवितनोतिदारुणभयम्पाकंतृषांशून्यताम् ४ (पित्तसेकुपित आमलक्षण) आमःसंकुरुतेरुषाङ्गमरुणंपित्तेनसंकोपितः शीर्षेसन्धिषुपीडनंकटिरुजंसर्वाङ्गदाहंज्वरं मूर्च्छासंभ्रमशोषणंचहृदयेशूलंमहादारुणं बन्धंमूत्रपुरीषयोर्नयनयोःपीतंत्वमार्तिंतृषाम् ५ (कफसेकुपित आमवातकेलक्षण) आमःश्लेष्मयुतःकरोतिजडतांनिद्रांगुरुत्वन्तना वालस्यंबहुमूत्रताञ्चगलकेसंकूजनंशीतताम् ॥ दौर्बल्यंमुखपादहस्तवृषणेशोषङ्गतेस्तम्भनं वीर्यौजोरुचितेजसांबलधियांनाशंप्रसेकंक्लमम् ६

बादीसे कुपित आमरोग जांघ ऊरू हाथ तथा देहकी संधी पैर अंडकोश कंधेनमें मुखतथा नेत्रोंमें सूजन करदे मांस हड्डी त्रिककहिये मकड इनका घटना हृदयमें कंपज्वर शोप देहका जकड जाना घोर भय तथा देह का पकना और प्यास और देहमें शून्यता ये लक्षण करतीहै ४ पित्तसे कुपित जो आमरोग सो देहको लालकरदे मस्तक तथा संधीनमें दर्द सब देहमें दाह तथा ज्वर मूर्छा भ्रम शोप हृदयमें महा दारुण शूल मूत्र पुरीप का रुकना नेत्रपीले प्यास और खेद ये लक्षण करताहै ५ कफयुक्त आमरोगके ये लक्षणहैं शरीर जकड़जाय निद्रा देहभारी आलकस पेशाब ज्यादा उतरे गलेका गूंजना जाड़ालगे दुर्बलपना मुख हाथ पैर अंडकोश इनमें सूजन गतिका रुकना वीर्यताकत रुचि तेज बल बुद्धि इनकानाश लारका गिरना ग्लानी ६ ॥

आमस्त्रिदोषजोऽसाध्यःकष्टसाध्योद्विदोषजः ॥ दोषैकसंयुतः साध्यःसुखेनैवभिषग्वरैः ७ त्रिदोषजनितैःसर्वलक्षणैर्लक्षितोह्ययः ॥ सन्निपातःसविज्ञेयोद्विदोषोहिद्विदोषजैः ८ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रे आमवातलक्षणम् ॥

त्रिदोप से पैदाहुआ आमरोग असाध्यहै और दो दोपसे जो हुआ सो

कष्टसाध्य है और एकदोषयुक्त साध्यहै ऐसे सुषेणादि वैद्यों ने कहाहै ७ जिसमें त्रिदोष के सब लक्षण मिलतेहों उनको सन्निपातका आमवात रोग कहतेहैं और जिसमें दोदोष के चिह्नहों उसे द्विदोषज कहते हैं ८ इति हंसराजार्थबोधिन्यामामवातलक्षणंसम्पूर्णम् ॥

अथ परिणामनिदानम् ॥

(अथपरिणामशूललक्षणम्) विण्मूत्ररोधाद्विषमासनस्था च्छीताम्बुपानात्पवनस्यरोधात् ॥ अत्युच्चभाषादतिभक्ष्यपाना द्रूक्ष्याशनात्कुत्सितयानरूढात् १ अपक्वपिष्टान्नविरुद्धभक्षणा त्कषायतिक्ताशुचिदुष्टभोजनात् ॥ दिवानिशाजागरणाद्विलंघ नात् करोतिशूलंपवनोरुषान्वितः २ नाभिमूलेगुदेवस्तौयोनौ पार्श्वेत्रिकेस्थिषु ॥ शूलंवातकृतंज्ञेयंभिषग्भिर्नात्रसंशयः ३ ॥

विष्ठामूत्रके रोकनेसे खोटी सवारीपर बैठनेसे शीतल जलपीनेसेपवनके वेगरोकनेसे ऊंचेबोलनेसे अत्यंत भोजन और पानसे तथा रूखेपदार्थ केभोजनसे यह रोग होताहै १ बिनापकापिसाहुआ ऐसे अन्न के खाने से विरुद्ध भोजनसे कसैला तीखा अपवित्र दुष्टभोजनसे दिनरात के जागनेसे लङ्घनकरनेसे रोषको प्राप्तहुई जो पवन सो शूलरोग को पैदाकरतीहै २ नाभीमूलमें गुदामें मूत्रस्थानमें योनीमें पसवाड़ोंमें त्रिकस्थानमें हाड़ोंमें वादीकाशूल वैद्य जाने इसमें सन्देह नहीं करना चाहिये ३ ॥

(वादीकेशूलकालक्षण) शूलंवातोद्भवंकुर्यात्प्रभातेंगविमर्द नम् विण्मूत्रबन्धनंहिक्कामाध्मानोद्गारस्तब्धताः ४ (पित्तकेशूल केलक्षण) तीक्ष्णोष्णपिण्याकविदाहिपूगैस्तैलाम्लनिष्पाकटुसू र्यतापैः ॥ व्यायामसौवीरसुराविकारैः प्रवृद्धपित्तंकुरुतेहिशूल म् ५ पित्तोद्भवंशूलमतीवरौद्रंमध्यंदिनेकुप्यतिचार्द्धरात्रौ ॥ क रोतिमूर्च्छांभ्रमदाहमोहास्तृट्स्वेदमार्त्तिज्वरमुग्रशीतम् ६ ॥

प्रातःकाल शरीरका टूटना दस्त और पेशाबका बन्दहोना हिचकी पेट का फूलना डकारका आना जड़ता ये वात शूलके लक्षण हैं ४ तीक्ष्ण गरम पिण्याक दाहकरनेवाली वस्तु सुपारी तेल खट्टा निष्पा कटु सूर्य

कीचममें डोलने से दंडकसरतके करनेसे कांजीके पीने से मद्यकेविकार से कोपकोप्राप्त हुआ जो पित्त सो शूलरोगको करताहै ५ पित्तसे पैदाहुआ घोरशूल सो मध्याह्न और अर्द्धरात्रमें कोपकरताहै और मूर्च्छा और दाह बेहोशी प्यास पसीने खेद घोरज्वर और शीत ये करैहै ६॥

कुक्षौसजठरेपार्श्वेशूलंपित्तसमुद्भवम् ॥ सोष्माणंदारुणंज्ञेयं वैद्यैराधुनिकैर्ध्रुवम् ७ (कफकेशूलकालक्षण) मध्वाज्यमांसैर्मधुराम्लतक्रैर्वृन्ताकशीतोदकदुग्धपानैः ॥ माषेक्षुमज्जातिलतैलशीतैःश्लेष्माप्रवृद्धःकुरुतेहिशूलम् ८ वक्षस्थलभवंशूलंकफान्तस्यसमुद्भवम् ॥ वमनेनशमंयातिसंध्ययोर्बलवत्तरम् ९ ॥

कूख पेट पसवाड़ोंमें पित्तकाशूल होताहै और दारुण गरमी ये लक्षण अबकेवैद्योंने कहेहैं ७ सहत घी मांस मीठा खट्टा छांछ बैंगन शीतलजल दूध इनकेसेवन से उड़द ईख चरबी तिलतेल शरदीसेकुपितहुआ जोकफ सो शूलरोग पैदा करताहै ८ कफसे पैदाहुआ जो शूल वक्षस्थल तथा सन्धीन्में सो वमनके करानेसे आरामहो ९॥

शूलंकफात्म्यंकुरुतेप्रसेकंतंद्रालसंगौरवतांप्रकम्पम् ॥ हृल्लासकासारुचिछर्दिदाहंकंठेतिपीडातिमितांगशीतम् १० (वातकफशूलकेलक्षण) पार्श्वेषुवस्तौहृदयेचशूलंवदंतिवैद्याःकफवातजातम् ॥ पित्तानिलाभ्यांजनितंसदाहंकुक्षिद्वयेतद्धृदयेप्रपीडयेत् ११ (शूलरोगकीउत्पत्ति) चण्डीशशस्त्रंकफपित्तसम्भवंजानीहितंत्वंहृदयोदरस्थम् ॥ रूपाणिसर्वस्वंकुरुतेस्वकाले दोषैःसमस्तैःप्रभवंत्यजेत्तम् १२ ॥

कफसे पैदा हुआ जोशूल सो पसीना तंद्रा आलकस देहभारी कंप सूखरद खांसी अरुचि वमन दाह कंठमें पीड़ा मंद जाड़ा लगै येलक्षणकरै १० जिसमें येलक्षणहों उसको वातकफका शूल वैद्यकहते हैं पसवाड़ोंमें मूत्रस्थानमें हृदयमें शूलहो वातपित्तजनितशूललक्षण॥ और जिसमें दाह हो कूखमें और हृदयमें पीड़ा हो उसे वात पित्तका शूल रोग जानै ११ श्रीमहादेवके शूलसे तथा कफपित्तसे पैदा हुआ शूल सो हृदयमें पेटमें अपना तरह तरहका रूप धारणकरै और सब दोषों से पैदाहो ऐसाशूलवान् रोगी को वैद्यत्यागदे १२ ॥

(शूलकाअसाध्यलक्षण) वायुःसंनिहितश्चपित्तकफयोस्स्थानंसमावर्त्तयेद्यःशूलंकुरुतेतदेवमपरंभुक्तेतिशांतिंव्रजेत् ॥ तच्छूलंपरिणामजंमुनिवरैःप्रोक्तंचदोषान्वितं ज्ञेयंप्राक्कथितैर्नरैःकफमरुत्पित्तोद्भवैर्लक्षणैः १३ सोपद्रवंत्रिदोषोत्थमसाध्यंकथितंबुधैः॥ कष्टसाध्यंद्विदोषोत्थंसुखेननिरुपद्रवम् १४ (शूलकेदशउपद्रवकेभेद) तंद्रामूर्च्छाज्वरोदाहःश्वासःकासोतिवेदना ॥ हिक्काङ्गगौरवश्छर्दिः शूलस्योपद्रवादश १५ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेपरिणामशूललक्षणंसम्पूर्णम् ॥

जिसमें ये लक्षणहों उसे परिणामशूल जानना जो वादीसेयुक्त और पित्त कफके स्थानमें प्राप्तहोकर पीछेदर्दकोकरै और दूसराखाने से शांतिहो और त्रिदोषयुक्तहो उसेअसाध्य मुनीश्वरों ने तथा प्राचीनवैद्यों ने कहाहै १३ जो उपद्रवके साथहो और सन्निपातसे पैदाहुआहो वो शूलरोग असाध्यहै ऐसावैद्योंने कहाहै और जो दोदोषसे पैदाहुआहो वो शूल कष्टसाध्य है और जो उपद्रव रहित हो वो सुखसाध्यहै १४। १ तंद्रा २ मूर्च्छा ३ ज्वर ४ दाह ५ श्वास ६ खांसी ७ अतिदुःख ८ हिचकी ९ देहभारी और १० वमन ये शूलरोगके दशउपद्रव हैं १५॥ इति हंसराजार्थबोधिन्यांशूलरोग निदानंसमाप्तम् ॥

(अथआनाहउदावर्तरोगनिदानंतस्योत्पत्तिः)पुरीषमूत्रानिलवेगरोधादनाहरोगःकिलमर्मभेत्ता ॥ संजायतेसौकुरुतेविकारान् वातामयान्वैद्यवरावदन्ति १ अपानवातसंरोधादूर्ध्ववातगतिर्भवेत्॥ अनाहोसौपुरैःप्रोक्तोमुनिभिस्तत्त्ववादिभिः २ हिक्काश्वासवम्युद्गारक्षुत्तृष्णायाऽवरोधनात् ॥ उदावर्त्तोभवेद्रोगोवातवृद्धिप्रवर्त्तकः ३ ॥

दस्त पेशाव अधोवायु इनके रोकनेसे मर्म मर्म में पीड़ाका करनेवाला अनाह रोग होताहै और वादीके विकारको करताहै ऐसे वैद्यकहते हैं १ अधोवायुके रोकनेसे उपलेमार्ग होकर वायुकी गति होतीहै इसी को अनाहरोग तत्ववादी ऋषियोंने कहाहै २ हिचकी श्वास वमन डकार भूख प्यास इनके रोकनेसे वातको बढ़ानेवाला उदावर्त्त रोग पैदा होताहै ३ ॥

(अधोवातरोकनेसेपैदा०)अपानवातसंरोधाद्वातविण्मूत्रसं-

गमः ॥ शूलंक्लमोरुजाध्मानःपीडाटोपोमरुद्भ्रमी ४ (विष्ठाकेवेग रोकनेकेलक्षण) विड्वेगेनिहतेपुंसोवातशूलंगुदेरुजम्॥ जठरे वातजाग्रंन्थिःपीडावस्तौभवेद्भृशम् ५ (मूत्रकेरोकनेसेहुयेउ दावर्त्तलक्षण) मूत्रस्यरोधनात्पुंसोमूत्रकृच्छ्रंशिरोऽव्यथा॥ वस्ति मेहनयोःशूलमानाहोयमितिस्मृतः ६ ॥

अधोवायु रोकनेसे विष्ठामूत्र आपसमें मिलकर शूल ग्लानि खेद अफरा दुःखका आटोप याने समूह पवनका मंदचलना और ये रोग होते हैं ४ विष्ठाके वेग रोकनेसे मनुष्यके बादीसे दर्दहो गुदामें पीडाहो पेटमें बादीसे गोलाहो और मूत्रस्थानमें पीडाहो ५ पेशावके रोकनेसे पुरुषों के मूत्रकृच्छ्र शिरमें पीडा मूत्र स्थानमेहन इनस्थानमें शूलहो इसीकोआनाहकहतेहैं६॥

(जँभाईरोकनेसेहुयेउदावर्त्तलक्षण) जृम्भास्तम्भागलस्त म्भोमन्यास्तम्भःशिरोऽव्यथा ॥ कर्णास्यनेत्रनासासुरोगस्तीव्रो भवेद्भृशम् ७ (आंसूकेरोकनेकेउपद्रव) शोकानंदभवस्यास्रो प्राप्तोदंनैवमुंचति ॥ सरुक्शिरोगुरुत्वंस्यान्नेत्ररोगस्तुपीनसः८ (छींककेरोकनेकेउपद्रव) छवथोर्द्धारणात्शूलंमन्यास्तम्भःशि रोर्द्धरुक् ॥ इन्द्रियाणांचदौर्बल्यंभवेत्पीडास्यचक्षुषु ९ ॥

जंभाई रोकने से गलावैठजाय गलेके पिछली नसका जकड़ना शिर में पीडा कान नेत्र नाक मुख इनमें पीड़ाहो ७ जो पुरुष आनन्द से अथवा शोकसे पैदाहुआ आंसूरोके उसके शिरमेंदर्द तथा शिरमेंभारीपना नेत्ररोग और पीनसरोग होय ८ छींक रोकनेसे शूल गलेकी पिछलीनस का जकड़ना आधेशिरमें दर्द इन्द्रीनमें दुर्बलता नेत्रों में और मुख में पीड़ा होवे ९ ॥

(डकाररोकनेकेउपद्रव)उद्गारेभिहतेतोदःपूर्णत्वंवक्त्रकंठयोः॥ पवनस्याप्रवृत्तित्वंकूजत्वंहृदयेभवेत् १० छर्देर्निग्रहणाद्भवंतिवि विधारोगामहादारुणा हल्लासारतिशोफकष्टऽरुचयोहिक्काविसर्प ज्वराः॥ कोष्ठाशुद्धिविवर्णदाहकृमियोवातप्रसूतारुजःकंडूमोहवि जृम्भणानिबहुशःपांड्वङ्गमर्दभ्रमाः ११ (भूखरोकनेकेउपद्रव) क्षुधाभिघाताद्बलवीर्यहानिःस्यान्मन्ददृष्टिःकृशताशरीरे (प्यास

रोकनेकेउपद्रव) तृष्णाभिघाताद्बहुरोगबाधाहृत्कंठशोषभ्रमदाहमूर्च्छाः १२ ॥

डकार आईहुईको रोकनेसे मुख और कंठमें पीड़ाहो और डकारका न आना हृदयमें गुंजान शब्दहो १० ॥ अथ वमनोपद्रव ॥ आईहुई रदको रोकनेसे दारुण अनेक तरहके रोगहों सूखी उलटीहो अरति सूजन कोढ़ अरुचि हिचकी विसर्परोग ज्वर कोठेमें अशुद्धता विवर्ण दाह कृमिरोग वातव्याधि खुजली बेहोशी बहुतजंभाईकाआना पीलिया अंगोंकाटूटना और ये रोग होतेहैं ११ भूख रोकनेसे बलवीर्यका नाश हो तथा मंददृष्टि हो शरीरमें कृशताहो प्यासरोकनेसे बहुतरोग सतावें तथा हृदय व कंठ सूखें और दाह मूर्च्छा ये रोग होते हैं १२ ॥

(श्वासरोकनेकेउपद्रव) श्वासस्यनिग्रहाद्गुल्मोहृद्रोगोविरतिर्भवेत्॥ मोहोवातकृतोरोगोह्याटोपोविद्रधिस्तथा १३ (निद्रारोकनेकेउपद्रव) निद्राघाताद्भवेज्जृम्भातंद्रालस्यांगगौरवम् ॥ अक्ष्णोर्घूर्णत्वरक्तत्वद्रवत्वंजडतारुचिः १४ कषायाम्लद्रवैरूक्षैर्विरुद्धकटुभोजनैः ॥ वातःसंकुपितःकुर्यादुदावर्त्तंहिलक्षणम् १५ ॥

श्वासरोकनेसे पेटमेंगोला हृदयकारोग मनका न लगना मोह और वात के रोग पेटमें गुड़गुड़ाहट विद्रधिरोग ये होते हैं १३ निद्रारोकनेसे जंभाई तन्द्रा आलकस देहकाभारीहोना नेत्रटेढ़े तथा लाल अश्रुपात युक्त जड़ता और अरुचि ये रोग होते हैं १४ कसैली खट्टी पतली रूखी विरुद्ध तथा कटुवस्तुके खानेसे कुपितहुई जो वात सो दारुण उदावर्त्तरोगकोकरैहै १५॥

स्रोतांस्युदावर्त्तयतेनिलोयमपानविण्मूत्रकफादिकानाम् ॥ वहानिहत्पार्श्वगुदोदरेपुह्याटोपशूलंकुरुतेशिरोर्तिम् १६ उदावर्त्तवातःकरोत्यंगमर्दमरुद्ग्रन्थिमार्त्तिपुरीषसकष्टम् ॥ तृषोद्गारहिक्काभ्रमश्वासकासंवमिशून्यतांरूक्षतांगंप्रकम्पम् १७ इति श्री भिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेआनाहोदावर्तलक्षणं सम्पूर्णम् ॥

विष्ठा मूत्र कफ आदिकी बहनेवाली जो अपान वायु सो नाड़ीन के मार्गको रोककर हृदय पसवाड़ा गुदा पेट इनका फूलना और शूल तथा शिरमें दर्दको करैहै १६ वातका उदावर्त्तरोग हड़कल पेटमें पवनकी गांठ

तथा खदहा कप्टस दस्तका होनों प्यास डकार हिचकी भ्रम श्वास खांसी वमन देहमें शून्यता शरीररूखा तथा कंप ये लक्षण करताहै १७ इति हंस राजार्थबोधिन्यामुदावर्त्तनिदानंसमाप्तम् ॥

(अथगुल्मरोगनिदानम्) गुल्मंवातोद्भवंपैत्त्यंकफजंद्वंद्वसम्भवम् ॥ सन्निपातोत्थितंरौद्रंरक्तजंकीर्त्तितंबुधैः १ हृन्नाभ्योरंतरे वस्तौग्रन्थिरूपंचलाऽचलम् ॥ चतुरंगुलपर्यंतंगुल्मन्तत्परिकीर्त्तितम् २ (वातगुल्मकेलक्षण) निंबूदुंबरयोःफलस्यसदृशं गुल्मंमरुत्सम्भवंह्युद्गारंचमुहुर्मुहुर्वितनुते विण्मूत्रयोर्बंधनम् ॥ जृम्भाध्मानशरीरशोषकृशताः शूलंतृषांहृद्रुजं पीडामंत्रविकूजनं रुचिहरंभुंक्तेमृदुत्वंव्रजेत् ३ ॥

वातसे पित्तसे कफसे द्वंद्वज सन्निपातसे तथा रुधिरसे आठ प्रकारका गोलेकारोग वैद्यों ने कहाहै १ हृदय नाभिके बीचमें मूत्रस्थानमें गांठके आकार गोलाहो एकतो चलायमान दूसराअचल चारअंगुलके बीचमें उसको गुल्म अर्थात् गोलेकारोग कहतेहैं २ जो नींबू गूलर फलके समानहो उसे वादीका गोलाजाने जिसमें डकार बेरबेरमें आवे दस्तपेशाबका बन्द होना जंभाई पेटकाफूलना शरीरमें शोष तथा कृशपना और शूल प्यास हृदयरोग पीडा आंतोंका बोलना अरुचि और भोजन करनेसे नरम हो-जाय ये वादीके गोलाके लक्षणहैं ३ ॥

(पित्तगुल्मकेलक्षण)गुल्मंकुक्षिगतंकपित्थसदृशंपीतंपुरीषंभवेत् ऊष्माहृद्गलकेरतिर्नेसिमुखेशोषाःपिपासाधिका॥ प्रस्वेदज्वरशूलदाहमधिकंस्पर्शासहःसंभ्रमश्चिह्नंपीतसमुद्भवस्यकथितंगुल्मस्य वैद्योत्तमैः४(कफगुल्मकेलक्षण)स्तैमित्यंकठिनोदरंशिथिलतालस्यंगुरुत्वंतनौ बाह्येशीतलतांतरेज्वलनता निद्राऽव्यथामस्तके ॥ स्यात्कंडूत्वचिगुल्ममाम्रसदृशंकासोरुचिर्पांडुता गुल्मश्लेष्मसमुत्थितस्यभणितंचिह्नंसुषेणादिभिः ५ (रक्तगुल्मकेलक्षण) गुल्मंरक्तसमुद्भवंदृढतरंजंबीरनिम्बूसमं हृन्नाभ्यंतरभूमिकासुजनितं पुंसस्त्रियोर्योनिषु ॥ हृत्कंठास्यविशोषणंचकुरुतेदाहंमहादारुणंप्रस्वेदंज्वरशूलमुग्रमधिकातृष्णारतीसंभ्रमम् ६ ॥

जो कैथाके फलसमान हो कांखमें हो पीला दस्तउतरे हृदय और गल में गरमीहो मनका न लगना नाक मुखमें शोप प्यास अधिकपसीना ज्वर शूल दाह अधिक स्पर्श न सहाजावे और ये लक्षण वैद्योंने पित्तके गोलाके कहे हैं ४ देहगीला पेट करा शिथिलता आलकस देहभारी वाहर शीतलता भीतर ज्वालासी मालूमहो निद्रा मस्तक में पीडा देहमें खाज आम्रफल के समान गोला खांसी अरुचि पीलिया ये लक्षण सुषेणादि वैद्योंने कफ से पैदागोला के कहेहैं ५ जोगोला जंभीरी नींबूके समानहो पुरूपकेहृदयनाभी के वीचमें पैदा हुआहो स्त्रियोंकी योनि के समीपहो हृदयकण्ठ मुखका सूखना दारुण दाह पसीनाज्वर शूल अतिप्यास अरति ग्लानि ये लक्षण रुधिरसेपैदा हुये गोलाके हैं ६ ॥

(असाध्यगुल्मकेलक्षण) अतीसारहिक्कारतिश्छाद्शूलैःपिपासाकृशत्वार्त्तिहल्लासदाहैः ॥ ज्वरश्वासकासांगशोफैर्युतोयःस गुल्मीनजीवेत्सुषेणादिवैद्यैः ७ (सन्निपातगुल्मकेलक्षण) त्रिदोषसंभवैःसर्वैर्लक्षणैर्लक्षितंहियत् ॥ तद्गुल्मंसन्निपाताख्यंद्विदोषोत्थंद्विदोषजैः ८ (साध्यजाप्यअसाध्यकेलक्षण) एकदोषोद्भवंसाध्यंद्विदोषंजाप्यमुच्यते ॥ असाध्यंयत्त्रिदोषोत्थंगुल्मंसोपद्रवंत्यजेत् ९ ॥

अतीसार हिचकी अरति रद शूल प्यास कृशता खेद सूखी उलटी दाह ज्वर श्वास खांसी देहमें सूजन ये लक्षण युक्त जो गुलमरोगवाला वो सुषेणादिवैद्योंसे अच्छा नहीं हो अर्थात् असाध्यहै ७ जिसमें तीनों दोषोंके चिह्न मिलतेहों उसे सन्निपातका गोलाजानै और जिसमें दो दोषोंके चिह्न मिलतेहों वो द्विदोषज गुलमजाने ८ जो एक दोषसे पैदा हुआहो वो साध्यहै दो दोषयुक्त जाप्यहै त्रिदोषोत्थ असाध्यहै और उपद्रवयुक्तगुल्मी को वैद्य त्यागदे ९ ॥

(गुल्मकेदशउपद्रव) शोफस्तंद्रारुचिश्छर्दिर्हल्लासःकृशतातृषा ॥ शूलंस्वेदोङ्गदाहश्चगुल्मस्योपद्रवादश १० ॥ इति हंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेगुल्मलक्षणम् ॥

१ सूजन २ तन्द्रा ३ अरुचि ४ वमन ५ हल्लास ६ कृशता ७ प्यास

८ शूल ९ पसीना १० दाह ये गुल्मरोग के दश उपद्रवहैं १० इति हंसराजार्थबोधिन्यांगुल्मरोगनिदानम् ॥

(अथहृद्रोगनिदानम्) शस्त्राभिघातात्पवनस्यरोधनादत्युष्ण तिक्ताम्लकषायभोजनात् । अत्युच्चपाताद्वमनादतिश्रमाद्धृदामयःस्याद्गुरुभारधारणात् १ (वादीकेहृद्रोगकालक्षण) हृद्बाधांकुरुतेमरुत्प्रकुपितःसदूषयित्वारसं हृत्स्थोगुंजतिपीडयत्यऽनुदिनंमर्माणिसंतोदते ॥ पार्श्वास्थीनिविदारयन्त्यविरतं शोषंमुखेहृद्गले आध्मानंचमुहुर्मुहुर्वितनुतेश्वासंसकासंज्वरम् २ (पित्तकेहृद्रोगकालक्षण) पित्तःकोपसमन्वितोहृदिगतःसंशोषयित्वारसंहृत्पीडामधिकांनिरन्तरतृषांदाहंशिरःपीडनम् ॥ ऊष्माणंहृदयोदरेनसिमुखेशूलंमहादारुणं मूर्च्छास्वेदविपाकमोहमरतिंजानीहितं हृद्रुजम् ३ ॥

शस्त्रकेलगनेसे पवनके वेगों को रोकनेसे अतिगरम तथा कडुआ खट्टा कसैला भारी ऐसेभोजनसे उच्चस्थानके गिरने से वमनसे अतिश्रमसे भारीबोझ उठानेसे हृदयमें रोगहोताहै १ कुपित वात हृदय में स्थित रसको बिगाडकर हृदय रोगकोकरे तथागूंजे नित्य हृदयमें पीडाहो मर्म स्थानोंमें पीडाहो पसवाडोंकी हड्डिनमें पीडा हो मुखहृदय गलेमें शोप अफरा वारवार मेंहो श्वास खांसी ज्वर ये वात के हृदयरोगके लक्षणहैं २ कुपित हुआ जो पित्त सो हृदयमें प्राप्तहोकर रसको बिगाड हृदयमें पीडा प्यास दाह शिरमें दर्द गरमी हृदय में पेट में नसों में मुख में शूलहो मूर्च्छा पसीना पाक बेहोशी अरति ये लक्षण पित्तके हृद्रोगकेहैं ३ ॥

(कफकेहृद्रोगकालक्षण) श्लेष्मासंकुपितःकरोतिहृदयेपीडांसकण्ठेरुचिं माधुर्यंवदनेऽनलस्यकृशतांतंद्रांगुरुत्वंतनौ ॥ संस्रावंकफसंचयस्यवमनंहृल्लासशूलंज्वरं हृद्रोगोभिषगुत्तमैर्निगदितश्चिह्नैरमीभिर्भृशम् ४ (सन्निपातकेहृद्रोगलक्षण) तद्धृद्रोगंत्रिदोषोत्थंविद्याच्चिह्नैस्त्रिदोषजैः ॥ युक्तंसोपद्रवंवैद्यस्त्यजेन्नूनंविदूरतः ५ (कृमीकेहृद्रोगकालक्षण) शोफश्चेतसिसंभ्रमोनयनयोःकार्ष्ण्यंतमोगौरवं ह्युत्क्लेदोविकृतिस्तृषाभवतितन्निष्ठीवनंमेहनम् ॥

हृल्लासोरुचिरंतरेकृशवपुः शूलंसकंडूव्यथा हृद्रोगेकृमिसंभवोनि गदितंचिह्नंसुषेणादिभिः ६ शोषःक्लमोभ्रमःस्वेदो हृद्रुजःस्युरुप द्रवाः ॥ चत्वारोघोररूपास्ते मुनिभिःपरिकीर्त्तिताः ७ इति श्री भिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेहृद्रोगलक्षणम् ॥

कुपित हुआ जो कफ सो हृदयमें कंठ में पीडाकरै अरुचि मुखमीठा अग्निमन्द तन्द्रा देहभारी कफका गिरना वमन हृल्लास शूल ज्वर ये लक्षणों से कफका हृदय रोग कहाहै ४ त्रिदोषयुक्त चिह्नोंसे सन्निपातका हृद्रोग जाने और उपद्रवयुक्त हो उसे वैद्य असाध्य जानकर त्यागदे ५ सूजन चित्त में भ्रम नेत्रकाले अँधेरा आवे देहभारी उकलाहट देहकी विकृति प्यास वारवारथूकना मेहन हृल्लास अरुचि देहकृश शूल खुजली व्यथा इन लक्षणोंसे सुषेणादि वैद्योंने कृमीका हृदय रोग कहा है ६ । १ शोक २ ग्लानि ३ भ्रम ४ पसीना ये चार हृदयके घोर उपद्रव मुनी-श्वरोंने कहे हैं ७ इति हंसराजार्थबोधिन्यां हृद्रोगनिदानम् ॥

(अथ मूत्रकृच्छ्रलक्षणम्) अनूपमांसाशनमद्यसेवनैः कषाय तीक्ष्णोष्णविदाहिभोजनैः ॥ व्यायामघर्माध्यशनाध्वजागरैःस्या न्मूत्रकृच्छ्रंवहुकष्टदंनृणाम् १ प्रपीडयत्यधोगत्वा मार्गंरुध्वाक फादयः ॥ मूत्रंमुहुर्मुहुःस्वल्पंसकृच्छ्रंकारयंतिते २ (वातकेमूत्रकृ च्छ्रकालक्षण) मुहुर्मुहुःकृष्टतरेणतुच्छंमूत्रंभवेत्पीतनिभंसशूल म् ॥ मेढ्रेचवस्तौमहतीप्रपीडा तन्मूत्रकृच्छ्रंपवनात्प्रसूतम् ३ ॥

अनूप मांसके खानेसे मद्य पीनेसे कसैली तीखी गरम दाहकरनेवाली ऐसी वस्तुके खानेसे दंड कसरतके करनेसे घाम अध्यशन अर्थात् भोजन के ऊपर भोजनसे रास्ताके चलने से रातमें जागनेसे मनुष्योंके वहुत कष्ट का देनेवाला आठ प्रकारका मूत्रकृच्छ्र रोग होताहै १ कफादिक दोष नीचेजायकर मूत्रके मार्गको रोककर और पीडाकरैं तव मनुष्यके कठिन से वारवार थोडाथोडा पेशाव उतरै उसे मूत्रकृच्छ्र रोग कहते हैं २ जो म-नुष्य वारवारमें थोडाथोडा मूतै पीला शूलयुक्त अंडकोश तथा मूत्रस्थान में पीडाहो उसे वातका मूत्रकृच्छ्र कहते हैं ३ ॥

(पित्तकेमूत्रकृच्छ्रकालक्षण) मूत्रंभवेद्दाहयुतंमुहुर्मुहुः पीतारु

णाभंरुधिरेणसंप्लुतम्॥ततंसकष्टंगुदमेढ्रयोर्व्यथा तन्मूत्रकृच्छ्रं पित्तजंवदेत् ४ (कफकेमूत्रकृच्छ्रकालक्षण) मूत्रंसिताभंपरिबुद्बुदान्वितं सपिच्छिलंमेदुरमार्त्तिदंगुदे ॥ लिंगेचयोनौबहुशोफगौरवं तन्मूत्रकृच्छ्रङ्कफसंभवंत्यजेत् ५ (कष्टसाध्यअसाध्यलक्षण) द्विदोषोद्भवंमूत्रकृच्छ्रंसदाहं भवेत्कष्टसाध्यंप्रयत्नौषधीभिः॥ त्रिदोषोत्थितंदारुणंप्राणनाशं निरुक्तंमुनींद्रैरसाध्यंनितांतम् ६ ॥

जिसरोगीका पेशाब दाहकेसाथ उतरै बारबार और पीलाहो लाल हो रुधिर मिलाहो तप्त और कष्टसे उतरै गुदा और अण्डकोश में दर्दहो उसे पित्तका मूत्रकृच्छ्र कहतेहैं ४ जिसका मूत्र सफेद और बबूले संयुक्त गाढ़ा और चिकनाहो गुदामेंदर्दहो लिंग और योनि में सूजनहो देहभारी ये लक्षण कफके मूत्रकृच्छ्रकेहैं ५ दो दोषसेहुआ जो मूत्रकृच्छ्रदाहयुक्त सो मंत्र औषधीनसे कष्टसाध्य कहाहै और त्रिदोषसेहुआ सो प्राणकानाशक मुनीश्वरों ने असाध्य कहाहै ६ ॥

मूत्रकृच्छ्रम्भवेद्घातात्संरोधान्मूत्रशुक्रयोः ॥ शल्यात्पातात्क्षतात्कष्टाद्दस्तिमेहनशूलकृत् ७ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेमूत्रकृच्छ्रलक्षणंसमाप्तम् ॥

मूत्र और वीर्यके रोकनेसे घात शल्यसे पड़नेसे घावसे कष्टसे मूत्रस्थान मेहनमें दर्दका करनेवाला मूत्रकृच्छ्ररोग पैदा होताहै ७ इति हंसराजार्थबोधिन्यांमूत्रकृच्छ्रनिदानम् ॥

(मूत्राघातकीउत्पत्ति) नाभेरधोधःप्रगतास्त्रिदोषा भवन्ति तेकुण्डलिकासमानाः ॥ स्वहेतुभिःसंकुपिताभ्रमन्ति कुर्वन्तिपश्चाद्बहुमूत्रघातान् १ नाभेरधोयदावायुःकुण्डलाकारसंस्थितः॥ आध्मापयन्गुदांवस्तिम्मूत्राघातोभवेत्तदा २ मूत्रस्यवेगंविदधातितीव्रमपानवायुःकुपितस्तुतेन ॥ नाभेरधोर्ध्वंमहतींप्रपीडां करोतियस्तस्यनरस्यनूनम् ३ ॥

दोषनाभीके नीचेजाय कुंडली के समान होकर और अपने हेतून से कुपितहो भ्रमणकरै पश्चात् मूत्राघात रोग को प्रगट करतेहैं १ जबपवन

नाभीकेनीचे कुंडलाकारहो गुदा मूत्रस्थानमें भरजावै तब मनुष्य के मूत्राघात रोगहोताहै २ जो पुरुष मूत्रके वेगको रोकै तब उसके अपान वायु कुपितहो नाभीके ऊपरनीचे भारी पीडाकरै उसे मूत्रकृच्छ्र कहतेहैं ३ ॥

(वातकेमूत्रकृच्छ्रकालक्षण) वातोधःप्रगतारुणद्धिपुरुतोमूत्रंपुरीषान्वितं मेढ्रेवस्तिगुदेदधातिमहतींपीडांचशोफान्विताम्॥ आध्मानंकुरुतेमुहुर्मुहुरलंमूत्रंसकृत्कष्टदम् ॥ कृष्णाभंपवनोद्भवं निगदितंतन्मूत्रघातंपरैः ४ (पित्तकेमूत्राघातकेलक्षण) मेढ्रेवस्तिगुदाग्रेदहतिबहुतरं मूत्रमार्गंरुणद्धिस्वल्पंस्वल्पंसकृच्छ्रम्बहुरुधिरयुतंकारयत्येवमूत्रम् ॥ धत्तेधोगत्यकोपंवितरतिवलया कारूपंचपित्तं तस्यैत्यंमूत्रघातंनिगदितमृषिभिर्मानसैःसद्भिषग्भिः ५ (कफकेमूत्राघातकालक्षण) श्लेष्माधोगत्यशोफंवितरतिगुरुतांमूत्रमार्गंरुणद्धि मेढ्रेवस्तौगुदाग्रेप्रवहतिसरुजंकारयत्येवमूत्रम् ॥ तुच्छंतुच्छंसकष्टंक्वचिदपिबहुशोमेदुरंश्वेतवर्णं सांद्रंशीतंसफेनंकथितमृषिवरैर्मूत्रघातंकफस्य ६ ॥

वातनीचे जायकर दस्त पेशाब को रोक अंडकोश और मूत्रस्थान में सूजनकेसाथ में भारीपीडा करै अफरा और वारवार कष्टसे थोडापेशाब कालेरंगका उतरे उसे वातका मूत्राघात कहतेहैं ४ कुपितहुआ जो पित्त सो नीचेजायकर कंकणके आकारहो अंडकोश और मूत्रस्थानमें तथा गुदाग्रमें पीडाकरै मूत्रके मार्ग को रोकदे थोडाथोडा कठिनतासे वहुत रुधिरमिला मूतै उसे ऋषि और वैद्योंने पित्तका मूत्राघात रोग कहाहै ५ कफनीचे प्राप्तहो सूजन को करै देहभारी मूत्रके मार्गोंको रोकदे मेढ्रवस्ति गुदा इनमेंपीडा करै थोडा २ कठिनता से कभी वहुतसा चिकना सफेदरङ्ग का गाढा शीतल झागमिला ऐसा पेशाब उतरै उसे कफका मूत्राघातरोग ऋषियोंने कहाहै ६ ॥

मूत्राघातंद्विदोषोत्थंत्रिदोषोत्थंभिषग्वरैः ॥ ज्ञायंतेलक्षणैःसर्वैर्वातपित्तकफोद्भवैः ७ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेमूत्राघातलक्षणम् ॥

दो दोषोंके लक्षणोंसे द्विदोषका मूत्राघात रोग जानना त्रिदोषसेसन्नि-

पात का मूत्राघात वैद्यों करके जानना ७ इति हंसराजार्थबोधिन्यांमूत्राघातनिदानम् ॥

(अथाश्मरीरोगनिदानम्) स्त्रियांयोनिरंध्रेशिशूनांचमेढ्रेभवत्यश्मरीमूत्रवेगस्यरोधात् ॥ मरुच्छ्लेष्मपित्तैर्भवाशुक्रजान्यामहादुःखदाप्राणहन्त्रीप्रसिद्धा १ (वातकीअश्मरीकालक्षण) रूक्षावातभवाश्मरीगुरुतराभल्लातमज्जासमा शिष्णंछिद्रगतारुणद्धिपरितो मूत्रंविगन्धान्वितं ॥ पीडांमूत्रपुरीषयोर्वितनुते मेढ्रेगुदेवस्तिषु आध्मानंकुरुतेरुचिंकृशतनुंग्लानिंज्वरंबिभ्रते २ (पित्तकीपथरीकेलक्षण) सूक्ष्मापित्तसमुद्भवामणिनिभा खर्जूरतुल्यारुणा तप्ताकंटकसंयुताथचिपिटाशिष्णेगतायाश्मरी ॥ छिद्रंमूत्रपुरीषयोर्दहतियायोनौरुजंवर्द्धते मूत्रंकृच्छ्रतमंसदाहमनिशं तृष्णाङ्करोतिद्रुतम् ३ ॥

मूत्रके वेग रोकनेसे स्त्रियोंकी योनि में और बालकों के अंडकोशमें पथरीका रोग होताहै १ बादीसे२पित्तसे ३ कफसे ४ शुक्रसे चार तरहकीहै महादुःखकी देनेवाली प्राणकी नाशक प्रसिद्ध१ वातकी पथरी रूखीभारी भिलावेकी मज्जाके समानहो इन्द्रिय में प्राप्तहो इन्द्रियके छिद्रको रोक दे मूत्रमें बासआवे पेशाब और दस्त के समय गुदा मूत्रस्थान और पोतों में दर्द हो अफरा अरुचि कृशदेह ग्लानि ज्वर ये लक्षण वातकी पथरी केहैं, २ छोटीहो मणिके समानहो खजूरके फलके तुल्य लालहो गरमतथा कांटे और चपटी लिंगमेंहो मूत्र दस्तके छिद्रको दहन करे योनि में दर्दहो कठिनतासे दाहयुक्त पेशाब उतरै प्यासहो ये लक्षण पित्तकी पथरीकेहैं ३ ॥

शूलंमेढ्रगुदेभगेप्रलपनंकार्श्यंज्वरंकंपनं ह्यूष्माणंविदधातिवस्तिगुदयोर्मूत्रस्यधारारुणम् ॥ वैक्षिण्यंपरितोरुणद्धिसहसापार्श्वोदरेपीडनं घोरापित्तभवाश्मरीनिगदितावैद्योत्तमैःप्राणहा ४ (कफकीपथरीकालक्षण) स्निग्धास्रमज्जासदृशाकफोद्भवा श्वेताश्मरीकंटकवेष्टितादृढा ॥ शीतातिमध्येगुदशिश्नयोर्भवासंजायतेमूत्रनिरोधताच्छिशोः ५ शैथिल्यंकुरुतेश्मरीकफभवाशिश्नांतरेतोद

नंधैर्यंनाशयतेरुचिंवितनुतेह्यङ्गंमुहुःकंपते ॥ मूत्रंश्वेतनिभंरुण द्धिगुरुतांकायेशिरःपीडनं धत्तेपाण्डुरुजंतनौकृशवपुर्निद्रालसं बिभ्रते ६ ॥

अंडकोश गुदा भग इनमें शूलहो प्रलाप कृशता ज्वर कम्प गुदा और मूत्रस्थान गरमी तथा मूत्रकीधारा लालहो क्षीणता पेशावका रुकना पसवाडोंमें तथा पेटमें दर्द ऐसे लक्षणों से वैद्योंने प्राणकी नाशक पित्तकी पथरी कहीहै ४ चिकनी आमकी गुठली के समान हो सफ़ेद और कांटेयुक्त दृढ़ शीतल तथा गुदा और लिङ्गेन्द्रिय के मध्य हुई हो ये बालकके मूत्र बाधा रोकनेसे पैदा होती है ये लक्षण कफकी पथरी के हैं ५ शिथिलता इन्द्रियमें पीड़ा धैर्यका नाश अरुचि अंगों में कम्प सफ़ेद पेशावहो और रुकरुक कर उतरे देहभारी शिरमें दर्द पाण्डु और कृशता देहमें निद्रा आलस्य ये लक्षण कफकी पथरी के हैं ६ ॥

(वीर्य्यरोधकीपथरीकालक्षण) यूनांवीर्यस्यरोधाद्भवतिच महतीशुक्रजाताश्मरीया शिश्नंबस्तिंगुदांवैरुजयतिवृषणंमूत्र मार्गंरुणद्धि ॥ दौर्बल्यंकुक्षिरोगंवितरतिसहसाशुक्रनाशंकरोति तुच्छंतुच्छंसकष्टंक्वचिदपिबहुशः कारयत्येवमूत्रम् ७ इति श्री भिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेअश्मरीलक्षणम् ॥

जवानपुरुषों के वीर्य के रोकनेसे जो पथरी रोगहो उसके ये लक्षण हैं लिंग मूत्रस्थान गुदामें पीड़ाहो तथा अंडकोशों में दर्दहो मूत्रके मार्ग को रोकदे दुर्बलता कूखमें दर्द शुक्रका नाश कष्टसे कभी थोड़ा कभी बहुत पेशाब उतरे ७ इति हंसराजार्थबोधिन्यामश्मरीलक्षणम् ॥

(अथ प्रमेहलक्षणम्)दधिमधुघृतदुग्धंमद्यपानंनवान्नं फलरस मतिमिष्टंतक्रमिक्षोर्विकारम् ॥ रविकृतपरितापःसुन्दरीस्त्रीकटाक्षै र्भवतिविषमचेतोमेहहेतुर्नितांतम् १ (वातकीप्रमेहकालक्षण) मू त्राग्रेवाथपश्चात्प्रपततिसततं शुक्रमिक्षोरसाभं यामेयामेद्वयेवा क्वचिदपिसमयेपातमाप्नोतिदोषैः॥ निर्गंधंतक्ररूपंलवणजलनिभं दुग्धतुल्यंसुराभम् ॥ रूक्षंवातप्रमेहंप्रवदतिचरकःकृष्णवर्णंच नीलम्२ मेहोवातसमुद्भवःप्रकुरुतेशूलंमहादारुणं हृद्रोगंपिटिका

मुखेमधुरतांश्वासंशरीरंकृशम्॥आध्मानंतनुपीडनंविकलतांशोषं चकासान्वितंचोन्निद्राम्बलनाशनञ्चपलतांरूक्षांत्वचंसाहसम् ३

दही सहत घी दूध मद्यके पीनेसे नवीन अन्न फलरस अतिमीठा छांछ ईखकेविकारसे सूर्यकेघामसे सुन्दरस्त्रीके कटाक्षसे चित्तमें प्रमेहका हेतु होताहै १ पेशाब करनेके पहिले वा पीछे ईखकासारंग ऐसाशुक्र गिरनेसे पहर पहरमें या दोपहरमें दोषोंके होनेसे दुर्गंधयुक्त छांछके समान वा नोन के पानीसरीखा दूधकेसमान मद्यकेसमान रूखाहो ये लक्षण वातकी प्रमेह के चरकऋषिने कहेहैं २ वातका प्रमेह दारुणशूल हृदयरोग मरोड़ी मुखमें मिठास श्वास देहकृश अफरा देहमें पीड़ा बेकली शोष खांसी निद्रा बलका नाश चपलता त्वचामें रुखास साहस ये लक्षण करताहै ३॥

(पित्तकीप्रमेहकालक्षण) घनंपावकाभंहरिद्रानिभंवारुणंर क्ततुल्यंचसिंदूरवर्णम् ॥ प्रमेहंचपित्तोद्भवंवैद्यराजविजानीहिमं जिष्ठकावर्णतुल्यम् ४ कषायश्चमूत्रंकरोतिप्रमेहो रतिंपित्ततःक ष्टसाध्योतिकृच्छ्रम् ॥ ज्वरंवस्तिशूलंकृशांगंपिपासां क्लमंमेढ्रदाहं भ्रमंशोषमंगे ५ (कफकेप्रमेहकालक्षण) घृतदधिवसरूपंदुष्ट दुर्गंधयुक्तंघनमधुमदृशंवापिच्छिलंमेहवर्णम् ॥ सितलवणनिभं वामेदुरंतंतुमिश्रंबुधजनकिलमेहंविद्धिसाध्यंकफात्स्यम् ६ ॥

गाढ़ा अग्निके समान वर्ण तथा पीला वा लाल अथवा जलकेसदृश वा मंजीठका वा सिंदूरके रंगकाला पेशाब उतरे उसे हे वैद्यराज! पित्तका प्रमेहजान ४ कसैले रंगका रुधिरकेरंगका ज्वरके मूत्रस्थानमें पीडा कृश देह प्यास ग्लानि अंडकोशों में दाह भ्रम शरीरमेंशोष अरति ये पित्तकी प्रमेहके लक्षणहैं ये कष्टसाध्यहैं ५ दही घृत चरबीके समान मूते दुर्गन्धयुक्त गाढ़ा सहतके समान तथा सफ़ेद मिश्री और नोनके रङ्गसा और चिकना पेशाब उतरे तन्तुयुक्तहो उसको पंडित कफका प्रमेह कहतेहैं ६ ॥

मेहःश्लेष्मसमुद्भवोबलहरःशुक्रस्यविध्वंसको ह्यालस्यंकुरुतेरु चिर्द्वेषणयोःशोथंतनौपांडुताम्॥शैथिल्यंगुरुतांवमिंनयनयोःशौ क्लंत्वचिस्फोटनंतन्द्रारात्रिदिनेनिशंमलचयंदंतेष्विहस्तेष्वलम् ७

मुखेमधुरतांश्वासंशरीरंकृशम्॥आध्मानंतनुपीडनंविकलतांशोषं चकासान्वितंचोन्निद्रान्बलनाशनञ्चपलतांरूक्षांत्वचंसाहसम् ३

वही सहत घी दूध मद्यके पीनेसे नवीन अन्न फलरस अतिमीठा छांछ ईखकेविकारसे सूर्यकेघामसे सुन्दरस्त्रीके कटाक्षसे चित्तमें प्रमेहका हेतु होताहै १ पेशाब करनेके पहिले वा पीछे ईखकासारंग ऐसाशुक्र गिरनेसे पहर पहरमें या दोपहरमें दोषोंके होनेसे दुर्गंधयुक्त छांछके समान वा नोन के पानीसरीखा दूधकेसमान मद्यकेसमान रूखाहो ये लक्षण वातकी प्रमेह के चरकऋषिने कहेहैं २ वातका प्रमेह दारुणशूल हृदयरोग मरोड़ी मुखमें मिठास श्वास देहकृश अफरा देहमें पीडा वेकली शोष खांसी निद्रा बलका नाश चपलता त्वचामें रुखास साहस ये लक्षण करताहै ३॥

(पित्तकीप्रमेहकालक्षण) घनंपावकाभंहरिद्रानिभंवारुणंरक्ततुल्यंचसिंदूरवर्णम् ॥ प्रमेहंचपित्तोद्भवंवैद्यराजविजानीहिमंजिष्ठकावर्णतुल्यम् ४ कषायञ्चमूत्रंकरोतिप्रमेहो रतिंपित्ततःकष्टसाध्योतिकृच्छ्रम् ॥ ज्वरंवस्तिशूलंकृशांगंपिपासां क्लमंमेढ्रदाहं भ्रमंशोषमंगे ५ (कफकेप्रमेहकालक्षण) घृतदधिवसरूपंदुष्टदुर्गंधयुक्तंघनमधुमदृशंवापिच्छिलंमेहवर्णम् ॥ सितलवणनिभंवामेदुरंतंतुमिश्रंबुधजनकिलमेहंविद्धिसाध्यंकफात्म्यम् ६॥

गाढा अग्निके समान वर्ण तथा पीला वा लाल अथवा जलकेसदृश वा मंजीठका वा सिंदूरके रंगकासा पेशाब उतरे उसे हे वैद्यराज! पित्तका प्रमेहजान ४ कसैले रंगका रुधिरकेरंगका ज्वरके मूत्रस्थानमें पीडा कृश देह प्यास ग्लानि अंडकोशोंमें दाह भ्रम शरीरमेंशोष अरति ये पित्तकी प्रमेहके लक्षणहैं ये कष्टसाध्यहैं ५ दही घृत चरबीके समान मूते दुर्गन्धयुक्त गाढा सहतके समान तथा सफेद मिश्री और नोनके रङ्गसा और चिकना पेशाब उतरे तन्तुयुक्तहो उसको पंडित कफका प्रमेह कहतेहैं ६॥

मेहःश्लेष्मसमुद्भवोबलहरःशुक्रस्यविध्वंसको ह्यालस्यंकुरुतेरुचिर्द्वेषणयोःशोथंतनौपांडुताम्॥शैथिल्यंगुरुतांवमिंनयनयोःशौक्लंत्वचिस्फोटनंतंद्रारात्रिदिनेनिशंमलचयंदंतेंग्रिहस्तेष्वलम् ७

(प्रमेहरहितकेलक्षण) यदाप्रमेहिनोमूत्रंकटुतिक्तमपिच्छिलम्॥ शुद्धरूक्षंशुभ्रधारंतदारोग्यंवदेद्भिषक् ८ (साध्यअसाध्यकष्टसाध्यविचार) मेहःकफोत्थितःसाध्यःसाध्यःकष्टेनपित्तजः॥ वातजोऋषिभिःपूर्वैरसाध्यःपरिकीर्त्तितः ९॥ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेप्रमेहलक्षणम् ॥

कफका प्रमेह बलहरता शुक्रका नाशकरता खासकस अरुचि पोतोंपर सूजन शरीर पीला और शिथिल तथा भारी वमन नेत्र सफेद त्वचाका फटना रात दिन तन्द्राका होना दांत जीभ हाथ पैरोंमें मैलका संग्रह होना ये लक्षण करताहै ७ जिस प्रमेहवालेका पेशाव कडुआ तीखा पतला शुद्ध रूखा सफेद धारका उतरे उसका प्रमेह दूरभया जानिये ८ कफका प्रमेह साध्यहै पित्तका कष्टसाध्यहै वातका प्रमेह पूर्व ऋषियोंने असाध्यकहा है ९ इति हंसराजार्थबोधिन्यांप्रमेहनिदानम् ॥

(अथ पिटिकारोगनिदानम्) तिक्ताम्लोष्णविदाहिरूक्षकटुकक्षारातपाध्याशनैर्मद्यस्निग्धविरुद्धभोजनरसैर्दुष्टैर्नवान्नद्रवैः॥दोषंपित्तमरुत्कफाद्दिदधतेसंदूष्यरक्तामिषं त्वक्संभेद्यबहिर्गताश्चपिटिका रूपेणकुप्यन्तिते १ दुष्टग्रहप्रकोपेनदोषामर्मप्रभेदिनः॥ जनयंतिशरीरेषु पिटिकाबहुधामताः २ ज्वरश्छर्दिरतीसारोरक्तांगोतीव्रवेदना॥ स्वेदस्तृषारुचिःश्वासो वैवर्ण्योविकलोरतिः३॥

तिक्त खट्टा गरम दाहकरनेवाले कटु रूखी खारी घाममें डोलनेसे भोजन पर भोजनकरनेसे मद्य चिकनी विरुद्ध भोजन और पानसे दुष्टनवान्न और पतली वस्तुसे कुपितहुये जो वात पित्त कफ सो रुधिर और मांसको बिगाड़ कर त्वचाको फाडकर फुंसीरूप पिटिकारोग कोप करताहै १ दुष्ट ग्रहके कोपसे तीनोंदोष मर्मस्थानको भेदकर देहमें अनेक प्रकारके पिटिकारोग पैदाकरतेहैं २ ज्वर रद्द अतीसार देह लाल तीव्रदुःख पसीना प्यास अरुचि श्वास विवर्ण वेकली अरति ३ ॥

(पिटिकाकापूर्वरूप)अस्थिरस्फोटोद्भदाहश्चशोपःकंडूवरुचिर्भ्रमः॥पिटिकानांपूर्वरूपंमुनिभिःपरिकीर्त्तितम् ४ (वातकीपिटिकाकेलक्षण) कृष्णाशावकसंनिभाश्चपिटिकावातोद्भवास्त्वग्गताः

सूक्ष्मामुद्गसमामसूरसदृशाःसप्ताह्निपाकारुजाः॥ सूक्ष्माभाश्चि पिटाघनाश्चपरितः कुर्वंतिपीडाभयं दाहानाहतृषाक्षवार्तिवमथुः श्वासातितापाकराः ५ (पित्तकीपिटिकाकालक्षण) अस्थिस्फोटः पर्वभेदोङ्गदाहःश्वासःशोषोविड्ग्रहोमूत्रकृच्छ्रः॥ रौद्रास्स्फोटा रक्तजारक्तवर्णा वैद्यैरुक्तंपित्तकोपस्यचिह्नम् ६॥

हड़फूटन देहमें दाह शोष खुजली अरुचि भ्रम ये मुनीश्वरोंने पिटिका रोगका पूर्वरूप कहाहै ४ काली अग्निके रङ्गकी त्वचामें फुंसीहों छोटी और मूंगके समान तथा मसूरके समान सात दिनमेंपकें कमदीखे चपटी और कठोरहों और पीडाभयको देनेवाली दाह आनाह प्यास छींक मथवाय श्वास अत्यंत तापकी करनेवाली वातकी पिटिका जाने ५ हड़फूटन गांठोंमें दर्द अंगों में दाह श्वास शोष दस्तका रुकना मूत्रकृच्छ्र रौद्र फोड़े रक्तसे पैदा लालरंगके हों तो वैद्य पित्तकी पिटिका जाने ६॥

॥ (कफकीपिटिकाकेलक्षण) पिटिकाःकफकोपभवाःकठिनाः स्फटिकद्युतयोबहुधाकृतयः॥ चिरपाकरुजास्तनुशोफकराबद रीफलपक्वसमारुचयः ७ श्लेष्माकोपेनकुर्यात्त्वचिपिटकशतंबुद्बु दाकारतुल्यंशोफप्रांतंकठोरं बदरफलसमंमांसत्वग्भेदजातम्॥ निद्रांतन्द्रांपिपासांभ्रममरुचिवमिंकासमंगेपुपीडांश्वासंकंडूप्रसे कंह्यवयवशिथिलंशीर्षरोगंज्वरार्त्तिम् ८ वातपित्तभवानीलामध्ये निम्नाज्वरान्विताः॥भवंतिपिटिकाःक्षुद्राःशोषदाहतृषायुताः९॥

कफकोपकी पिटिका कठिन स्फटिकमणिके समान तरह तरहकी देर में पके देहमें सूजनहो बेर पकेके समान कान्तिहो ७ कफकोपकी पिटिका त्वचामें सैकरों फुंसीको बबूले के आकार उसके चारों ओर सूजन तथा कठिन बेरफलके समान मांस त्वचाको फाड़कर प्रकटहो निद्रा तंद्रा प्यास भ्रम अरुचि वमन खांसी अंगोंमेंपीड़ा श्वास खुजली लारका गिरना शरीर के अवयव शिथिल शिरमेंदर्द ज्वर तथा खेद ये कफकी पिटिकाके लक्षण हैं ८ वात पित्तकी पिटिका नीलेरंगकी बीचमें बैठीसीहो ज्वरहो और क्षुद्रा पिटिका दाह शोष प्यासयुक्त होती है ९॥

स्थूलाःश्वेताःप्रोन्नताटुश्चिकित्स्याः पूयस्रावाःस्फोटकाःकष्टपा

र्णाःपाटलाःकष्टदाःस्मृताः ४ किंचित्कष्टप्रदाःपीताःपिशंगाःपिंग लास्तथा ॥ स्वच्छाःस्फटिकसंकाशाःस्निग्धाःसुखकराःस्मृताः ५ मर्मस्थलेषुमांसेषुजायंतेसंधिषून्नताः ॥ पिटिकाःश्वेतरक्ताभाम ध्यगर्त्ताःसराविकाः ६ ॥

धूसरे रंगकी नीलेरंगकी मलिन भीतर सफेदहो वो मृत्युकी देनेवाली पिटिका जाननी और लाल वा गुलावीरंगकी कष्टदेनेवाली होतीहै ४ पीले रंगकी पिशंगरंगकी पिटिका कुछ कष्टदेतीहै स्वच्छस्फटिक मणिके रंगकी चिकनी सुखकरनेवाली होतीहै ५ मर्म में और मांसमें तथा संधीनमें उठीहुई सफेद लाल रङ्गकी बीचमें गढहाहो उसको सराविका कहते हैं ६ ॥

कूर्मरूपामहापुष्टा वर्त्तुलाज्वरदाहदाः ॥ जायंतेपिटिकाःसर्वाः कच्छप्यस्ताउदाहृताः ७ तीव्रदाहप्रदामांसे सक्लेदावर्द्धतेरुजम्॥ जालवद्दृष्टयत्यंतं प्रोक्तासाजालिनीबुधैः ८ मसूरदेहवत्सूक्ष्मार क्ताभासामसूरिका ॥ गौरसर्षपभास्निग्धातत्प्रमाणाचसर्षपा ९ ॥

कछुये कासा स्वरूपहो ज्यादा मोटीहो वत्तीकी तरहहो ज्वर जलन ये लक्षण कच्छपिका केहैं ७ तीव्र जलन मांसमेंहो क्लेशयुक्त पीड़ाको बढ़ावे और जालकी तरह चिपटे उसे पंडित जालिनी कहतेहैं ८ मसूरकी दाल की समानछोटी और लाल हो उसे मसूरिका कहतेहैं और सफेद सरसोंके समानहो और चिकनीहो उसे सर्षपिका कहते हैं ९ ॥

पिटिकासुप्रजायंतेपिटिकाघोरदर्शनाः ॥ पुत्रिण्यस्त्वार्तिदानी लाःप्रोक्तावैद्यैर्विशारदैः १० अतिदीर्घासशोफाया परस्परयुता रुणा ॥ विद्रधेर्लक्षणैर्युक्ताप्रोक्ताविद्रधिकाबुधैः ११ विदारकंद वद्दीर्घा कठिनादुःखकारिणी ॥ ज्वरार्तिदाक्षुधाहारी विज्ञेयासा विदारिका १२ ॥

जो फुंसी में दूसरीफुंसी घोरपैदाहो और पीडायुक्तहो और नीलेरंगकी हो उसे पुत्रिणी कहते हैं १० बहुत बडी सूजनयुक्त और परस्पर मिली हुईहो,लालरंगहो और विद्रधिके लक्षण मिलते हों उसे वैद्योंने विद्रधि-का कही है ११ विदारीकंदके समान मोटीहो कडी दुःखकारक ज्वर खेद भूखका नाशकरनेवाली उसको विदारिका कहते हैं १२ ॥

पिंडीवत्पिंडिकाज्ञेयादेहशोफकरीसिता ॥ व्यक्तांजुल्याकृतिर्ज्ञेयावैद्यैःसावितताजुला: १३ पिटिकार्तेर्विनाशायशीतलांपूजयेत्सुधीः ॥ पुष्पैर्धूपाक्षतैर्दीपैर्नैवेद्यैर्मंगलैस्तथा १४ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेमसूरिकापिटिकालक्षणम् ॥

जो पिंडीके आकारहो उसे पिंडिका जाननी वो देहमें सूजनको करती है व्यक्तांजुलीके जो आकारमेंहो उसे वैद्य वितताजुली कहते हैं १३ पिटिका और शीतला एकही है इसीवास्ते पिटिकाके दुःखके नाशनार्थ शीतलाका पूजन धूप दीप चावल पुष्प नैवेद्य और मंगलाचरण के साथ करे १४ इति हंसराजार्थबोधिन्यांपिटिकामसूरिकारोगनिदानंसमाप्तम् ॥

अथ मेदरोगनिदानम् ॥

(मेदोत्पत्तिः) अव्यायामैर्दिवास्वप्नैर्मांसमिष्टान्नभोजनैः ॥ अतिस्निग्धाशनैर्देहेमेदोवृद्धिःप्रजायते १ जठरेमेदसोवृद्धिःकरोतिवलसंक्षयम् ॥ निद्रांदौर्गन्ध्यमंगेष्वशक्तिसर्वेषुकर्मसु २ स्थूलोदरमनुत्साहंगौरवंतनुशीतलम् ॥ जठराग्नेःक्षयंजाडंयंश्वासंकंपनसादनम् ३ ॥

दंड कसरतके न करनेसे दिनमें सोनेसे मांस मिष्टान्न के खानेसे अति चिकनी वस्तुके खानेसे देहमें मेद बढ़ताहै १ पेटमें मेदके बढ़नेसे वल का नाश होताहै और निद्रा तथा दुर्गंध देहमें और सर्वकर्ममें अश्रद्धा २ पेट को बढ़ावे उत्साह रहित तथा देहभारी तथा शीतल जठराग्निका नाश और जड़ता श्वास कंप सादन ये होते हैं ३ ॥

कायंस्थूलतरंमेदसस्वेदंस्वल्पमैथुनम् ॥ धातुक्षयंत्वचंपीतांवहुमूत्रांसितेक्षिणी ४ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेमेदसोवृद्धिलक्षणम् ॥

जिसकी देह मोटी मेदसे और पसीने युक्त मैथुन थोड़ा कराजाय और धातु गिराकरै पीली त्वचा होजाय मूत्र बहुत उतरे सफ़ेद नेत्रहों ये मेदरोगके लक्षण हैं ४ इति हंसराजार्थबोधिन्यांमेदरोगलक्षणम् ॥

(गण्डमालारोगनिदानम्) विस्फोटमालागलकेशशोफमे

दोद्भवातोदयुतातिरक्ता ॥ कर्कन्धुजम्ब्वामलकप्रमाणांतांगण्ड मालांप्रवदन्तिवैद्याः १ (वातकीगण्डमालाकेलक्षण) वातोद्भवायागलगण्डमाला कृष्णारुणाभाकुरुतेतितोदम् ॥ स्तब्धा शिरातालुगलेप्रशोषं भिन्नस्वरंरूक्षतमंशरीरम् २ वैरस्यमास्ये विदधातिकष्टं संस्रावयेद्रक्तनिभंचपूयम् ॥ भिन्नस्वरंकष्टतरेण पाकं करोतिवातात्मकगण्डमाला ३ ॥

फोडे मालाकी तरह सूजनयुक्त गलेमेंहो और लालहो तथा बेर जामुन आमलेके प्रमाणहो मेदसे पैदाहुआहो उसे वैद्य गंडमालारोग कहतेहैं १ वातकी गंडमालाके ये लक्षणहैं काली लालहो अतिपीडाकरे नाडिनको स्तंभन करदे तालू गलेमें शोषहो बुरास्वर शरीररूखा २ मुखमें स्वाद न रहै कष्टको बढ़ावे तथा रादरुधिरबहै बुरास्वर होजाय कष्ट से पके येभी वातकी गंडमाला के लक्षणहैं ३ ॥

(पित्तकीगण्डमालाकालक्षण) ज्वरंशोफशूलंकरोत्युग्रदाहं कटुत्वंमुखेकण्ठताल्वोष्ठशोषम् ॥ महत्पित्तकोपोद्भवारक्तवर्णा गलेमुष्कपंक्त्याकृतिर्गण्डमाला ४ (कफकीगंडमालाकालक्षण) जम्बूकर्कन्धुपूगीफलकलितरुभापक्वनारंगपिंगा काठिन्याग्रन्थि पंक्तिर्वितरतिपरतः कंठदेशेषुशोफम् ॥ कंडूपीडांविधत्तेप्रतिदिनमरुचिंगौरवाङ्गंचकासं पूयंरक्तंसगन्धंस्रवतिभवतिसाश्लेष्मजागण्डमाला ५ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेगण्डमालालक्षणंसमाप्तम् ॥

ज्वर सूजन शूल दाह मुख कडुआ कंठ तालू ओठ इनका सूखना लाल वर्ण गलेमें अंडकोश की पंक्तिके आकारहो उसे पित्तकी गंडमाला कहते हैं ४ जामुन कर्कंधु सुपारी पहेडा पके नारङ्गीके समान पीलीहो कठिन गांठकी पंक्तिभीहो और कंठमें सूजनहो खुजली पीडाको बढ़ावै अरुचि देहभारी खांसी रादरुधिर बासके साथ निकले उसे कफकी गंडमाला कहते हैं ५ इति हंसराजार्थबोधिन्यांगंडमालारोगनिदानम् ॥

(अथ श्लीहपदरोगनिदानम्) शोफोनृणांपादगतोतिरौद्रो

वल्मीकतुल्योंतरमांसवर्ती ॥ मेदाश्रयःकंटकवेष्टितांगो वैद्योत्त मैःश्लीहपदोनिरुक्तः १ (वातकीश्लीहपदकालक्षण) निमित्तशून्यंनहुशोफपादं कृष्णंचरूक्षंस्फुटतीव्रतोदनम् ॥ वातोद्भवंश्लीहपदंज्वरार्त्तिनिरूपितंवैद्यवरैर्नितांतम् २ (पित्तकीश्लीहपदकालक्षण) शोफाधिकंरक्तज्वरार्त्तिदाहं संस्रावयुक्तंबहुरक्तवर्णम् ॥ पित्तात्मकंश्लीहपदंगुरुत्वं ज्ञेयंभिषग्भिःकिलकष्टमाध्यम् ३ ॥

मनुष्योंके पैरमें सूजनहो और क्रमसे बढके सर्पकी बांबीके समान लम्बी पेंडू जंघा मांसमें प्राप्तहो और मेदके आश्रयहो कांटेयुक्त देहहो उसे वैद्य श्लीहपदरोग कहते हैं १ विनाकारण बहुत सूजनहो काले रूखे फटे तीव्रवेदनायुक्त ज्वरखेदहो उसे वैद्य वातका श्लीहपदरोग कहते हैं २ जिसमें सूजन ज्यादा हो लालरंगहो ज्वर खेद दाह रुधिर गिरे भारी हो वो वैद्यों ने कष्टसाध्य पित्तका श्लीहपद कहाहै ३ ॥

(कफकेश्लीहपदकालक्षण) स्निग्धंश्लीहपदंगुरुत्वमनिशं शोफाधिकंसज्वरं श्वेताभंबहुकंटकैः परिवृतंवल्मीकतुल्यंदृढम् ॥ मेदोमांसपराश्रयंचरणगंस्थूलंचशीतान्वितम् भोभोवैद्यविशारदाःकफभवंजानीततत्पाण्डुरम् ४ ॥ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेश्लीहपदलक्षणम् ॥

चिकना भारी सूजन विशेष ज्वर सफेदरंग बहुत कांटेयुक्त बांबी के तुल्यहो और दृढहो मेदमांसके आश्रयहो पैरों में हो मोटी और शीतल हो उसे हे वैद्यो! तुमलोग कफका श्लीहपदरोग जानो ४ इति हंसराजार्थबोधिन्यांश्लीहपदरोगनिदानम् ॥

(अथ विद्रधिरोगनिदानम्) त्वग्रक्तामिषमेदांसिदूष्यदोषास्थिगाःपुनः ॥ नाभेरधोमहच्छोफंज्वरंकुर्वंतितेशनैः १ सविद्रधीरुक् परितोविचार्य्यप्रोक्तोभिषग्भिःकिलशास्त्रपारगैः ॥ महार्तिकृद्दाहविवर्द्धनोसौशोफान्वितोहृज्जठरेचशूलम् २ विद्रधिःषड्विधःप्रोक्तोमुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ दोषैर्व्यस्तैःसमस्तैश्चरक्तजःसप्तमःस्मृतः ३ ॥

वात कफ पित्त त्वचा रुधिर मांस मेदा इनको विगाड़कर हड्डीमें प्राप्त हो नाभीके नीचे नीचे भारी सूजन और ज्वर को पैदा करताहै १ वहुत खेद और दाह और सूजनको बढ़ावे तथा हृदय पेटमें दर्दहो उसे वैद्यों ने विचारकर विद्रधि रोग कहाहै २ विद्रधिरोग छः प्रकारकाहै १ वात २ पित्त ३ कफसे ४ वातपित्तसे ५ वातकफसे ६ पित्तकफसे और सातवा ७ रुधिरसे ३ ॥

(वातविद्रधिकालक्षण) रक्तश्यामोतिविषमोवेदनाबहुभिर्युतः ॥ शीर्षपाकोविचित्राभोवातजोविद्रधिःस्मृतः ४ (पित्तकी विद्रधिकेलक्षण) पक्वनिम्बूफलाकारोरक्ताभोज्वरदाहकृत् ॥ शीर्षपाकोमहत्यार्त्तिर्विद्रधिःपित्तजोभवेत् ५ (कफकीविद्रधिकेलक्षण) स्निग्धःशीतश्चिरोत्थोयंचिरपाकोल्पवेदनः ॥ श्लेष्मजोविद्रधिःपांडुःशरावसदृशोभवेत् ६ ॥

लाल और काली तथा विषम वहुतपीड़ायुक्त जल्दीपके और विचित्र स्वरूप हो ये वातकी विद्रधि के लक्षण हैं ४ पकेनिम्बू के समान सूजन हो लालरंग ज्वर दाहके करनेवाली शीर्षपाक हो अत्यन्त पीड़ायुक्त ये पित्तकी विद्रधि के लक्षण हैं ५ चिकनी शीतल वहुत दिनकी उठी और वहुत काल में पके मंदपीड़ा हो पीलेरंगकी शराव के समान हो ये कफ की विद्रधि के लक्षण हैं ६ ॥

(सन्निपातकीविद्रधिकेलक्षण) नानावर्णोदाहशूलोज्वरार्तिःकोष्ठोत्थानंकष्टपाकोतिरौद्रः ॥ आधिस्रावोवस्तिहृत्कुक्षिशोथोवैद्यैःप्रोक्तोविद्रधिःसन्निपातः ७ (रुधिरकीविद्रधिकेलक्षण) दीर्घोष्णापरिपक्वचूतसदृशोविस्फोटकोमांमलः कृष्णाभोवहुदाहकृज्ज्वरकरस्तृष्णान्वितःक्षुद्रः ॥ कुक्षौवस्तिगुदोदरेपुहृदयेपीडाकरोहर्निशंप्रोक्तोरक्तभवोभिषग्वरगणैःपित्तात्मकोविद्रधिः ८ विद्रधिरक्तजंविद्यात्कुक्षौलग्नमचञ्चलम् ॥ मांसशोणितयोर्ग्रंथिवस्तिहन्नाभिसंभवम् ९ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृते वैद्यशास्त्रेविद्रधिलक्षणम् ॥

विचित्र रंग हो दाह शूल ज्वर पीड़ा कोष्ठमें पैदाहुई कष्टसे पके अति

रोग्र आधिलाव मूत्रस्थान हृदय कूख इनस्थानोंमें सूजन हो इसे वैद्यों ने संनिपात का विद्रधिरोग कहाहै ७ दीर्घ गरम पक्के आमके समान फोड़ा हो तथा मोटा हो कालेरंग के समान बहुत दाह ज्वर भूखका नाशकरै प्यास बढ़ावै कूख मूत्रस्थान गुदा पेट हृदय इनमें रात दिन पीड़ाकरै ऐसी विद्रधि को वैद्यगणोंने पित्तात्मक रुधिरकी कही है ८ और नाभी मूत्रस्थान हृदय में मांसकी गांठ हो उसे रुधिरकी विद्रधि कहते हैं तथा कांखमें स्थिर जो हो ९ इति हंसराजार्थबोधिन्यांविद्रधिरोगनिदानम् ॥

(अथोपदंशलक्षणम्) हस्तस्यघातात्करजस्यपातादंतस्य दंशात्तृणकाष्ठलग्नात् ॥ दुष्टस्त्रियोयोनिविकारसेवनात्पञ्चोपदंशाःप्रभवन्तिशिश्ने १ (वात केउपदंश केलक्षण) वातोपदंशीबहुवेदनान्वितोविस्फोटसूक्ष्मैःस्फुरणैस्तुकृष्णभैः ॥ युक्तःसंतोदैःकिलजायतेनृणांशिश्नस्यबाह्यापरितोन्तरेनिशम् २ (पित्तकेउपदंशकेलक्षण) पित्तोपदंशंतमवेहिनूनंतीव्रातिदाहंपिशितावभासम्॥विशीर्णमांसंपिटिकाभिपिक्तंशिश्नांतरेगर्तमतीवरौद्रम् ३ ॥

हाथकी चोटसे तथा नखके लगनेसे किसी तरह से दांतके लगने से तिनका लकड़ीके लगने से गरमीवाली औरत के संगकरनेसे लिंगमेंपांच प्रकार का उपदंशरोग पैदा होताहै १ वातका उपदंशवाला पुरुष बहुत वेदनायुक्त हो प्रकाशमान छोटी छोटी मरोड़ी हों कालेरंग की पीड़ा युक्त लिंगके बाहर भीतर मनुष्यों के होती हैं २ उसे पित्त का उपदंश जानो जिसमें ये लक्षणहों तीव्रपीड़ा दाह मांस के रंगसरीखा तथा बिखरा हुआ मांसहो पिटिकायुक्त लिंग के भीतरी भारी गढ़ाहो ३ ॥

(कफकेउपदंशकालक्षण) वैद्योपदंशंकफसंभवंहितंजानीहि कंडूपिटिकाभिराश्रितम् ॥ शोफाधिकंपांडुरवर्णशीतलंस्निग्धंगरिष्ठंपिशितांकुरान्वितम् ४ (सन्निपातकेउपदंशकालक्षण) आमुष्कशोफंकृमिजंतुजग्धंविशीर्णमांसंबहुगर्तशोफम् ॥ त्रिदोषजंविद्ध्युपदंशमेतमसाध्यमार्तिज्वरशूलदाहम् ५ जातमात्रेमहारोगेचिकित्सांनैवकारयेत्॥बद्धमूलेनरोगेणरोगीयातियमालयम्द

हे वैद्य! उसे तू कफका उपदंश जानो कि जिसमें खुजलीहो पिटिकाहों अधिक सूजनहो पीलारंगहो शीतल और चिकना भारी मांसांकुरयुक्तहो ४ लिंगसे अंडकोशों पर्यंत सूजनहो कृमि पड़गये हों मांस बिखर गयाहो बड़ा गड्ढाहो सूजनहो ज्वर शूल दाहयुक्त ऐसे लक्षणोंसे असाध्य त्रिदोषका उपदंश जानना ५ जो मनुष्य उपदंशरोगके पैदा होतेही औषध नहीं करे और रोग बद्धमूल होजाय तो वह रोगी यमराजके घरजाताहै ६ ॥

महाक्षतोभवेद्यस्यशिश्नेस्फोटानिशीर्यते ॥ शिरःपीडाज्वरोदेहे निर्लोमोमुखमण्डले ७ गुह्यदेशेमहाशोफोनेत्रयोर्बहुरक्तता ॥ पतेच्छिश्नःसमुष्काभ्यांसरोगीनैवजीवति ८ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेउपदंशलक्षणम् ॥

जिसके लिंगमें बड़ा घावहो और वह घाव फटजावे तथा शिरमें दर्द और ज्वर मुखपर बाल न रहैं ७ गुह्यइन्द्रियमें महासूजनहो और नेत्र लालहों और जिसका अंडकोशके साथ लिंग गिरपड़े वह रोगी नहीं जीताहै ८ इति हंसराजार्थबोधिन्यामुपदंशरोगनिदानम् ॥

(अथ शूकदोषलक्षणम्) योलिंगवृद्धिंमनुजोभिवाञ्छति शूकोद्भवास्तस्यभवन्तिव्याधयः ॥ अष्टादशास्याःकफवातपित्तजाद्वंद्वोद्भवारक्तभवास्त्रिदोषजाः १ (सर्षपिकाकालक्षण) सर्षपिकासासर्षपरूपालिंगसमीपेदारुणशूका ॥ वातकफाभ्यांसंजनितारुक्स्यात्पिटिकेयंपुंस्त्वहरीति २ (कुम्भिकाकालक्षण) रक्तपित्तोत्थिताकुम्भीपिटिकारक्तपूरिता ॥ शिश्नोपरिगताशूकदोषजातीव्रवेदना ३ ॥

जो मनुष्य लिंगबढ़नेकी इच्छाकरें और मूढ वैद्यके कहनेसे लेप वा पट्टी बांधे उसके अठारह तरहकी वात पित्त कफ ३ दो दोषके २ और त्रिदोषकी १ शूकसेपैदा व्याधियाँहोतीहैं १ सर्षपिका सरसों के समान छोटी फुंसी लिंगपर होतीहै और वात कफसे पैदा तथा पुरुषपनेको दूर करती है २ रक्तपित्त से पैदा कुंभिका फुंसी रुधिरसे पूरित और लिंगपर शूकदोषसे पैदाहुई तीव्र पीड़ायुक्त होती है ३ ॥

(मूढपिटिकाकालक्षण) पाणिभ्यांमृदितंशिश्नंपीडितंवातको

पतः ॥ तरिमन्वातसमुद्भूतामूढपिटिकाभवेत् ४ (दीर्घकापिटिका लक्षण) दीर्यंतेमध्यतोयस्याःपिटिकारोमहर्षदाः ॥ संधिमध्यगताः शुभ्राःकफजादीर्घकाःस्मृताः ५ (पुष्करिकापिटिकाकालक्षण) पित्ताद्भवापुष्करकर्णिकागमारिदूरनर्णानिविडाऽतिदुःखदा ॥ दाहादिपीडांमहतींकरोतियासोक्तापरैःपुष्करिकामुनीन्द्रैः ६ ॥

हाथके मीडनेसे वातके कोपसे पैदाहुई लिग पर फुंसी उसे मूढपिटिका कहते हैं ४ रोमाञ्चकोकरै और बीचमेंसे फटजाय और सन्धीन केबीचमें सफेद रंगकीहो वो कफसे पैदाहुई दीर्घकानाम पिटिका जाननी ५ पित्तसे पैदा कमलकी कर्णिकाके समानहो तथा लाल रंगहो चिपटी अतिदुःखदेनेहारी दाह पीड़ा बहुतकरै उसे मुनीश्वरोंने पुष्करिका पीडिका कहीहै ६ ॥

स्पर्शनोत्सहतेज्वरंवितनुतेपीडांकरोतिद्रुतं यःशूकंपिटिकाशतंबहुरुजंलिंगेविधत्तेचिरम् ॥ कृष्णारक्तनिभंविपाककठिनंपाकातिकृत्सद्रवं वियात्पित्तमरुद्भवंतमनिशंमुद्गादलाभंरुजम् ७ (कफपित्तकेशूककालक्षण) कफपित्तभवाविविधाकृतयःपिटिकाबहुशोफयुताःकठिनाः ॥ ज्वरदाहविलापरुजोदधतेकृमिशोणितपूयवहाविपमाः ८ (त्रिदोपजनितशूककेलक्षण) मांसपाकंबहुच्छिद्रं लिगभंगंत्रिदोषजः॥कुर्याच्छूकोज्वरंदाहंशोथंचपिटिकान्वितम् ९

स्पर्श न सहाजाय ज्वर पीड़ा और सैकरों फुंसी लिंग के ऊपर काली लाल हों कठिनसे पकैं दुःखकी देनेवाली और चुचावै उसे वात पित्तसे पैदाहुई पीडिका मूंगके पत्तेके समान जाननी ७ कफ पित्तसे पैदा हुआ जो शूकरोग उसके अनेकतरहकी फुंसीकी आकृतिहो और सूजन हो कठिनज्वर के करनेवाली रुदनकरै कृमि और रुधिर तथा रादवहे और विषम हो ८ मांसका पाक तथा बहुत से छिद्र होजावें और लिंग गिरपड़े तथा ज्वर दाह सूजन और अनेक मरोड़ीहों ये सन्निपातके शूक रोगके लक्षणहैं ९ ॥

मांसशोणितयोर्ग्रन्थिमर्बुदन्तंविदुर्बुधाः॥ विद्रधेर्विद्रधिंविद्यात्संनिपातसमुद्भवाम् १० इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेशूकदोपलक्षणम् ॥

मांस और रुधिरकी गांठ उसे पण्डित अर्बुद कहते हैं और विद्रधिके आकार हो उसे सन्निपात से पैदा विद्रधि कहते हैं १० ॥ इति श्रीहंसराजार्थबोधिन्यांशूकरोगनिदानम् ॥

अथ कुष्ठरोगलक्षण ॥

(अथकुष्ठरोगोत्पत्तिः) महापापतःकुष्ठिनोदेहदाहात्तथात्यंत संसर्गतोमांसभक्षात् ॥ भवेत्कुष्ठरोगोगुडक्षीरपानादजीर्णाशना द्रक्तपित्तस्यकोपात् १ विरुद्धान्नपानात्स्त्रियोत्यन्तसंगाद्दिवास्वापतोरौद्रघर्मादितापात् ॥ गुरुस्निग्धरूक्षाशनान्मूत्रबंधाद्भवेद्रौद्रकुष्ठोजलस्यावगाहात् २ मांसचर्मविकारोत्थाः कुष्ठाष्टादशसंज्ञकाः ॥ वातपित्तकफोद्भूता द्वंद्वोत्थाःसन्निपातजाः ३ ॥

ब्रह्महत्या आदि महापापोंके करने से कुष्ठीको दाह देनेसे कोढीकेपास रहने से मांसके खानेसे भारी तथा दुग्ध आदि पदार्थ के सेवन करने से अजीर्ण में खानेसे रक्त पित्तके होनेसे कुष्ठ रोग पैदा होताहै १ तथा विरुद्ध अन्न और जलके सेवन करने से अत्यन्त स्त्रीके संगकरने से दिनमें सोनेसे धूप आदि गरमीके खानेसे भारी चिकना रूखे आदिके खाने से मूत्रबन्ध होनेसे बहुत जलमें रहनेसे घोर कुष्ठरोग पैदा होताहै २ मांस और चर्म के विकारसे पैदा कोढ रोग अठारह प्रकारकाहै वात से पित्तसे कफसे द्वन्द्वज और सन्निपातसे ३ ॥

(उदुम्बरकुष्ठकेलक्षण) यद्रूक्षंपरुषंकपालसदृशंतोदंकपालेधिकं तत्कुष्ठंविषमंवदन्तिसुधियःकृष्णारुणाभंभृशम् ॥ यत्कुष्ठं स्फुटितंह्युदुम्बरसमंरुग्दाहकंडूघ्नं शुष्कंरक्तनिभंपरैर्निगदितं तत्कुष्ठमौदुम्बरम् ४ (मूकजिह्वनामकुष्ठके) वृषजिह्वोपमाजिह्वा रोमहर्षोन्तरव्यथा ॥ जायतेयेनकुष्ठेनमूकजिह्वन्तदुच्यते ५ (मंडलकुष्ठकेलक्षण) श्वेतरक्तनिभंस्निग्धंस्थिरंकृच्छ्रसमुन्नतम् ॥ परस्परसमालग्नंकुष्ठंमण्डलसंज्ञकम् ६ ॥

जो रूखा कठोर खोपडीके समान कपाल में पीडा करे तथा काला लाल उसे संज्ञक कुष्ठ कहतेहैं और जो फटगयाहो गूलरके समान पीडा

दाह खुजली तथा सूखाहुआ रुधिरके समान उसे वैद्य उदुम्बर नाम कुष्ठ कहते हैं ४ बैलकी जीभके समान जीभहो रोमांच तथा भीतर पीड़ा हो उसे मूकजिह्व कुष्ठ कहते हैं ५ सपेद लाल चिकना स्थिर करड़ा ऊंचा और आपसमें मिला हुआ हो उसे मण्डल कुष्ठ कहते हैं ६ ॥

(करवालकुष्ठकेलक्षण) वर्द्धतेहर्निशंस्थूलंकृष्णकंडूभिरावृतम्॥ रूक्षंबहुतरंकुष्ठकरवालंतदुच्यते ७ (किणिकुष्ठकालक्षण) तत्कुष्ठंकिणिसंज्ञंस्यात्किणंशोथसमन्वितम् ॥ श्यामवर्णंखरस्पर्शं परुषंबहुवेदनम् ८ (दादनामकोढ़केलक्षण) कृष्णाभंमंडलाकारं कंडुभिर्बहुभिर्युतम्॥ अतापेदुष्करंरूक्षं तत्कुष्ठंदद्रुसंज्ञकम् ९ ॥

जो नित्य बढ़ता जावे और मोटाहो काला और खुजली युक्त रूखा और बहुतहो उसे करवाल कुष्ठ कहते हैं ७ वो कोढ़ किणिसंज्ञकहै कि जिसमें डंक सूजनके साथ हो कालावर्ण खरदरा स्पर्श कठोर बहुत खेद युक्त हो ८ काला गोल चकत्ते खुजली होती हो गरमी में दुःख बहुतहो रूखा उसको दादनाम कोढ़ कहते हैं ९॥

(चर्मदलकोढ़केलक्षण) कंडुमद्रक्तवर्णंच विस्फोटकसमन्वितम्॥ सार्द्रस्पर्शासहंशूलंकुष्ठंचर्मदलंभवेत् १० (गजचर्मकोढ़केलक्षण) गजचर्मसमाकारंस्थूलंबहुतरंदृढम् ॥ कंडूमच्छ्यामवर्णंयत्कुष्ठंतच्चर्मसंज्ञकम् ११ (पामाकुष्ठकेलक्षण) स्फोटाभिर्बहुभिर्युक्ता सूक्ष्माभिःपाटलादिभिः ॥ कंडूदाहार्तिभिर्युक्तापामासा कीर्त्तिताबुधैः १२ ॥

लक्षण) श्यामारुणंखरस्पर्शं रूक्षंवेदनयान्वितम् ॥ विवर्णंवात जंकुष्ठंकथितंतद्भिषग्वरैः १४ (पित्तकेकुष्ठकेलक्षण) श्यामारु णनिभंस्रावंकंडुरोगार्तिदाहदम् ॥ तीक्ष्णपित्तोद्भवंकुष्ठं कीर्त्तितं वैद्यसत्तमैः १५ ॥

और पामा बहुत बढ़े तो उसेही विचर्चिका कहते हैं और जिसकापुष्प के वर्णके समान रंगहो उसे चित्रकुष्ठ कहते हैं १३ जिसका काला लाल और खरदरा स्पर्श हो रूखा तथा पीडायुक्त विवर्ण उसे वात का कुष्ठ कहते हैं १४ जिसका काला लालरंगहो और बहै तथा खुजली दाह पीडा हो उसे तीखा पित्तका कुष्ठ वैद्यों ने कहाहै १५ ॥

(कफकेकुष्ठकेलक्षण) कुष्ठंकफोद्भवंविद्यात्स्निग्धंकंडुयुतंघन म् ॥ गौरवंशीतलंक्लेदिशोथस्रावसमन्वितम् १६ चिह्नैर्द्विदोष जैर्युक्तं द्विदोषोत्थंविदुर्बुधाः ॥ त्रिभिर्दोषैर्विमिश्रंयत्कुष्ठंकष्टतरं भवेत् १७ (त्वचामेंस्थितकुष्ठकेलक्षण) बहूपद्रवसंयुक्तमसाध्यं तत्प्रकीर्त्तितम् ॥ त्वक्स्थेकुष्ठेशरीरेषुवैवर्ण्यंरूक्षताभवेत् १८ ॥

जो चिकना और खुजली युक्त घनभारी शीतल क्लेदी सूजन युक्त तथा बहै उसे कफका कुष्ठ कहते हैं १६ जिसमें द्विदोष के लक्षण मिलते हों उसे पण्डित द्विदोष का कुष्ठ कहते हैं और त्रिदोषके लक्षण मिले हों उसे कष्टतर जान वैद्य को त्यागदेना चाहिये १७ और जो बहुत उपद्रवों से युक्तहो उसे वैद्यों ने असाध्य कहाहै त्वचामें स्थित कुष्ठ शरीरको विवर्ण कर रूखा कर देताहै १८ ॥

(रक्तगतकुष्ठकेलक्षण) कुष्ठेरक्तगतेनेत्रेक्लमोहर्षोरुचिर्भवेत्॥ प्र स्वेदःकंठशोषश्च विसर्पोरक्तमंडलम् १९ (मांसगतकुष्ठकेलक्ष ण) हस्तांघ्रिषुनृणांशोफं विस्फोटंतोदगौरवम् ॥ कुष्ठेमांसगते तस्यविरेकोवमनंभवेत् २० (मेदगतकुष्ठकेलक्षण) गात्रभग्नांग दुर्गंधंक्षतेपूयंचजंतवः॥गतिक्षयोग्निमंदत्वंकुष्ठेमेदगतेभवेत्२१

नेत्रोंमें क्लम तथा हर्षका नाश अरुचि पसीना कण्ठ का सूखना और विसर्प रुधिरके मण्डल ये रक्तगत कुष्ठके लक्षणहैं १९ हाथ पैरोंमें सूजन

तथा फोड़ा पीड़ा शरीर भारी रद्द दस्त ये मांसगत कुष्ठके लक्षण हैं २० शरीरका टूटना देहमें दुर्गन्ध व्रण पीब कृमिहों गतिका नाश मन्दाग्नि ये मेदगत कुष्ठके लक्षणहैं २१ ॥

(अस्थिमज्जागतकुष्ठकेलक्षण) नासाभंगोक्षिणीरक्तेक्षतेषुक्रमिसंभवः॥ स्वरघातोव्रणेदाहः कुष्ठेमज्जास्थिसंस्थिते २२ दंपत्योःकुष्ठिनोर्वीर्यशोणिताभ्यांचसंभवः॥ यदपत्यविकाराभ्यां ज्ञेयं तदपिकुष्ठितम् २३ (कुष्ठकेसाध्यलक्षण) त्वग्रक्तमांसगंकुष्ठंसाध्यं यंत्रौषधादिभिः॥मेदोजंचद्विदोषोत्थंदानस्नानजपादिभिः २४॥

नाकका भंग नेत्र लाल घावों में कीडा पड़जायँ मन्दस्वर व्रणों में दाह ये हड्डी और मज्जागत कुष्ठके लक्षण हैं २२ माता और पिता के कोढ़ी होनेसे उन्होंकेवीर्य्य और रजसे पैदा जो सन्तान वोभी कोढ़ी होतीहैं २३ त्वचा रुधिर मासमे जो स्थित कुष्ठसो यंत्र मंत्र व औषधियों से साध्य होता है और जो मेदा व मज्जा में प्राप्तहो और जो द्विदोषसे उठाहो वो स्नान दान जपादिकों से शांति होजाताहै २४ ॥

(कुष्ठकेअसाध्यलक्षण) नरंकुष्ठिनंहंतिकुष्ठंप्रवृद्धं त्रिदोषोद्भवंसंधिमज्जास्थिसंस्थम्॥ प्रभिन्नस्वरंश्वासवाहंसदाहं कृमीणां क्षतेसृक्स्रवंरक्तनेत्रम् २५ अंगानियेनशीर्यंतेक्षतेषुकृमिसम्भवः॥ भ्रूनासाक्षिस्वराभग्नाः कुष्ठंतंपरितस्त्यजेत् २६॥ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेकुष्ठलक्षणम् ॥

संधि मज्जा अस्थिगत त्रिदोषसे पैदाहुआ जो कुष्ठ और बढ़ाहुआ वो कोढ़ी मनुष्यको मारडाले तथा भ्रष्टस्वर श्वासवान् दाह और कृमियुक्त घाव रुधिरवहै लालनेत्र २५ जिससे अङ्ग फटजायँ और घावों में कृमिपड़ जायँ तथा भ्रुकुटी नाक नेत्र जातेरहैं स्वर बैठजाय उस कोढ़ी को वैद्य त्यागदे २६ इति हंसराजार्थबोधिन्यांकुष्ठरोगनिदानम् ॥

(शीतपित्तोदर्दलक्षणम्)शीतवातस्यसंस्पर्शाद्वातपित्तकफाश्रयः॥ त्वग्रक्तमांसंसंदूष्यविसर्पंतोंतरेबहिः १ (उदर्दकेलक्षण) वरटीदष्टवच्छोथोजायतेत्वचिसर्वतः ॥ दाहकंडूशिरस्तोद स्य

दुदर्दस्यलक्षणम् २ मंडलानिविचित्राणि रागवंतिबहूनिच ॥ सकंडूनिसतोदानिस्थूलानिपरितस्त्वचि ३ ॥

शीतल पवनके स्पर्शसे वात कफ पित्त तीनों रुधिर मांस त्वचा बिगाड़ कर भीतर और बाहर शीत पित्तरोगको पैदाकरैंहैं १ जैसे बरटी मोहार कीमक्खीके काटने से सूजन होतीहै इसीतरह सब त्वचामेंहो और दाह खुजली शिरमें दर्द हो उसे शीतपित्तवायु जिसे लोकमें पित्तोदर्दरोग कहते हैं २ और जिसमें चित्रविचित्र चकत्ते रागवान हों और बहुतसेहों उनमें खुजली और पीड़ाहो तथा मोटी त्वचाहो ३ ॥

भवन्तिसर्वतोदेहेशीतवातोद्भवानिच ॥ कफात्मकानिचिह्ना निउदर्दस्यविदुर्बुधाः ४ पित्ताधिकंभवेत्कोष्ठमुदर्दंतुकफाधिकम् ॥ वाताधिकंशीतपित्तंसन्निपातंत्रिदोषजम् ५ (उदर्दरोगकापूर्व्व रूप) पूर्वरूपमुदर्दस्यनेत्रयोरक्ततारुचिः ॥ हल्लासतृड्ज्वरोदा हो देहसादोंगगौरवम् ६ ॥

सब देहमें शीतल पवनसे और कफाधिक्यसे जो चकत्तेहों उसे पंडित लोग उदर्दरोग कहतेहैं ४ पित्ताधिकसे कुष्ठहोताहै कफाधिकसे उदर्द हो-ताहै वाताधिक से शीतपित्त सन्निपातसे त्रिदोषज उक्तरोग होतेहैं ५ नेत्र लालहों अरुचि खाली रद प्यास ज्वर दाह देह में पीड़ा तथा भारीपना ये उदर्दके पूर्व्वरूपहैं ६ ॥

(कोढ़उत्कोढ़कालक्षण) त्वक्संदूष्यबहिर्गतोरुक्महाकाये मरुच्छीततो देहेमंडलमंडितंवितनुतेशोफंसरोगान्वितम् ॥ कं डूनिस्त्वचिसर्वतोवमितरांतोदंचविड्बन्धनं शैथिल्यंबलनाशनं प्रकुरुतेरोमोद्गमंगौरवम् ७ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसरा जकृतेवैद्यशास्त्रेउदर्दकुष्ठलक्षणम् ॥

शरदीसे पवन त्वचाको बिगाड़ शरीरके बाहर महादारुण रोगको प्रकट करै देहमें रुधिरके चकत्ते सूजनयुक्त हों उनमें खुजलीचले त्वचा न रहै वमन और पीड़ा तथा दस्तका बंदहोना शिथिलता बलनाश रोमांच और देहभारी ७ इति हंसराजार्थबोधिन्यांशीतपित्तउदर्दकोढ़उत्कोढ़निदानम् ॥

(अम्लपित्तकीउत्पत्ति) स्निग्धाम्लैर्बहुभोजनैरप्रचितैर्वैश्वानरेर्नोदरे रात्रौजागरणेनवासरमुखंस्वापेनतापेनवा ॥ संक्षोभ्योपचिताम्लपित्तमुदरेहृत्कंठयोर्मस्तके नाभौवस्तिगुदांतरेषुविविधंधत्तेरुजंदारुणम् १ आध्मानंकुरुतेम्लपित्तमनिशंशोषंतनौकृष्णतामुद्गारंवितनोतिधूमसहितंसाम्लंमुहुर्दुःखदम् ॥ हल्लासंभ्रममोहकंपमरुचिंदाहंचहृत्कंठयोः कंडूमंडलमडितंसपिटिकंदेहंविधत्तेरतिम् २ अम्लत्वमेतिभुक्तान्नमपक्वंयातिवह्निना ॥ शिरोर्तिशूलहृच्छोषमम्लपित्तस्यलक्षणम् ३ ॥

चिकना खट्टा बहुत भोजन करनेसे मंदाग्निसे रातमें जागनेसे दिनमें सोने से गर्मीमें डोलने से कुपितहुआ अम्लपित्त सो पेटमें हृदयमें कंठ और मस्तकमें तथा नाभी और मूत्रस्थानमें गुदामें नानाप्रकारका रोगपैदा होताहै १ अफरा शोष शरीर काला धूमसहित खट्टी डकार बारबारमें आवे खाली रहहो भौंर मोह कम्प अरुचि हृदय कण्ठमें दाह खुजली देहमें चकत्ते और फुंसी तथा अरति को करै २ खायाहुआअन्न मंदाग्नि के कारणसे अपक्व हुआ खट्टेपनेको प्राप्त होताहै शिरमें दर्द शूल हृदय में शोष ये अम्ल पित्त के लक्षण हैं ३ ॥

(वातकेअम्लपित्तकेलक्षण) वाताम्लपित्तंप्रकरोतिपीडांशूलंभ्रमंहृत्कमलेतिशोषम् ॥ मूर्च्छांप्रकंपंपिटिकानिदेहे कृष्णानिसूक्ष्मानिचमण्डलानि ४ (पित्ताम्लपित्तकेलक्षण) पित्ताम्लंशीतजन्यंरुजयतिमनुजं पित्तकोपाधिकारं रक्तांगंमण्डलाभंत्वचिगतमनिशं छर्दिमूर्च्छाविपाकम् ॥ कंडूरूपंसशोफंपिटिकशतचितं मोहशोकादिकारि चान्तर्बाह्येतिदाहंहृदिजठरगुदेशूलकृच्चर्महारि ५ (कफाम्लपित्तकेलक्षण) पित्ताम्लंकफजंकरोतिपिटिकां देहेसशोफान्वितामालस्यंमलबंधनंवितनुते कंडूरुजंदारुणम् ॥ निद्राभंगविमर्दनेचजडता मुद्गारमम्लान्विताहृत्पीडामरुचिंतमःकफचयंकायेगुरुत्वंवमिम् ६ ॥ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेअम्लपित्तलक्षणम् ॥

वातका अम्लपित्त पीडा शूल भ्रम हृदयमें शोष मूर्च्छा कंप फुंसी काले

और छोटे चकत्ते करताहै ४ पित्तका अम्ल पित्त शीतसे पैदाहुआ मनुष्य को रोगीकरै देहमें लाल चकत्ते हों रद्द मूर्च्छा पाक खुजली सूजन अनेक फुंसी मोह शोक भीतर बाहर दाह हृदयमें पेट गुदा इनमें शूल चर्म को दूरकरैहै ५ कफको अम्ल पित्त फुंसी सूजन आलकस मलबंध खुजली जड़ता दारुणपीड़ा निद्राकानाश अङ्गोंकाटूटना खट्टीडकार हृदयमें पीड़ा अरुचि अंधेरा कफगिरे भारीपना और रद्दये लक्षण करैहै ६ इतिहंसराजार्थबोधिन्यामम्लपित्तरोगनिदानम् ॥

(विसर्परोगलक्षणम्) लवणकटुरसानांसेवनाद्घर्मतापात् प्रभवतिकिलरोगोदोषकोपाद्विसर्पः ॥ वपुषिचलनशीलोदग्ध विस्फोटरूपोबदरफलसमानःश्वेतपीतारुणाभः १ (वातकेविसर्परोगकालक्षण) संदूष्यामिषमेदचर्मरुधिरंजातोविसर्पोबहि र्वातात्माविदधातिविद्रुमनिभान्विस्फोटकान्चञ्चलान् ॥ दीप्तां गारसमानदाहजनकान्पीडाकरान्कंडुरान् कासाध्मानमहाज्वर श्रमतथाशीर्षार्त्तिमोहाकरान् २ (पित्तकेविसर्परोगकालक्षण) मूर्च्छांकुर्याद्विसर्प्पःप्रसरतिबहुशः पैत्तिकोघोररूपस्तत्ताग्न्यंगार दाहंपिटिकचयशतंनीलपीतारुणाभम् ॥ निद्रानाशंशरीरंज्वरय तिसततंरक्तमांसावशोषं कासंश्वासंविचेष्टांभ्रममरुचितृषास्फो टमंगेषुमोहम् ३ ॥

नोनका खट्टाआदि पदार्थ खानेसे धूपमें रहने से कुपितहूये जो वात पित्त कफ सो विसर्प रोग फैलनेवाला दग्ध फोड़ारूप बेरके समान सपेद पीला लालरंगके पैदाकरतेहैं १ वातका विसर्परोग मांसमेदाको बिगाड़कर बाहर मूंगेके समान चंचल फुंसीको पैदाकरै जैसा प्रज्वलित अङ्गार दाह को करनेवाले तथा पीड़ायुक्तकारक खुजली खांसी अफरा महाज्वर श्रम प्यास शिरमें दर्द मोहको करनेवाले करता है २ पित्तका विसर्प देहमें फैल जावे मूर्च्छाहो अङ्गारके समान दाह नीली पीली लालरंगकी फुंसी निद्रा कानाश ज्वर रुधिर मांसका शोष खांसी श्वास चेष्टाहीन भ्रम अरुचि प्यास अङ्गोंका फटना और मोहको करैहै ३ ॥

(कफकेविसर्परोगकेलक्षण) पिटिकाश्चविसर्पकृतारुचिराः स्फटिकद्युतयोबलवीर्यहराः ॥ कफजामिलिताबहुदुःखयुताज्वर

कासतृपालसशोफकराः ४ आग्नेयाख्योविसर्पःस्याद्वातपित्तस मुद्भवः॥ कफवातोद्भवोग्रंथिःकर्दमःकफपित्तजः ५ ससान्निपाति कोज्ञेयःसर्वलक्षणसंयुतः॥ विसर्पोद्वंद्वजःसाध्योऽसाध्यःस्याच्च त्रिदोषजः ६ (विसर्परोगकेउपद्रव) विसर्पोपद्रवाज्ञेयामांसशो थोज्वरोमदः॥मर्मरोधस्तृषाश्वासोहिक्कादाहोभ्रमोरुचिः ७इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेविसर्पलक्षणम्॥

कफका विसर्प रोग रुचिर स्वरूपवाली स्फटिक मणि के समान वल वीर्य की नाशक बहुत दुःखकी देनेवाली ज्वर खांसी प्यास आलकस सूजन को करे है ४ वात पित्तसे आग्नेय विसर्प रोग होताहै कफवात से ग्रन्थिनाम रोग होताहै और कफपित्तसे कर्दमनाम विसर्प रोग पैदा होता है ५ और जिसमें सब लक्षण मिलतेहों उसे सन्निपातका विसर्प रोग जानना द्विदोपसे पैदा विसर्परोग साध्यहै और त्रिदोपका असाध्य कहाहै ६ ये विसर्परोग केउपद्रव जानने मांसमें सूजन ज्वर मस्ती मर्मों का रुकना प्यास श्वास हिचकी दाह भ्रम अरुचि७ इति हंसराजार्थबोधि न्याविसर्परोगनिदानम्॥



क्षुद्ररोगलक्षणम्॥

(अजगल्लिकालक्षण) मुद्गासमानापिटिकासवर्णास्निग्धा मरुत्श्लेष्मविकारजाता॥ देहेशिशूनांग्रथिताचनीरुजांतामा जगल्लींप्रवदन्तिसन्तः १ (यवप्रख्याकालक्षण) अरुणभापि टिकाबहुवेदनाकफमरुज्जनिताग्रथितामिषे॥यवरामाकठिनाभि पजांवरैर्निगदिताज्वरकृत्किलमायवा २ (अंजनीनामफुंसीकेल क्षण) उन्नतामंडलाकारा विततांजलिसंनिभा॥ घनावक्राद्विदो षोत्था तांजानीहिबुधांजलीम् ३॥

जो फुंसी मूंगके समान देह के वर्ण सरीखी हो और चिकनी हो वो वातकफसे पैदाहुई अजगल्लिका कहतेहैं ये वालक की देहमें पीडारहि- तहोती है १ जो फुंसी लाल रंगकी और पीडा युक्त मांसमें रहतीहो यव

कहतेहैं २८ तिलके समान पीडारहित स्थिर देहमें जो काला दागहो उसे वात पित्तसे पैदा तिलनाम कहतेहैं २९ दृढ और ऊंचा तथा उडद के समान मांसकी गांठकाली और पीडा तथा पाकरहितहो उसे वैद्य मस्सा कहते हैं ३० ॥

(न्यच्छकोलक्षण) गात्रेस्थमंडलंकृष्णंसितंवामहदल्पकम् ॥ नीरुजंकफजंविद्यात्तंरुजंन्यच्छसंज्ञकम् ३१ (व्यंगअर्थात्झांईकेलक्षण) [illegible]

नोतिमण्डलम [illegible]

न्तिसाधवः ३२ (नीलिकाकेलक्षण) ऊष्मणासहितोवायुर्बाहिरंगत्यकोपतः ॥ विदधातिमुखेछायांनीलिकांतांविदुर्बुधाः ३३ ॥

शरीरमेंकाला वा सफेद मंडल छोटा वा बडाहो और पीडा रहितहो उसे लहसन संज्ञक कहते हैं ३१ कोप और श्रमसे कुपित हुये वात पित्त सो मुखमें प्राप्त हो मंडलको करै हैं और वो कालाहो पीडारहित उसे महात्मा व्यंगरोग कहते हैं ३२ गर्मीके साथ पवन कोपहो बाहर निकल मुखपर जो छाया करदे उसे पंडित नीलिका कहतेहैं ३३ ॥

(कर्णिकाकेलक्षण) संमर्दनात्पीडनतोभिघातान्मेढ्रस्यचर्मानुगतोहिवातः ॥ मणेरधस्तात्प्रकरोतिकोशंग्रंथिंचविद्यात्किलकर्णिकांताम् ३४ (अवपाटिकाकेलक्षण) नखाभिघाताद्युवतीप्रसंगादुद्वर्तनाद्वीर्यगतेःप्ररोधात् ॥ संपीडनाद्यस्यचचर्मपाटयतेवुधैर्निरुक्ताकिलपाटिकासा ३५ (निरुद्धप्रकाशरोगलक्षण) स्रोतांसि मूत्रस्यरुणद्धिवातोमणिस्थितोवीर्यगतेर्निरोधात् ॥ मूत्रंप्रवर्तेत मणिंविदीर्यविद्यान्निरुद्धप्रकशांहिवैद्यः ३६ ॥

मसलनेसे वा पीडासे अथवा चोटलगनेसे अंडकोशकी चर्ममें प्राप्तभई वात सो कुपितहो सुपारीके नीचे गांठको पैदाकरै उसे कर्णिका कहते हैं ३४ नखके लगनेसे अथवा जिसस्त्रीकी योनि छोटीहो उससे संगकरने से उबटने से वीर्यकी गतिरोकने से लिंगेन्द्रिय के मींचने से लिंगकी चाम उतर जाय उसे पंडित अवपाटिका कहतेहैं ३५ वीर्य्यकी गति रोकनेसे लिंग की सुपारी बीचस्थित जो वात सो मूत्रके मार्गको रोकदे फिर मूत्र

सुपारीको खेदकरता हुआ उतरै उसे वैद्य निरुद्धप्रकाशरोग कहते हैं ३६ ॥

(सन्निरुद्धगुदकेलक्षण) अपानवातस्यगतेर्विघातात्प्रकुप्य वातोविहितोगुदस्थः ॥ रुणद्धिमार्गंकुरुतेतिसूक्ष्मंद्वारंचविद्यात्किलदुस्तरंतत् ३७ (गुदभ्रंशरोगकालक्षण) निर्गच्छन्तिवहिर्गुदाःकृशतनो रूक्षाशिनोरोगिणोऽतीसारेणयुतस्यतंमुनिगणाः प्राहुर्गुदभ्रंशकम् ॥ (शूकरदंष्ट्ररोगकालक्षण) त्वक्पाकोवहिर्निर्गतःकिलगुदः कंडूधरोदाहकृद्रोगः शूकरदंष्ट्रकोमुनिवरैः प्रोक्तोज्वरार्त्तिप्रदः ३८ (वृषणकच्छुररोगकेलक्षण) वृषणस्थंमलंस्वेदात्कंडूस्फोटंवितन्वते ॥ संस्रावंकफपित्तोत्थंविद्याद्वृषणकच्छुरम् ३९ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृते वैद्यशास्त्रेनानाप्रकाराणांक्षुद्ररोगाणांलक्षणम् ॥

अपान वातकी गति रोकनेसे कुपित हुई गुदाकी पवन सो गुदाके मार्गको छोटा करदे उसे दुस्तररोग कहते हैं ३७ कृशदेहवाले पुरुषकी तथा रूखा खानेवालेकी तथा अतीसारवाले पुरुषकी गुदा बाहर निकल आवे उसे गुदभ्रंश रोग कहते हैं जिसकी गुदा बाहर निकसि आवे और त्वचा पकजाय उसजगह खुजली चले तथा ज्वर पीडा दाहहो उसे मुनीश्वरोंने शूकरदंष्ट्ररोग कहाहै ३८ अंडकोशों के नहीं धोनेसे मैल जमजावे तब उस जगहपसीना आवै और खुजली चलै और खुजाने से फोडा होजावे और वो बढे उसे वृषणकच्छुररोग कहते हैं ये रोग कफ पित्तसे होताहै ३९ इतिहंसराजार्थबोधिन्यांक्षुद्ररोगनिदानम् ॥

(अथ मुखरोगलक्षणम्) ओष्ठौमारुतकोपतोतिपरुषौस्तब्धौमहावेदनौ भिद्येतेदलसंयुतौमुनिवरैःप्रोक्तौचवातात्मकौ ॥ रक्तोष्ठौखरदाहपाकपिटिकायुक्तौचतौपित्तलौ ॥ कृष्णौपिच्छिलशोफशीतपिटिकापीडान्वितौश्लेष्मलौ १ (सन्निपातजनितओष्ठलक्षण) नानावर्णधरावोष्ठौनानारोगसमन्वितौ ॥ पिटिकाभिर्युतौस्थूलौविज्ञेयौसान्निपातिकौ २ (दन्तरोगनिदानम्) आवृत्यदन्ता

न्परितोपिरक्तंप्रवर्त्ततेदन्तपलंविशीर्यते ॥ सक्लेदद्दुर्गंधयुतंचकृष्णंशीतोदसंज्ञःकफरक्तजोयम् ३ ॥

प्रथम ओठके रोग कहते हैं ॥ वादीसे ओठ कठोर और टेढे तथा पीडायुक्त और फटजाय ऐसे मुनीश्वरोंने कहाहै और लाल करडे दाहयुक्त और पकजावें पीडिकायुक्त हों उनको पित्तके कोपसे जानना और काले तथा गाढे सूजनयुक्त शीतल पिडिकायुक्त तथा पीडायुक्त ऐसे लक्षणों से कफ का ओठमें रोग जानना १ जिनका अनेक प्रकारका वर्ण हो और अनेक रोगयुक्त हों पीडिका और मोटे हों ऐसा ओठोंका रोग सन्निपातका जानना २ दांतों में प्राप्त हो और रुधिर निकाले और दांतोंमें जो मांस उसको दांतों में छुडाय दे तथा क्लेद और दुर्गंधयुक्त हो तथा काला हो वो कफ रुधिरसे पैदा शीतोद संज्ञक दांतरोग जानना ३ ॥

(दंतपुप्पुटरोगकेलक्षण) मध्येषुत्रिषुदंतेषुनीरुक्शोफःप्रजायते ॥ दंतपुप्पुटकोरोगोगदितोभिषजांवरैः ४ (दंतवेशरोगकेलक्षण) रचयतिबहुशोफंदंतमुत्पाटनायपचयतिकिलमांसंदंतसंलग्नजातम् ॥ व्यथयतिमुखदेशंस्रावयत्याशुरक्तं कफपवनविकारात्सम्भवोदंतवेशः ५ (सौषिरनामदंतरोगलक्षण) लालास्रावीमहातापीदंतमूलेषुशोफवान् ॥ सौषिराख्योहिविज्ञेयो रोगोरक्तसमुद्भवः ६ ॥

जो मध्य के तीन दांतों में पीडारहित सूजन हो उसे दंतपुप्पुटरोग कहते हैं ४ जो दांतों के उखाडने के लिये सूजन को प्रकट करै और दांत के संलग्न मांस को पृथक् करै और मुखमें पीडाकरै रुधिर बहे उसे वात कफसे पैदा दंतवेश नाम रोग कहते हैं ५ लार टपका करै महाताप होय दांतोंकी जडमें सूजन हो वो रुधिर से पैदा सौषिर नामक दंतरोगहै ६ ॥

(महासौषिरदंतरोगलक्षण) दंतानावेष्ट्यवस्तालुंदारयेच्चविसर्प्पवत् ॥ नानाव्याधिकरंविद्यात्संमहासौषिरंरुजम् ७ दंतसंलग्नमांसानिविदारयतिशोणितम् ॥ निष्ठीवयतियःपित्तादसृक्परिपरोहिसः ८ (शोफकशदंतरोगकेलक्षण) दंतानापीड्ययोरोगश्चालयेतमुहुर्मुहुः ॥ पित्तरक्तकफोद्भूतोज्ञेयःशोफकशोबुधैः ९ ॥

जो दांतों को ढक कर और विसर्परोग कीसी तरह तालुये को विदीर्णकरै और नानाप्रकार के रोगयुक्त हो उसे महासौपिर दंतरोग कहते हैं ७ जो दांतसे लगे मांस को विदीर्ण करे और रुधिर मुखसे गिरे वो पित्तसे पैदा असृक् परिपर दंतरोग जानना ८ जो दांतों को पीड़ाकरै और बारबार चलायमान करदे पित्त कफ और रुधिर से पैदा सो शोफकृश रोग जानना ९ ॥

(वैदर्भरोगकेलक्षण) वैदर्भरोगःकथितोभिघातजःसरक्तपित्तानिलकोपसंभवः ॥ संपीड्यदंतान्परिचालयत्यलंकचित्क्वचित्स्रावयतीवशोणितम् १० (करालनामदंतरोगलक्षण) वायुर्दंतांतरेदंतान्कुरुतेतीव्रवेदनाम् ॥ वर्द्धनेविकटान्रूक्षान्मकरालोविधीयते ११ (अभिकमांसरोगकेलक्षण) हनुगतेदशनेकिलपश्चिमेधिकतरार्त्तिकरेबहुशोफवान् ॥ कफकृतःपवनेनयुतोनिशंमुनिवरैर्गदितोधिकमांसकः १२ ॥

वैदर्भरोग चोटके लगने से रुधिर से वात और पित्त के कोपसे दांतों में पीड़ाकरै और चलायमान करदे और कभी कभी रुधिर भी मुखसे गिरै १० बादी दांतोंके अन्दर दांत को पैदा करै और उनमें दर्द हो तथा वे टेढ़े हों रूखे हों और बढ़े वो करालनाम दन्तरोग कहाहै ११ ठोढ़ी के पश्चिमदेशमें दांत पैदा हो और उसमें पीड़ा अधिक हो और सूजन हो वो वात कफसे पैदा मुनीश्वरोंने अधिकमांसरोग कहाहै १२ ॥

(कीटदंतरोगकेलक्षण) दंतेदंतेकृष्णछिद्रंकरोतिलालास्रावीचंचलोदुष्टगंधिः ॥ पीडायुक्तःशोफसंरंभकारीप्रोक्तोवैद्यैःकीटदंतःसरोगः १३ (भंजनकदंतरोगकलक्षण) योदंतभंगंकुरुतेहिवक्त्रेपापात्मनांभोजनदुःखितानाम् ॥ वातेनजातःकफमिश्रितेनजानीहितंभंजनकंहिवैद्य १४ (दंतविद्रधिरोगकेलक्षण) दंतसंलग्नजंमांसमलाढ्यम्बहुशोफयुक् ॥ रक्तपूयाश्रयंक्लिन्नंतंविद्यादंतविद्रधिम् १५ ॥

दांतदांतमें काले छिद्र करदे लार टपके चंचल और दुष्ट गन्धआवे पीड़ा और सूजन को बढ़ावे वो वैद्योंने कीटदंतरोग कहाहै १३ पापी मनुष्यों

के आकारहो करडीहो वो वातकफसे पैदा ज्वरकर्त्ता यवप्रख्या कहते हैं २ जो फुंसी ऊंचीहो मंडलके आकारहो वितताञ्जली सदृशहो भारीहो टेढी हो उसे द्विदोषने पैदा पंडित अंजलीनाम कहते हैं ३॥

(विवृतानामफुंसीकेलक्षण) पक्कोदुम्बरिसदृशाविवृतास्या मण्डलाकारा॥ पिटिकाबहुदाहयुताविद्वज्ज्ञेयाविवृताख्या ४ (कच्छपिकाकेलक्षण) पिटिकाकच्छपाकाराकफवातसमुद्भवा॥ ग्रन्थियुक्तोन्नताघोराज्ञेयासाकच्छपीबुधैः ५ (वाल्मीकफुंसीके लक्षण) ग्रीवांसकक्षोदरहृदयकटीहस्तपादेषुघोरोरोगोवा ल्मीकसंज्ञःप्रभवतिबहुशोवर्द्धनेसंक्रमेण॥ कायात्कायान्तरेषुप्र सरतिबहुधाश्लेष्मपित्तानिलोत्थः पूयंवक्त्रैरनेकैर्वमतिचरुधिरं वीर्यसौख्योपकारी ६॥

पके गूलरके समान फटे मुखकी मंडलके आकार और जिसमें दाह ज्यादाहो उसे विवृता फुंसी कहतेहैं ४ जो फुंसी कछुयेके समान ऊंचीहो गाठहो वात कफसे पैदाहो उसे घोर कच्छपिका कहतेहैं ५ ग्रीवासन्धि कंधे कांख पेट हृदय कमर हाथ पैर इनमें वाल्मीक नामका घोररोग पैदाहोता है और बांबीकी तरहहो और क्रमसे देहमें फैले और अनेक मुखहों उन से रादनिकले रुधिर गिरे वो वीर्यसुखको दूर करनेवाला तीनों दोषों से पैदा होताहै ६॥

(इन्द्रवृद्धिकेलक्षण७) शोफान्वितापद्मकर्णिकावद्दाहार्तितृ ष्णारतिमोहदात्री॥ पित्तानिलोत्थापिटिकाचितायाताम्इन्द्रवृ द्धिङ्कथयन्तिवैद्याः ७ (गर्दभिकाकेलक्षण) उन्नतामण्डलाका रा शोफयुक्पिटिकान्विता॥ वातपित्तभवारक्तातांविद्याद्गर्दभींबु धः ८ (पाषाणगर्दभिकाकेलक्षण) हनुसंधिगतःशोथोमन्दरु क्कफवातजः॥ स्थिरःस्निग्धोबुधैर्ज्ञेयः सैवपाषाणगर्दभः ९॥

सूजनहो तथा कमलकी कर्णिकाके समान हो दाह पीडा तृष्णा अर- ति मोह युक्त फुंसीहो उसे वातपित्तसे पैदा इन्द्रवृद्धि नाम कहतेहैं ७ जो

---

* एतेच स्त्रीणा न भवति विदेहवचन व्याख्यापयन्ति यदुक्तम् अत्यन्तसुकुमाराणा रजोदुष्टस्तनानिच॥ अन्य.यामेत्रीयस्मात्तस्मान्नस्खलतिस्त्रिय इति ८॥

फुंसी मंडलकेआकार गोलहो ऊंचीहो सूजनकोलिये लालहो उसेवातपित्त से पैदा गर्दभिका कहते हैं ८ जो फुंसी ठोडीकी संधीमें सूजन मंदपीडा को लियेहो स्थिरचिकनी उसे कफवातसे पैदा पाषाणगर्दभिका कहते हैं ६ ॥

(पनसिकाकेलक्षण) पिटिकाकफवातविकारभवाबहुवेदन कृच्छ्रवणेन्तरजा॥ ज्वरदाहतृषारतिमोहकरापनसामुनिभिर्गदिताकिलसा १० (जलगर्दभिकाकेलक्षण) विसर्प्पवत्सर्पतियो हिशोफोरुजाकरःपित्तविकारजातः ॥ ज्वरार्त्तिदाहारतिमोहपूयकृत्परैर्निरुक्तोजलगर्दभोयम् ११ (इरिवेल्लिकाकेलक्षण) पिटिकांसर्वदोषोत्थां सर्वचिह्नशिरोगताम् ॥ वर्तुलांतांविजानीहि बुधत्वमिरिवेल्लिकाम् १२ ॥

जो फुंसी वात कफके विकारसे पैदाहो और पीड़ायुक्त कानके भीतरहो ज्वर दाह प्यास अरति मोह लियेहो उसे मुनीश्वर पनसिकाकहतेहैं१०जो सूजन पहले थोडीहो फिर विसर्परोगकी तरह फैलजाय पीड़ाकारकज्वर दाह अरति मोह राधवहे उसे जलगर्दभिका कहतेहैं वो पित्तके विकारसे होतीहै ११ जो मस्तकमें फुंसी त्रिदोषसे हो गोलहो और त्रिदोषलक्षण मिलतेहों उसे इरिवेल्लिका कहते हैं १२॥

(कखलाईकेलक्षण) कृष्णास्फोटापार्श्वकक्षांसबाहौसंस्थानूनंवेदनादाहयुक्ता॥ कक्षासंज्ञांपित्तकोपाभिजातां जानीहित्वंवैद्यराजोरुजाताम् १३ (गन्धमालाकेलक्षण) कक्षाकुक्षिभवामेकांपिटिकाम्पित्तकोपजाम् ॥ त्वग्गतांदाहकृत्कुष्णांगन्धमालांचतांत्यजेत् १४ (अग्निरोहिणीकेलक्षण) कक्षायांपिटिकोद्भवाज्वरकरादीप्ताग्निदाहप्रदा मांसंभेद्यविनिर्गताःकफमरुत्पित्तोच्छ्रिता दारुणाः ॥ सप्ताहेदशमेदिनेचमनुजंहंतीहनूनंहठ'इसाद्यैर्भिपजांवरैर्निगदिताज्वालामुखीरोहिणी १५ ॥

पसवाडों में व भुजाके एकदेशमें व कंधाके एकदेशमें काला फोड़ाहो और पीड़ा दाहयुक्तहो उसे हे वैद्यराज! तू कखलाई जान ये पित्तके कोपसे होतीहै १३ कांखमें अथवा पसवाड़ोंमें काले रंगका फोड़ाहो त्वचा

मेंहो दाहयुक्त उसे गंधमाला कहतेहैं येभी पित्तके कोपसे होतीहै १४ कांखमें मांसको विदीर्णकर दीप्त अग्निके समान जो फोडाहो ज्वरदाहका करनेवाला उसे अश्विनीकुमारको आदिले वैद्यों ने ज्वालामुखी रोहिणी नाम कहाहै ये रोग मनुष्यको सात या दशदिनमें मारडाले ये सन्निपात से पैदाहोतीहै १५ ॥

(विदारिकाकेलक्षण) कक्षायांसंधिदेशेषु विस्फोटोजायते नृणाम् ॥ विदारीकंदवद्वृत्तःसर्वलक्षणलक्षितः १६ बहुशीर्षाविदीर्णास्या वातपित्तकफोद्भवा ॥ चिरपाकारुणाभेयंप्रोक्तावैद्यैर्विदारिका १७ (शर्करार्बुदकेलक्षण) मेदःस्नायुशिरामांसं दूष्यवायुर्बहिर्गतः ॥ ग्रंथिंशोष्यामिषंकुर्यात्तंविद्याच्छर्करार्बुदम् १८ ॥

कांखमें या संधीनमें फोडा विदारीकंद के समान गोल हो और सब लक्षण मिलतेहों १६ बहुतसे शिरहों और खुनेमुखकी देरमें पकै लालरंग की इसे वैद्योंने विदारिकानाम कहीहै येभी सन्निपातसे होतीहै १७ वात मेदा मांस नस इनमें प्राप्तहो और इनको बिगाडकर बाहर प्राप्तहो फेर गांठको पैदाकरे और शोषको करे उसे शर्करार्बुद कहतेहैं १८ ॥

शर्करार्बुदरुक्कुर्याच्छर्करासदृशामिषम् ॥ शिरास्रावंचदुर्गंधं क्लिन्नगात्रंनिरामिषम् १९ (कंदरकुंभीकेलक्षण) कंटकैःशर्करैःपादेसंक्षतेग्रन्थिरुद्भवा ॥ कीलवद्वर्द्धतेनित्यं तंविद्यात्कंदरंबुधैः २० (बिवांईकेलक्षण) अतिक्रमणशीलस्यपादयोरूक्षयोर्महत् ॥ दारीचकुरुतेकोपात् तंविद्यात्तलसंश्रितम् २१ ॥

शर्करार्बुदरोग मांसको शर्कराके समान करदे और नस चुचावै तथा दुर्गंधयुक्तहो शरीरखेदित और मांसरहित करदेयहै १९ कांटे व कंकरीके पैरमें लगने से जो गांठ पैदाहो और कीलकी तरह बढ़ै उसे कन्दर नाम कहतेहैं २० जो मनुष्य बहुत डोलाकरै उसके पैरोंमें रूखापनहो और पैर की ऐंडी फटजाय उसे तलसंश्रित कहतेहैं २१ ॥

(खारुराकेलक्षण) दुष्टकर्दमसंस्पर्शात् पादांगुल्यांतरेबहुः ॥ कंडूसुखास्रिदाहार्तिशोथयुक्तोऽलसंविदुः २२ (इन्द्रलुप्तकेलक्षण)

रोमाणांकूपमध्येपुवातपित्ते [illegible]
प्राच्यावयतेहठात् २३ [illegible]
शम् ॥ वध्नात्युत्पत्तिमन्येषामिन्द्रलुप्तन्तमादिशत् २४ ॥

दुष्टकीच पैरकी उँगलियोंमें लगनेसे सूजनहो और खुजानेसे सुखहो दाह और पीड़ाहो उसे अलसनाम अर्थात् खारुरा कहते हैं २२ रोमकूपसे वात पित्त निकलकर बालों को मूर्च्छित कर हठसे दूर करदेवै २३ फेर कफ और रुधिर बाल जमनेके स्थानको रोकदे बाल उगने नहींदे उसे इन्द्रलुप्त कहते हैं २४ ॥

इन्द्रलुप्तस्यनामानिप्रोक्तानिभिषजांवरैः ॥ खालित्यमपरा रुह्याप्राहुश्चाचेतिचापरे २५ (अरुंषिकाकोलक्षण) अतिरूक्षतमेशीर्षेबहुकंडुसमन्विते ॥ जायतेदारुणोरोगः कफमारुतरोगतः २६ अत्यंतश्रमकोपाभ्यांजातंपित्तंचमूर्द्धनि ॥ तेनपक्वाः कृताःकेशाझ्यानिपलितानिच २७ ॥

इन्द्रलुप्तके ये नाम और भी वैद्य कहते हैं खालित्य और रुह्या तथा चांदलो ये रोग स्त्रीके नहीं होता २५ केश पैदा होने की भूमिमें खुजली चलै और वह जगह रूखी होजाय उसके वात कफसे अरुंषिका दारुण रोगहो २६ अतिश्रम और क्रोधसे पित्त शिरमें प्राप्त होकर बालोंको सफेद करदेताहै २७ ॥

(मुखदूषिकाकेलक्षण) कफानिलाभ्यांसहशोणिताभ्यां यूनांशरीरेपिटिकाभिजाता ॥ दाहार्तिकृत्कण्टकतीव्रवेधीवुधैर्निरुक्तामुखदूषिकासा २८ (तिलकेलक्षण) तिलप्रमाणानिचनीरुजानिस्थिराणिगात्रेषुसमुद्भवानि ॥ कृष्णानिपित्तानिलकोपजानितिलानितानिप्रवदंतिसंतः २९ (मस्सेकालक्षण) दृढोन्नतंपित्तकफानिलोत्थंमाषप्रमाणंपलग्रन्थिरूपम् ॥ कृष्णंस्थिरंनीरुजवद्धिपाकंतमाषसंज्ञङ्कथयन्तिवैद्याः ३० ॥

वात कफ और रुधिरके कोपसे जवान पुरुषों के जो फुंसी मुखपरहो दाह और पीड़ा तथा सेमलके कांटेकेसमान उसे मुखदूषिका अर्थात् मुहांसे

के मुखसे दांतों को उखाडडाले इसीसे भोजन करनेमें दुःखित हो वो बादीसे और कफसे प्रकट ऐसा भंजनक नाम दंतरोग जानना १४ दांतोंसे मिलाहुआ जो मांस उसमें मैल बहुतहो और सूजन हो तथा रुधिर रादचले वो दंतविद्रधि रोग जानना १५॥

(दन्तहर्षरोगकेलक्षण) शीतवाताम्लसंस्पर्शाद्दन्तपीडासहो गदः॥ दन्तहर्षःसविज्ञेयोवातपित्तसमुद्भवः १६ (दन्तशर्करारोगकेलक्षण) मलोदन्तगतःस्थूलःशर्करेवाचिरस्थिनः॥ कफोद्भूतोबुधैर्ज्ञेयःसारुजादन्तशर्करा १७ (दन्तश्यावरोगकेलक्षण) दण्डादीनांविघाताद्वाकोपाच्छोणितपित्तयोः॥ प्राप्नोतिकृष्णतांदन्तोदन्तश्यावोरुगुच्यते १८ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवे हंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेओष्ठदन्तरोगलक्षणम्॥

शीतल वात खट्टी ऐसी वस्तुके स्पर्श से जो दांतोंमें पीडाहो वो वातपित्त से प्रकट दंतहर्षरोग जानना १६ दांतोंमें मैल बहुत शर्कराकीसीतरहरहे उसे पण्डितोंने शर्करारोग कहाहै १७ दंड आदिकोंकी चोट लगनेसे और रुधिर पित्तके कोपसे जो कालेदांत पड जायँ उसे दन्तश्यावरोग कहतेहैं १८ इतिमाथुरदत्तरामकृतेहंसराजार्थबोधिनीभाषाविवर्णेओष्ठदन्तरोगलक्षणम्।

(अथ जिह्वारोगनिदानम्) वातेनस्फुटिताकठोररसनारूक्षा प्रसुप्तार्त्तिदा पित्तेनोष्णतरार्त्तिदाहमहितादीर्घारुणैःकंटकैः॥ संयुक्ताचकफेनसागुरुतरामांसोत्थितैरंकुरैः श्वेतैःशाल्मलिकंटकाकृतिधरैर्युक्तातिशोफान्विता १ (उल्लासनामजिह्वारोगलक्षण) जिह्वातलेमहाशोथोगुरुग्रन्थियुतोदृढः॥ पूयशोणितयुक्पाकः सोल्लासःकथितोबुधैः २ जिह्वाग्रमानम्यकरोतिशोथंज्वालान्वितं तीव्रविपाकमुग्रम्॥ कंडूयुतंरक्तकफाधिशूलंरुक्शोफजिह्वाकथिताभिषग्भिः ३॥

वादीसे जीभ कठोर और फटी तथा रूखी प्रसुप्तपीडायुक्त होतीहै पित्तसे गरम दाहयुक्त बडे और लाल कांटोंसे युक्त जाननी कफसे भारी सफेद सेमरके कांटे सरीखे कांटे और सूजनयुक्त होतीहै १ जीभके नीचे सूजन बहुत हो तथा भारी और कठिन गांठहो रुधिर और राद युक्तहो वो पक

जाय उसे उल्लासनाम जीभका रोग कहतेहैं २ जीभके अग्रभागमें सूजन हो और लारगिरै बहुत पके तथा खुजलीचले और रुधिर कफसे शूल ज्यादह हो उसे शोफाजिह्वानामरोग वैद्योंने कहाहै ३॥

तालुमूलोत्थितःशोथःकासश्वासतृषान्वितः ॥ सव्यथःकफरक्तात्माकंठतुण्डःसकथ्यते ४ तालुकोशगतःशोथश्चिरपाकीज्वरान्वितः ॥ दाहार्त्तिकासकृत्स्रावीतुण्डकेशीसउच्यते ५ (कच्छपरोगकेलक्षण) कूर्माकारःप्रोन्नतस्तालुदेशे शोथःसोक्तःकच्छपो वैद्यराजैः ॥ रक्ताज्जातोरक्तवर्णोज्वराढ्यःस्तब्धःशोफःकोलमात्रःकफात्मा ६॥

और जो तालुयेके मूलमें सूजन खांसी श्वासयुक्त तथा प्याससे संयुक्त हो और दर्द होताहो वो कफ पित्तसे प्रकट तुंडनाम रोग कहाहै ४ जो तालु के कोशमें सूजनहो और देरमें पके ज्वरयुक्त और उसमें खांसी दाह पीड़ा हो वहै उसे तुंडकेशी रोग कहतेहैं ५ तालुयेमें कछुये के आकार ऊँची सूजनहो उसको वैद्योंने कच्छप नाम रोग कहाहै रक्तसे पैदा भया और लाल वर्ण तथा ज्वरयुक्त टेढ़ा और सूजनहो बेरके प्रमाण वो कफ से पैदा जानना ६॥

(तालुपाकतालुशोषलक्षण) पित्ताज्जातंशोथमुग्रंमदाहंतृष्णायुक्तंतालुपाकंवदेज्ज्ञः ॥ वातोद्भूतःश्वासकासातिशोषैर्युक्तःशोथस्तालुशोषोभवेत्सः ७ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेजिह्वातालूनांलक्षणानि ॥

सूजन और दाह तथा प्यासहो उसे पण्डित तालुपाक रोग कहते हैं यह पित्त से पैदा होताहै और जिसमें श्वास खांसी शोप और सूजनहो वो वातसे पैदा तालुशोप रोगहै ७ इति माथुरदत्तरामपाठकप्रणीतायां हंसराजार्थबोधिनीटीकायांजिह्वातालुरोगनिदानंसमाप्तम् ॥

(गलरोगस्यनिदानम्) पित्तश्लेष्मशरीरिणांगलगताःसंदूष्यरक्तामिषं तेतत्रैवविमूर्च्छिताःप्रकुपिताःकुर्वंतिनानागदान् ॥ मांसोत्थैःकठिनांकुरैश्चपरितोरुंधंतिकंठानिलं प्राणानाशुविकर्षयन्ति

मुनिभिःसारोहिणीप्रोच्यते १ (वातरोहिणीकेलक्षण) चिह्वानिवातरोहिण्यागलेमांसभवांकुरा ॥ ज्वरार्त्तिकारिणीतीव्राशोषिणीकण्ठरोधिनी २ (पित्तरोहिणीकेलक्षण) मांसांकुरागलोत्पन्नादाहिनस्तीव्रवेदनाः ॥ सूक्ष्मत्वचस्त्वरापाकाइचह्लैःस्यात्पित्तरोहिणी ३ ॥

मनुष्यों के वात पित्त कफ गलेमें प्राप्तहो रुधिर और मांस को बिगाड़ फेर आप दुष्ट हो नानाप्रकारके गलेमें रोग करतेहैं और मांस से प्रकट भये जो कठिनअंकुर उनमे कंठको रोक तथा श्वास को रोकदे और प्राण को निकाल दे उसे रोहिणी नाम कंठरोग कहते हैं १ वातरोहिणी के ये लक्षणहैं गलेमें मांस के अंकुरहों सो ज्वर और पीडा शोप तथा कंठको रोकदे २ मांसके अंकुर जो हों उनमें दाह और तीव्रपीड़ा छोटे जल्दीपकें ये पित्तरोहिणी के लक्षणहैं ३ ॥

(कफरोहिणीकेलक्षण) मांसांकुरैःस्थूलतरैरपाकैःकंठांतरोत्थैःकठिनैरवेदनैः ॥ दीर्घैःस्थिरैःकंडुरशोथवद्भिर्ज्ञेयाभिषग्भिःकफरोहिणीसा ४ (रुधिरकी रोहिणीकेलक्षण) कंठांतरोत्थैःपिटिकैरुजान्वितैः सूक्ष्मैःसशोथैर्गलरोगकारकैः ॥ श्वासार्त्तिकासज्वरदाहमोहैर्ज्ञेयावुधैरक्तभवाचरोहिणी ५ (कंठशालूकरोगकेलक्षण) कंठेजातंग्रन्थिरूपंकफोत्थं साध्यंशास्त्रैःकोलमज्जासमानम् ॥ स्थैर्यंकंडूशोफयुक्तङ्कठोरंविज्ञेयन्तंकंठशालूकरोगम् ६ ॥

मांस के अंकुर गलेमें मोटेहों पकेनहीं तथा कठिन पीडारहित लम्बेहों स्थिरहों खुजली सूजन रहितहों उसे वैद्योंने कफरोहिणी कहाहै ४ कंठमें अंकुर छोटेहों और उनमें पीड़ाहो और सूजन तथा गलेके रोगोंको प्रकट करनेवाले श्वास पीडा खांसी ज्वर दाह मोहयुक्तहो उसे रुधिरकी रोहिणी रोग कहते हैं ५ कोल की मज्जा अर्थात् बेरकी गुठली के समान कंठमें गांठ पैदा हो वो कफसे प्रकट साध्यहै स्थिर वो खुजली सूजन कठोर ये कंठशालूक रोगके लक्षण कहे हैं ६ ॥

(अधिजिह्वारोगकेलक्षण) शोथोजिह्वा [illegible]

कफोद्भवः॥ जिह्वावन्धोमहोग्रार्त्तिरधिजिह्वोविधीयते ७ (वलासा
क्षरोगकेलक्षण) श्लेष्मानिलौगलेशोथंकुरुतःश्वाससंभवम् ॥
मर्मच्छिद्रंगुरुस्थूलंवलाराक्षंविदुर्बुधाः ८ (नासाशतघ्नीरोगके
लक्षण) वर्त्तिर्गलस्थावहुवेदनान्वितामांसांकुरस्थापरिकंठरोधि
नी॥दोषैर्युताप्राणहरीसकंटकानासाशतघ्नीपरिकीर्त्तितावुधैः ९॥

जिह्वा के अग्रभाग में सूजन हो पके जीभ को स्तम्भन करदे वहुत पीडाहो उसे रुधिर कफसे प्रकट अधिजिह्वरोग कहाहै ७ कफ और वात गलमें सूजन करै तथा श्वास और मर्मस्थानमें छिद्र तथा मोटा और भारीहो उसे वलासाक्ष रोग कहाहै ८ उसे पंडितों ने नासाशतघ्नीरोगकहाहै जिसमें पीडायुक्त गलेमें वत्तीसी हो तथा मांसके अंकुरनसे कंठ रुकाहो दोषों से परिपूर्ण हो प्राण के हरनेवाली व टियुक्त हो ९॥

(गलायुरोगकेलक्षण) ग्रन्थिर्गलस्थोवदरप्रमाणोनीरुक्स्थि
रोऽसाध्यतमःकफात्मा ॥ प्रोक्तोगलायुर्मुनिभिःकदाचिद्रोगंसप
क्षंपरितोनपश्येत् १० (वलविद्रधिरोगकेलक्षण) शोथःसर्वंग
लंव्याप्यवर्द्धतेवहुरोगवान् ॥ त्रिदोषोत्थोमहान्वैद्यैःसज्ञेयोवल
विद्रधिः ११ (गलौघरोगकेलक्षण) शोथोगलस्थोवहुरूपधारी
कंठावरोधीगलदाहकारी ॥ श्लेष्मासृगुत्थोवलवीर्यहारी प्रोक्तो
गलौघोमुनिभिर्विकारी १२॥

गलेमें गांठ वेर के समान हो पीडारहित स्थिरहो तो असाध्य कहा है यह कफसे प्रकट होताहै पक्षउपरांत नहीं रहै १० जो सूजन सवगलेमें व्याप्तहो फिर वढै और वहुतसे रोगयुक्तहों उसे सन्निपातसे प्रकट वल विद्रधिरोग कहाहै ११ अनेकप्रकार की सूजन गलेमेंहो और कंठको रोकनेवाली तथा गलेमें दाहके करनेवाली और वल वीर्यका नाशक कफ रुधिरसे पैदा गलौघनाम रोग मुनीश्वरों ने कहाहै १२॥

अतिसूक्ष्मतरावदनांतरगाःपरितःखचितामुखतोदकराः॥पवन
स्यविकारभवावहुधापरिपाकयुतासितभाज्वरदा १३ अरुणद्युत
योमुखमध्यभवारतनुरूपधरावलवीर्यहराः ॥ वदनार्त्तिरपाज्वर

दाहकराः पिटिकाःकिलपित्तभवाभणिताः १४ चिरपाकयुताविरुजाःकठिनाः कफकोपविकारभवामुखजाः॥ गुरवोल्पमसूरदलाकृतयःखरकंडुरदामुखपाककराः १५ ॥

बहुत छोटीफुंनी मुखके भीतर पैदा होयँ और मुख में पीडाकरैं तथा सफ़ेद और ज्वरके करनेवाली और पकनेवाली ये वातके विकारसे पैदा होती हैं १३ लालरंगकी फुंसी मुखमेंहों छोटी तथा बलवीर्यकी नाशक मुखमें पीडाकरैं तथा प्यास ज्वर दाहको करैं वो पित्तके विकारसे पैदा होतीहैं १४ जो फुंसी देरमें पकैं पीडाहो या नहीं कठिन और मसूरकेदाल कीसमानहों तीखी खुजलीचलै और बडीहों तथा मुखके पाककरनेवाली ये कफके विकारसे होती हैं १५ ॥

पित्तशोणितकोपेनमुखपाकोभिजायते ॥ ऊष्मारतिव्यथादाहज्वरशोषतृषार्त्तिकृत् १६ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेगलमुखरोगाणांलक्षणानि ॥

पित्त और रुधिरके कोपसे मुखपाक होताहै वो गरमी तथा अरतिपीडा दाह ज्वर शोष प्यास इनका करनेवाला होताहै १६ इति माथुरदत्तराम पाठकप्रणीतहंसराजार्थबोधिनीटीकायांगलमुखरोगनिदानंसमाप्तम् ॥

(अथ कर्णरोगनिदानम्) वातःप्रचण्डःस्वगतिंनिरुध्यंश्लेष्मान्वितोवक्रगतिंविधाय ॥ कर्णांतरेपीडयतीवकोपात्तत्कर्णशूलंकथितंभिषग्भिः १ (कर्णनादकेलक्षण) कर्णस्रोतांसिसंवेष्ट्यसंभ्रमन्मारुतोबली ॥ करोतिविविधाञ्छब्दान्कर्णनादःसकथ्यते २ स्रोतांसिकर्णयोर्यस्य वहन्तिश्लेष्ममारुतौ ॥ समनुष्योल्पकालेनबधिरत्वंप्रजायते ३ ॥

प्रचंड जो वात सो अपनी गतिको रोक और कफके संगहै टेढीगतिसे चलै और कानमें पीडाकरै उसे वैद्य कर्णशूल कहतेहैं १ प्रबल जो वात सो भ्रमणकरताहुआ कानोंके छिद्रों को बंदकर और अनेक प्रकारके शब्द करै उसे कर्णनाद कहतेहैं २ जिसके कानमें वात और कफ प्राप्त होजाय वह मनुष्य थोडेही कालमें बहिरा होजाताहै ३ ॥

(शब्दक्ष्वेडकेलक्षण) पित्तश्लेष्मान्वितोवायुःकर्णरन्ध्रेषुसंस्थितः॥ करोतिगुंजवच्छब्दंमशब्दःक्ष्वेडउच्यते ४ (श्रावगदरोगकेलक्षण) जलस्यपातात्श्रुतिरन्ध्रमध्येशस्त्रादिकैर्वाशिरसोभिघातात् ॥ वातार्दितोयःश्रवणःसरक्तंपूयंस्रवेत्श्रावगदोनिरुक्तः ५ (कर्णगूथरोगकेलक्षण) वातेरितःकफःकुर्यात्कंडूश्रवणयोर्द्वयोः॥ श्लेष्मापित्तोष्मणःशुष्कःकर्णगूथःसजायते ६ ॥

पित्त कफयुक्त जो वात सो कानों के छिद्र में स्थित होय तब मनुष्यके कानों में गुञ्जार शब्दहो उसे शब्द छ्वेदरोग कहते हैं ४ कानमें जलके पडनेसे तथा शस्त्रआदि के लगनेसे अथवा शिरमें चोटके लगनेसे वातसे पीडित कानमेंसे जो रुधिर और रादनिकलै उसे श्रावगदरोग कहते हैं ५ वातकरके प्रेरित जो कफ सो दोनों कानोंमें खुजली पैदाकरै और पित्तकी गर्मी से कफ शुष्क होजाय तब कर्णगूथरोग पैदा होताहै ६ ॥

(प्रतीनाहकेलक्षण) सकर्णगूथोद्रवतांयदानयेत्पुनश्चतत्रैवविलीयतेनिशम् ॥ मुखंचनासांमपुनःप्रपद्यतेबुधैःप्रतीनाहमिहोच्यतेतत् ७ (कृमिकर्णरोगकेलक्षण) श्लेष्मामच्छीगतःकर्णे जंतूंश्चसृजतेबहून्॥ शिरोर्द्धेकुरुतेपीडांकृमिकर्णोबुधैः स्मृतः ८ श्रवणेश्लेष्मणापूर्णेसंप्रविश्यैवमक्षिका ॥ जंतूंश्चस्रवतेशीघ्रंकृमिकर्णोविधीयते ९ ॥

वोही कर्णगूथरोग पतलाहोकर फेर जातारहै फेर मुख और नाकमें पैदाहो उसे वैद्योंने प्रतीनाहरोग कहाहै ७ कफ कानमें मूर्च्छितहो बहुत कृमि पैदाकरै और आधे मस्तकमें पीडाहो उसे कृमिकर्णरोग कहाहै ८ कफसे परिपूर्ण कानमें मक्खी प्रवेशकर कीडेनको पैदाकरै उसकोभी कृमिकर्णरोग कहतेहै ९ ॥

पतंगोवांथवाकीटःप्रविश्यश्रवणांतरे ॥ नराणांकुरुतेपीडांव्याकुलंक्षतसंचयम् १० कीटःप्रविश्य कर्णांतेकिल्लीस्फोटयतेनिशम्॥ विद्रधिंकुरुतेशीघ्रम्बाधिरत्वंप्रकल्पयेत् ११ (कर्णपाकरोगकेलक्षण) कर्णस्यमध्येपिटिकाञ्जकर्णिकाकाराकृतिस्तोदतृषा

ज्वरान्विता ॥ शोपोल्पपाकःपवनात्मकोयं प्रोक्तोभिषग्भिःकिल कर्णपाकः १२ ॥

पतंग अथवा कीड़ा कानमें प्रवेशकर मनुष्यको पीड़ितकरै तथा कान में घावकरदे १० कीड़ाकानमें धसकर झिल्लीमारै वो विद्रधि और बहिरापना करदे ११ कानमें फुंसी कमलकर्णिका के आकार पैदाहों तथा पीड़ा तृषा ज्वर शोष थोड़ा पाकयुक्तहो वो वातसेपैदा वैद्योंने कर्णपाकरोग कहाहै१२

(पित्तकर्णपाककेलक्षण) कर्णान्तरेकोशविदीर्णकारीदाहार्त्ति क्लेदस्यविकारधारी ॥ वैकल्यकृद्वीर्यबलोपहारीपित्तात्मकोयंकिल कर्णपाकः १३ (कफकर्णपाककेलक्षण) स्थूलत्वक्कर्णविस्फोटकंडू शोपार्त्तिपाकवान् ॥ पूयस्रावीमहाक्लेदीकर्णपाकःकफात्मकः १४ क्षतोत्पाटनात्कर्णपाकेम्बुपूर्णाद्भवेद्विद्रधिःकर्णविध्वंसकारी ॥ महारुकरोतिप्रदोदीर्घशोफंमुहुःस्रावदुर्गंधकृत्कष्टपाकी १५ ॥

जो फुंसी कानके भीतरी झिल्लीको फोड़कर दाह पीड़ा क्लेदयुक बेकली करै तथा वीर्य बलका नाशकरै उसे वैद्योंने पित्तका कर्णपाक कहाहै १३ स्थूल त्वचा और कानमें फूटन खुजली शोप पीड़ा पाकयुक्तहो रादनिकले महा क्लेदयुक्त उसे वैद्य कफका कर्णपाकरोग कहते हैं १४ कानमें घावहो-गयाहो उसपरसे खुंड उखाड़ने से तथा कर्णपाकमें पानीकेपड़नेसे कान में विद्रधि रोग कानका विध्वंस करनेवाला पैदाहोताहै उसमेंपीड़ा और सूजन तथा स्राव और दुर्गंध और कष्ट से पकै ये लक्षण होते हैं १५ ॥

(वातपूतिकर्णरोगकेलक्षण) पूयंस्रवेद्यःश्रवणोथपूर्तिविस्फोटपीडारतिगुंजघोषः ॥ शोषार्बुदैर्युग्ज्वरशूलयुक्तोवातात्मकोयं खलुपूतिकर्णः १६ (पित्तपूतिकर्णकेलक्षण) अत्यन्तदाहोबहुतीव्रवेदना नित्यंस्रवेद्यःश्रवणोतिपूतिः ॥ पूयंचपीतंपरिपित्तजोयं प्रोक्तोभिषग्भिःकिलपूतिकर्णः १७ (कफपूतिकर्णकेलक्षण) कर्णस्रावंपूयमुग्रंसपूतिंशोथःस्निग्धःक्लेदवैश्रुत्यकंडूः ॥ शुक्लस्थैर्यश्लेष्मजंदीर्घपाकं विद्याद्रोगंपूतिकर्णनितांतम् १८ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेकर्णरोगलक्षणानि ॥

जिसमेंसे रादबहै कानमें पूति तथा फूटन पीड़ा अरति गुंजारहोना शोष अर्बुद ज्वर शूल इनकरके युक्तहो वो वातको कर्णपूतरोग कहाहै १६ जिसमें दाह तीव्र दुःख नित्यहो कानमें रादस्रवै तथा राद पीली निकसै उसे वैद्योंने पित्तका कर्णपूतिरोग कहाहै १७ कानमेंसे पीव वासकेसाथ निकले तथा चिकनी सूजन क्लेदयुक्तहो तथा कानमें खुजली चलतीहो सफ़ेदहो देरमें पके वो कफका कर्णपूतिरोग जानना १८ इति श्रीमाथुर दत्तरामपाठकनिर्मितायांहंसराजार्थबोधिनीटीकायांकर्णरोगास्समाप्ताः ॥

(नासारोगलक्षणम्) आनह्यतेयेनगदेननासिकाविशुध्यते पूय्यतितुद्यतेकचित् ॥ नगंध्यतेछिद्यतिखिद्यतेथवा सपीनसोरुक्थितोभिषग्वरैः १ (क्षवथुरोगकेलक्षण) यदाघ्राणमर्मस्थलेसं विकारे कफेनावलिप्टोमरुन्नासिकायाः ॥ तदायातिवाह्यान्तराच्छब्दयुक्तोनिरुक्तोभिषग्भिर्बुधैःक्षवोऽयम् २ (पूतिनस्यरोगकेलक्षण) पक्वैर्दोषैर्यदावातस्तालुवादौमूर्च्छितोभवेत् ॥ नासौनिस्सरतेपूतिःपूतिनस्यंचतद्वदेत् ३ ॥

जिसमें कफ से नाकबंधजावे और पीब बहै तथा क्लेशहो और जिसमें सुगन्ध दुर्गन्धका ज्ञान न हो तथा पीड़ाहो उसे वैद्योंने पीनसका रोग कहाहै १ जिसकी नाकमें पवन दुष्टहोकर नाकके मर्मस्थानोंको दुःखित करै फिर वही नाककी पवन कफसे मिलकर शब्दयुक्त भीतरसे बाहर निकसै उसे वैद्योंने क्षवथु अर्थात् छींकका रोग कहाहै २ जिसके गला तालूके मूलकी पवन दोषोंको बिगाडकर आप गलेमें मूर्च्छित हो नाकसे दुर्गंधयुक्त निकसै उसे पूतिनस्य कहतेहैं ३ ॥

(नासापाककेलक्षण) नासिकायांस्थितंपित्तंपरुषीकुरुतेनिशम् ॥ नासिकापाकमित्याहुर्दाहक्लेदव्यथान्वितम् ४ (पूयरक्तकालक्षण) दोषेषुपक्वेषुललाटमध्येपूयंसरक्तंमुखनासयुक्तम् ॥ दुर्गंधियुक्तंबहुशःस्रवेत्तत्प्रोक्तम्भिषग्भिःकिलपूयरक्तम् ५ (प्रदीप्तरोगकेलक्षण) दाहान्वितायाःपरिनासिकायाः संनिःसरेद्धूमघनंजयाभ्यां॥सार्द्धसतोदीपवनःप्रचंडोरोगम्प्रदीप्तंप्रवदंतिवैद्याः ६

नाकमें पित्तदुखितहो फुंसीको पैदाकर और वो पकजाय तथा दाह राद व्यथायुक्तहो उसे नासिकापाकरोग कहते हैं ४ ललाटमें दोषोंके पकने से रुधिर राद और दुर्गंधयुक्त मुख नाक बहुत स्रवै उसे पूयरक्तरोग कहते हैं ५ जिसकी नाकसे दाहयुक्त प्रचंड पवन निकले तथा धुआं निकले और पीडाहो उसे प्रदीप्तरोग कहते हैं ६ ॥

(प्रतीनाहरोगकेलक्षण) रुंध्यान्मार्गंनसोवायुःश्लेष्मणासहितोबली ॥ प्रतीनाहंचतंरोगंविद्यादाधुनिकोभिषक् ७ (नासाशोषकेलक्षण) घ्राणेऽथःश्लेष्मसंघातःपक्वपित्तोष्मणानिशम् ॥ वातेनशोषितःसोयंशोषःप्रोक्तोभिषग्वरैः ८ (पक्वपीनसकेलक्षण) श्लेष्मातिसांद्रःपरिगन्धहीनःशिरोलघुत्वंस्वरवर्णशुद्धिः ॥ नासावकाशंपवनप्रवृत्तिश्चिह्नानिपक्वस्यहिपीनसस्य ९ ॥

नाककी पवन कफसे मिलकर श्वासको रोकदे उसे प्रतीनाहरोग अबके वैद्यकहते हैं ७ नाकमें उठा जो कफका समूह वो पित्तकी गर्मीसे पकजाय फिर वात उसको सुखायदेय तब मनुष्य श्वास कठिनसे ले उसे नासाशोष कहते हैं ८ जब जुखाम पकजाताहै तब ये लक्षण होतेहैं गंधरहित गाढा कफ निकलै शिर हलका हो स्वरका वर्णशुद्धहो नाकशुद्ध पवन अच्छीतरह निकले ये पकीपीनसके लक्षणहैं ९ ॥

(पीनसरोगकीउत्पत्ति) घ्राणांतरेसूक्ष्मरजोनिपाताद्दुद्भाषणान्मैथुनतोर्कतापात् ॥ शीर्षाभिघाताद्बहुशीतसेवनाद्वातःप्रतिश्यायगदंप्रकुर्यात् १० (पीनसरोगकापूर्वरूप) शिरोगुरुत्वंचप्रहृष्टरोमशरीरमार्द्दंक्षवथुप्रवृत्तिः ॥ निद्रालसत्वंनयनाश्रुपातोभवेत्प्रतिश्यायपुरोहिचिह्नम् ११ (वातकीपीनसकेलक्षण) स्वरोपघातोगलतालुजिह्वाशोषोथनासापिहिताकचित्स्यात् ॥ स्रावोतिसूक्ष्मःपरिशंखपीडामरुत्प्रतिश्यायरुजोपचिह्नम् १२ ॥

नाकमें धूलिके जानेसे उद्भाषणसे मैथुनकेकरनेसे सूर्यके घाममें रहनेसे शिरमें चोटलगनेसे बहुतशीतके सेवनकरनेसे कुपित जो वात सो पीनस रोगको पैदाकरै१०शिरभारी रोमांच शरीरका टूटना बारबार छींकका आना

नींद और आलकस तथा नेत्रों से अश्रुपातहो ये पीनसके पूर्वमें होतेहैं ११ स्वर बैठजाय गला तालू जीभ इनका सूखना नाकका मार्ग रुकजाय थोडा पतला गरमपानी गिराकरे कनपटीदूखें ये वातकीपीनसके लक्षणहैं १२ ॥

(पित्तकीपीनसकेलक्षण) नासास्त्रावोमहातप्तपीनसोवह्निधूमवान् ॥ सदाहःपैत्तिकोज्ञेयःश्लेष्मजःकथितोवुधैः १३ (कफकीपीनसकेलक्षण) शुक्लाभोनासिकास्त्रावोगलोष्ठातालुकंडुवान् ॥ शिरस्तोदःप्रतिश्यायःश्लेष्मजःकथितोवुधैः १४ (रुधिरकीपीनसकेलक्षण) रक्तस्त्रावःशिरःपीडादाहःशंखद्वयेऽनिशं ॥ रक्तत्वं नेत्रयोर्ज्ञेयःप्रतिश्यायःसरक्तजः १५ ॥

जिसकी नाक में गरम गरम पानी गिरे और अग्निके समान धुंआं निकले तथा दाहहो वो पित्तकी पीनस कही है १३ नाकसे पानी सफेद और गला तालू ओठ इनमें खुजली चले मस्तक भारीरहे उसे कफकी पीनस कहते हैं १४ जिसकी नाकसे रुधिर गिरै मस्तक में और दोनों कनपटीन में दर्द नेत्र लाल इन लक्षणों से रुधिरकी सरेकमा, अर्थात् पीनस जाननी १५ ॥

(सन्निपातकीपीनसकेलक्षण) श्वासपूतिवहोनाहःक्लेदोजंतुघुनिर्दितः ॥ चिह्नैरेतैरसाध्योयंप्रतिश्यायस्त्रिदोषजः १६ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेनासारोगलक्षणानि ॥

जिसकी नाकसे वास युक्त पवन निकलै आनाहरोग हो क्लेदयुक्त तथा कृमि पडजायँ इनलक्षणों से सन्निपातकी पीनस कहीहै १६ इति माथुरदत्तरामपाठकप्रणीतायांहंसराजार्थबोधिनीटिकायांनासारोगलक्षणानि ॥

अथ नेत्ररोगनिदानम् ॥

(नेत्ररोगोत्पत्तिः) शीर्षोपघाताद्विषतीक्ष्णसेवनान्नेत्रांतरेधूमरजोतिपातात् ॥ सूर्येक्षणात्सूक्ष्मनिरीक्षणान्मुहुर्दोषारुजंसंजनयन्तिनेत्रयोः १ शुक्रावरोधाद्युवतीप्रसंगाद्धातोर्विकाराज्ज्वलनस्य तापात् ॥ नाड्यादिमोक्षाद्वहुमैथुनाच्च नेत्ररुजंसंजनयन्तिदोषाः २ (वातकेनेत्ररोगकेलक्षण) विशुष्कतास्पंदनतातिरूक्षता

प्रतोदताकर्कशताद्यशुद्धताः ॥ प्रधर्षतास्तंभनताश्रुपातान्नृणां चनेत्रेपवनात्मकोभवेत् ३ ॥

शिरमें चोटलगनेसे विष अथवा तीखी वस्तुके सेवनसे नेत्रों में धुँआं और धूलि के पडने से सूर्य्य के सामने देखनेसे छोटी वस्तुके देखने से कुपितहुये जो वातपित्त कफ सो नेत्ररोगको पैदा करतेहैं १ वीर्यके रोकने से बहुत स्त्रीके संगसे धातुके विकारसे अग्निके तापसे फस्तछुडाने से बहुत मैथुनसे नेत्रमें तीनों दोष नेत्ररोग करतेहैं २ नेत्रों का सूखना तथा फडकना रूखापन पीडा कर्कशता अशुद्धता प्रधर्षता स्तंभनता अश्रुपातका गिरना ये लक्षण वातके नेत्ररोगमें होतेहैं ३ ॥

(पित्तकेनेत्ररोगकेलक्षण) उष्णोष्णबाष्पोरविणातितापःशूलारतिःपांडुरताशिरोर्त्तिः ॥ दाहोल्पपाकोमहतीचपीडानेत्रेभवेत्पित्तमयेनराणाम् ४ (कफकेनेत्ररोगकेलक्षण) तन्द्रातिशोफोगुरुताशिरोर्त्तिर्दाहोल्पपाकोमहतीचपीडा ॥ ऊष्माविशेषोग्निसमानदाहः स्रावोरतिःशूलमतीवपीडा ५ (नेत्रमंथकेलक्षण) विवर्णताशोणितमाविपाकोरक्तस्रवःस्यान्नयनेनराणाम् ॥ निर्मथ्यनेत्रन्दधिमन्थलक्षणैर्वायुस्ततोगच्छतिमूर्ध्निविक्रमम् ६ ॥

सूर्य्यके घामसे गरमीहो तथा गरम गरम पानी निकले शूल और अरति पीलियाहो शिरमें दर्दहो दाह हो थोडापके पीडा ज्यादा हो ये लक्षण पित्तके नेत्ररोगके हैं ४ तंद्रा सूजन मस्तक भारी दाह थोडापके पीडा बहुत हो गरमी बहुत हो अग्निके समान दाह हो अश्रुपात हो अरति शूल ये कफके नेत्ररोगके लक्षण हैं ५ जिसके नेत्र बुरेहों पकजायँ रुधिर गिरे और दधिमंथ लक्षणों से नेत्रों को मथनकर पवन मस्तकमें प्राप्तहोताहै ६ ॥

निपीड्यशीर्षंपुनराकुलोततोजानीहितंपण्डितनेत्रमन्थनम् ॥ आयातियातिप्रकरोतिवेदनांवातःप्रचण्डोनयनांतरेभ्रुवोः७(वातभ्रमणरोगकेलक्षण) शीर्षास्थिशंखन्त्वथरक्तनेत्रे जानीहिवातभ्रमणंगदन्तम् ॥ अवेदनाकंडुविशुष्कतास्याल्लघुत्वमक्ष्णोश्च प्रसन्नमार्गः ८. मलप्रवृत्तिर्बहुधानिशान्तेविपक्वदोषंप्रवदन्तिस

न्तः ॥ पक्कोदुम्बरवत्स्निग्धोगरिष्ठःकंडुशोफवान् ॥ जलस्रावो ऽल्पसन्तोदोनेत्रपाकःकफोद्भवः ९ ॥

और मस्तकमें पीडाकर फेर लौटकर नेत्रमें प्राप्तहो ऐसेही आवें और जाय और नेत्र में तथा भृकुटीमें पीडाकरै उसे पण्डितों ने नेत्रमंथ रोग कहाहै ७ मस्तककी हड्डीमें कनपटीमें भालमें तथा नेत्र लालहों उसे वात भ्रमण रोग कहाहै नेत्रपाककेलक्षण पीडारहित तथा खुजली न चले तथा अश्रुपात रहितहो और नेत्रोंमें हलकापन हो नेत्रों का मार्ग स्वच्छहो ८ विशेष कीचड़काआना रात्रीके अंतमेंहो तब जानना कि दोषपाकहुआ पके गूलरके समान तथा चिकने और भारी तथा खुजली और सूजनयुक्त जल वहे थोडी पीडाहो इसको कफसे प्रकट नेत्रपाक जानना ९ ॥

(शिरपाकनेत्रकेलक्षण) नेत्रेसमर्थेपरिवीक्षितुंदिशः स्फोटो ललाटेबहुवेदनान्वितः ॥ शूलश्चदाहोग्निसमोभ्रमोभवेद्रोगोभि षग्भिःशिरपाकईरितः १० आच्छाद्यदृष्टिनयनेविनिर्गतं शुक्रंसि ताभंपरिवर्द्धतेनिशम् ॥ सूच्याप्रविद्धंखलुनाशमेति नोचेद्बुधाःशु क्रव्रणंवदन्ति ११ नेत्रांतगेकज्जलिमासमीपेशुक्रद्वयंसूक्ष्मतरंचि रोत्थम् ॥मुक्तावभासंगततोदपाकंतत्कष्टसाध्यंमुनयोवदंति १२॥

नेत्रचारों ओर देखने को समर्थहों बहुत पीडा और शूलयुक्त ललाट में फूटनहो अग्निके समान दाह हो भ्रम हो उसे वैद्योंने शिरपाक रोग कहाहै १० जिसके नेत्रमें शुक्रकी बूंद आयजावे उससे कुछ न दीखे और वो दिन दिनमें बढ़े और सुई छिदने के समान बींधनेवाला होकर यदि नाश को न प्राप्तहो तो उसे पण्डितलोग शुक्रव्रण कहते हैं ११ जिसके नेत्रकी काली जगे पर छोटीछोटी दोबूंद मोती के समान बहुत कालकी प्रकटभई हो और उनमें पीडा न होतीहो और न पके उसे कष्टसाध्य मोतियाविंद मुनियों ने कहाहै १२ ॥

(असाध्यमोतियाबिंदुलक्षण)शुक्रद्वयंवात्रितयंचतुष्टयंनिर्वेदनं नेत्रगतंनिपाकं ॥ विहायसीचाभ्रदलावभासंस्यादप्यसाध्यंनिवि डंचिरोत्थम् १३दोषत्रयोत्थंनयनांतरस्थंनीलावभासंनिविडंविस र्पम् ॥स्निग्धंदृढंदृष्टिपथावरोधंस्पंदात्मकंशुक्रमसाध्यमाहुः १४

नेत्रांतरस्थंरुधिरावभासं मांसोत्थितंस्थूलदलंविशालम् ॥ वि
च्छिन्नमध्यंपरिचंचलंचशुक्लंभिषग्भिस्तदसाध्यमुक्तम् १५ ॥

जिसके नेत्रमें दो वा तीन वा चार बूंद नेत्रके बीचहो उनमें पीडाहो
और पकजावे और बादल वा आकाशके रंगकी बूंदहो मिलीभई तथा व-
हुत दिनकी ये असाध्यहै १३ जो तीनों दोषों से उठी होय और नीलेरंग
की मिलीहुई किञ्चित् चलायमान चिकनी और दृष्टिको रोकदे ऐसीशुक्र
की बूंदभी असाध्यहै १४ नेत्रमें रुधिरके रंगकी शुक्रकी बूंदहो और वो मोटी
तथा लंबीहो विच्छिन्न मध्यहो और चंचलहो ऐसा रोगी वैद्योंने असाध्य
कहाहै १५ ॥

एकंद्वयंवात्रितयंचतुष्टयंसंछाद्यनेत्रंपरिवर्द्धतेनिशम् ॥ शो
फोष्णवाष्पोरविपाकसाधनंशुक्लंविदग्धंतदसाध्यमादिशेत् १६
(इतिनेत्रशुक्ललक्षणानि) (नेत्रकेप्रथमपटलकेलक्षण) आवृत्य
नेत्रेपटलेऽव्यवस्थितेऽव्यक्तानिरूपाणिनरःप्रपश्येत् ॥ (नेत्रद्वितीय
पटलकेलक्षण) एवंद्वितीयेपटलेक्षिसंस्थे सूचीमुखंदृष्टिगतंनप
श्यति १७ (नेत्रतृतीयपटलकेलक्षण) नेत्रांतरस्थेपटलेतृती
येदृष्टिर्भृशंविह्वलतांसमेति ॥ आभासमात्रंखलुपश्यतीहसाध्यं
शिशुत्वेखलुनान्यवस्थाम् १८ ॥

एक दो तीन चारबूंद नेत्रमेंहों और नेत्रकी दृष्टिको ढकदेवें और नित्य
बढे तथा सूजन गर्मी अश्रुपातका पडना ये शुक्र विदग्धके लक्षणहैं येभी
असाध्यहैं १६ इतने रोग नेत्रके शुक्लभागमें होते हैं नेत्रके प्रथम पटल में
दोषों के पहुँचने से मनुष्यको यथार्थ न दीखे ऐसेही नेत्रके दूसरे पटल
में दोष पहुँचनेसे सुईका तथा मक्खी मच्छर बालकाभी समूह नहीं दीखे
१७ नेत्रके तीसरे पटल में दोष पहुँचने से दृष्टि विह्वल होजाय कुछ कुछ
झांई मालूमहो ये बालअवस्थामें साध्यहै और में नहीं १८ ॥

(नेत्रचतुर्थपटलकेलक्षण) यस्यावरुद्धेपटलेननेत्रेदृष्ट्यान
पश्येत्सनरोर्कनिस्त्रम् ॥ विद्युल्लतांचन्द्रसमंसतारंतत्काचसंज्ञं
पटलंचतुर्थम् १९ (वातकीदृष्टिरोगकेलक्षण) दृष्ट्यामहत्यापट

लेनरुद्धयासमीरणोत्थेनविकारकारिणा ॥ रूपाणिसर्व्वाण्यरुणानिमानवाःपश्यन्तिपीतप्रभयाविदग्धया २० (पित्तकीदृष्टिरोगके लक्षण) पटलेनावृताद्दृष्टिःपित्तकोपोत्थितेनसा ॥ नीलानिसर्ववर्णानि परिपश्यन्तिसम्भ्रमम् २१ ॥

नेत्रके चतुर्थ पटलमें दोष पहुंचने से मनुष्यको सूर्य्य चंद्र और बिजली और तारागण ये न दीखें वो कांचसंज्ञक और इसीको लिंगनाशक और नजला तथा मोतियाबिंदभी कहतेहैं १९ जिसकी दृष्टि वादीके विकारसे आच्छादितहो उसे लालरंग पीला दीखे २० जिसकी दृष्टि पित्तके कोपसे ढकीहो उसे भ्रमसे सबरंग नीले दीखें २१ ॥

(कफकीदृष्टिरोगकेलक्षण) आच्छादितायापटलैःकफोत्थैर्दृष्टिःसिताभैरिवसूर्यमभ्रैः ॥ नेत्रांतरस्थैःपरितोविपश्येत्सर्वाणिरूपाणिसितप्रभानि २२ दृष्टेरूर्ध्वेस्थितेदोषेनपश्येदूर्ध्वसंस्थितान् ॥ दृष्टेरधःस्थितेदोषेनरोधस्थान्नपश्यति २३ दृष्टेःपार्श्वस्थितेदोषेपार्श्वस्थान्नैवपश्यति ॥ दृष्टेर्मध्यगतेदोषे यदेकंमन्यतेद्विधा २४ ॥

कफके बिकारसे पटल जिसकी दृष्टि रोकदे उसको सूर्य्य और आकाश तथा सबरंग सफेद दीखें २२ दृष्टिके ऊर्ध्वभागमें दोष स्थित होय तो ऊपरकी वस्तु न दीखे और नीचेके भागमें दोषहो तो नीचेकी कोई वस्तु न दीखे २३ और दृष्टिके पृष्ठभागमें दोष हो तो पृष्ठस्थित को नहीं दीखे तथा दृष्टिके मध्यमें दोषहोय तो एक वस्तुकी दो दीखें २४ ॥

रक्तबिन्दुर्भवेन्नेत्रेचंचलःपरुषोनिलात् ॥ पित्तात्पीतंतथानीलंस्निग्धःपांडुःसितःकफात् २५ यःसर्वधूम्राणिनरोविपश्येत्सधूम्रदर्शीमुनिभिःप्रदिष्टः ॥ यश्चित्ररूपाणिदिवानपश्येत् सवैमनुष्योनकुलांधसंज्ञः २६ संकुच्याभ्यंतरेयाति मुहुर्दृष्टिःकपर्दिका ॥ बाह्यमायातिसंवृत्यगम्भीरंतंविदुर्बुधाः २७ ॥

वादीसे मनुष्यके नेत्र चञ्चल और लाल बिन्दु युक्तहों और पित्तसे पीले तथा नीले और कफसे चिकने और सफेद तथा पांडुरंगके होतेहैं २५ जिस मनुष्यको सब वस्तु धुंयेंके रंगकीदीखें उसे धूम्रदर्शीमुनियोंने कहाहै और रातमें जिसको चित्रविचित्र रंगकीदीखें उसे नकुलांधअर्थात् रतौंधकारोग

कहाहै २६ जिस मनुष्यकी दृष्टि दर्पणकी संकोचको प्राप्त हो जब दर्पण हट जावे तब यथार्थ होजावे उसे गंभीररोग वैद्य कहते हैं २७ ॥

नेत्रसंधौस्थितःशोफःपक्वंपूयंस्रवेत्तुयः ॥ पूतिसांद्रंसरक्तंवापूयलाख्यंविदुर्बुधाः २८ संधौचैवबृहद्ग्रन्थिरपाकीनीरुजोदृढः॥ उपनाहःसविज्ञेयोगदज्ञैःकंडुरोगदः २९ नेत्रसन्धौसमुत्पन्ना पिटिका शोणितोद्भवा ॥ रक्तमुष्णस्रवेन्नित्यमसाध्यारुक्प्रकीर्त्तिता ३० ॥

जिस मनुष्यके नेत्रकी संधी में सूजनहो और वो पकजावे तथास्रवे और बासयुक्त तथारुधिरस्रवै उसे पूयलाख्य रोगवैद्यकहतेहैं २८ जिसमनुष्यके संधीमेंबड़ीगांठहो और वह पकेनहीं न पीड़ाकरै दृढ़हो खुजली चले उसे वैद्योंने उपनाह रोग कहाहै २९ नेत्रकी संधी में रुधिरसे फुंसी पैदा हों उनसे रुधिरस्रवै वो असाध्य कहिये ३० ॥

उद्धृत्यवर्त्मरोगाणिजायंतेभ्यंतरेमुहुः॥ रुन्धंतिगोलकेनेत्रेपरिवाराणितानिवै ३१ संधौपक्ष्माणिमांसाभा कंडूशोफसमन्विता ॥ चिमुचिमायुताचैवैर्ब्राह्मणीसानिगद्यते३२अक्ष्णोर्वर्त्मनिसम्भवाश्चपिटिकाःसूक्ष्माघनाःसंवृताः पीताभाबहुवेदनाखरतराज्ञेयाश्चवातोद्भवाः ॥ पित्तोत्थाःपिटिकाःखरानयनयोरभ्यन्तरेसंस्थिता दुःस्पर्शाबहुदाहशूलसहिताःस्रावान्विताःकण्डुराः३३ ॥

जिस मनुष्यके कोयेके बाल उखड़कर भीतर चलेजायँ और नेत्रके गोलको रोकदें उसे परवाल कहतेहैं ३१ संधीके परववारोंमें मांसके आकार फुंसीहो उसमें खुजली और सूजन तथा चिमचिमी युक्तहो जलस्रवै उसे ब्राह्मणी रोग कहतेहैं ३२ नेत्रके मार्गमें जो फुंसीहो वह छोटी कड़ी गोल पीली पीड़ायुक्त खरदरीहो सो वातकी जाननी और खरदरी तथा नेत्रके भीतरीहो स्पर्श सहाजाय दाह शूल और स्रवे तथा खुजली चलै वो पित्त की फुंसी जाननी ३३ ॥

अक्ष्णोर्वर्त्मनिजायन्तेपिटिकाःकफसम्भवाः॥ स्थूलामांसांकुराःक्लिन्नाःकंडूशोफार्त्तिपाकिनः ३४ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेनेत्ररोगलक्षणानि ॥

तथा मोटी मांसके अंकुरयुक्त गीली खुजलीयुत सूजन पीड़ा और पक

जावै वो कफकी मरोडी जाननी ३४ इति हंसराजार्थबोधिन्यांनेत्ररोगलक्षणंसमाप्तम्॥

(अथ मस्तकरोगनिदानम्) अत्यम्लसेवाच्छिरसोभिघाता द्भूमौशयानाज्जलमध्यपातात् ॥ रात्रौदिवाजागरणाच्चशीताद्वा तादिदोषाःप्रभवन्तिशीर्षे ३५ (वातपित्तकमस्तकरोगलक्षण) शीतेनशीर्षेनिशिवातपीडाक्वचिद्दिवापिप्रभवेत्सशूला ॥ तापेन पित्तप्रभवातितीव्राज्वालान्विताशूलवतीसशोषा ३६ (कफके मस्तकरोगकेलक्षण) शीर्षेगुरुत्वञ्चकफेनपीडास्यादालसत्वंमुहुरश्रुपातः॥ निद्रावमित्वंमुखनासिकाभ्यांस्रावोविपाकःसशिरोभिघातः ३७॥

अत्यन्त खटाई खानेसे शिरमें चोट लगनेसे पृथ्वीपर सोनेसे जलमें गिरनेसे रातदिन जागने शरदीसे कुपितहुये जो वात पित्त कफसो मस्तकरोग पैदा करते हैं ३५ वादीसे मस्तकमें रातको दर्दहो कभीदिनमें भी शूल चले पित्तसे पित्तजनितही अत्यन्त तीव्रज्वाला और शोषयुक्त पीडा हो ३६ शिरभारी आलस्य अश्रुपातका पडना निद्रा वमन मुखनाकका स्राव तथा पाक और पीड़ा ये कफके दोषमें होताहै ३७॥

(रुधिरकेमस्तकरोगकेलक्षण) शीर्षेतिदाहोमहतीचपीडा नासामुखाभ्यांबहुरक्तपातः॥ भवेद्भ्रमोधूमवतीचनासारक्तप्रकोपेनशिरोभिघातः ३८ दोषेषुसर्वेषुशिरोगतेषु लिंगानिसर्वाणिभवन्तिशीर्षे॥ कासप्रवृत्तिश्चिरकालपाकः प्रोक्तोभिषग्भिः शिरसोभिघातः ३९ (कृमिकेमस्तकरोगकेलक्षण) निर्भिद्यतेजन्तुभिरुग्रतुण्डैः संतुद्यतेयस्यशिरोनितान्तम्॥ घ्राणाच्च्यवेच्छोणितमुग्रवेदना शिरोभिघातःकृमिभिर्भवेत्सः ४०॥

शिरमें दाह घोर पीड़ा नाक और मुखसे रुधिर गिरै भ्रम तथा नाकसे धूम निकलै ये रुधिरसे मस्तक रोगजानना ३८ सन्निपातके मस्तकरोगमें त्रिदोषके चिह्न मिलतेहों तथा खांसी और देरमेंपके वो वैद्योंने सन्निपात का कहाहै ३९ जिसके शिरमें कृमि पडजावैं उसके शिरमें घोर पीड़ाहो नाकसे रुधिर पडै वो कृमिका मस्तकरोग कहाहै ४०॥

(आधाशीशीकालक्षण) भानूदयेर्द्धशिरसिप्रपीडासंवर्द्धते चांशुमतासहैव ॥ निवर्त्ततेशीतकरोदयेया सूर्य्यात्प्रवृत्तंतमवेहि वैद्य! ४१ कफयुक्पवनःशीर्षेकरोतिविविधान्गदान् ॥ शिरोभ्रू शंखकर्णाक्षिललाटेतीव्रवेदनाम् ४२ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेशीर्षरोगलक्षणम् ॥

जिसका सूर्योदयसे आधा मस्तक क्रमसे दूखने लगै जब सूर्यास्तहो और चन्द्रमा उदयहो तब दर्दभी बंद होजाय उसे आधाशीशी कहते हैं ४१कफयुक्त पवन शिरमें अनेक रोग पैदाकरै और शिर कनपटी भ्रुकुटी कान नेत्र ललाट इनमें घोरपीडा होय ४२ इति माथुरदत्तरामकृतहंस-राजार्थबोधिनीटीकायांशीर्षरोगनिदानंसमाप्तम् ॥

अथ स्त्रीरोगलक्षणम् ॥

(प्रदररोगकीउत्पत्ति) आयासतःकुत्सितयानरोहाच्छोकाद्विरुद्धाशनतःप्रपातात् ॥ अत्यन्तभारोद्वहनादजीर्णात्स्याद्गर्भपातात्प्रदरोतिमैथुनात् १ योनिंविदीर्यसंजातं शोणितंसर्वदास्त्रियाः ॥ प्रदरन्तंविजानीहिवातपित्तकफोद्भवम् २ प्रवृत्तेप्रदरे नित्यं पाण्डुत्वंजायतेस्त्रियाः ॥ मूर्च्छाभ्रमस्तृषादाहःप्रलापःकृशतारुचिः ३ ॥

परिश्रमसे खोटी सवारी में बैठनेसे शोकसे खोटे भोजनसे गिरपडने से भारी बोझउठाने से अजीर्णसे गर्भके पडने से अतिमैथुनसे प्रदरनाम स्त्रियों के रोग होताहै १ योनि को विदीर्ण कर जो रुधिर सदापडे उसे वातका पित्तका कफका प्रदर रोगजानो २ प्रदर रोग पैदा होनेसे स्त्रीका वर्ण पीलाहोजाय और मूर्च्छा भ्रम प्यास दाह बडबडाना कृशता अरुचि ये रोग होते हैं ३ ॥

(वातपित्तकेप्रदररोगकेलक्षण) योनिःस्रवेच्छोणितमल्पमल्पं श्यावंसकष्टंपवनात्मकंतत् ॥ पित्तोत्थितंसामिपरक्तमुष्णंदाहार्त्तिशूलभ्रमकंपकारी ४ (कफकेप्रदररोगकेलक्षण) योनिस्त्रनोत्थंरुधिरञ्चफेनिलंपीतारुणंस्निग्धतरञ्चपिच्छिलम् ॥ शैथिल्यकंडूकृमिशोथशीतकृज्जानीहितंत्वंप्रदरंकफोद्भवम् ५ (सन्निपातकेप्रदर

कालक्षण) दोपत्रयोत्थेप्रदरेयुवत्याःसर्व्वाणिलिंगानिभवन्ति काये ॥ उच्छ्वासशूलारतिपूतियुक्तेतस्मिन्नकुर्व्वीतभिषक्चिकित्साम् ६ ॥ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रे प्रदरलक्षणम् ॥

जिसस्त्रीकीयोनिसे कालेरंगकारुधिर कष्टसे थोड़ा थोड़ा निकले उसे वादीका जानो और मांसयुक्त गरम और दाहयुक्त रुधिर निकले तथा शूल भ्रम कंप से पित्तका जानना ४ योनि में से रुधिर भाग मिला चिकना पीला गाढ़ा लाल निकले और खुजली कृमी शिथिलता सूजन शीतलता युक्तहो उसे कफका प्रदररोग जानना ५ सन्निपात के प्रदरमें त्रिदोप के चिह्न होतेहैं तथा श्वास शूल अरति दुर्गंधि युक्त ऐसे प्रदर की वैद्य चिकित्सा न करै ६ ॥ इति हंसराजार्थबोधिन्यांप्रदररोगस्समाप्तः॥

(अथ योनिकन्दलक्षणम्) उच्चैःप्रपातान्नखदन्तघातादध्वश्रमात्कुत्सितवीर्य्ययोगात् ॥ कुयानरोहादतिमैथुनाद्वायोनौभवेत्कन्दकसंज्ञकोरुक् ७ योनौसंजायतेकन्दं लकुचाकृतिपूययुक् ॥ विवर्णंस्फुटितंरूक्षंवातकन्तंविदुर्बुधाः ८ (पित्तकेयोनिकन्दकेलक्षण) रक्ताक्तंयोनिसम्भूतंचिञ्चिणीबीजसन्निभम् ॥ ज्वरदाहान्वितंपैत्तंयोनिकंदन्तमादिशेत् ९ ॥

ऊँचेस्थान के गिरने से नख दांत के घात से रास्ता चलने से खोटा वीर्य्य होनेसे खोटी सवारी में बैठने से अति मैथुन से योनि में कंदसंज्ञक रोग होताहै ७ योनि में वड़हल के समान कंद हो उसमें से राद निकले और विवर्ण तथा फटा रूखा हो उसे वातका योनिकंद कहते हैं ८ जिसमें से रुधिर निकलै और वह इमली के बीजके समान हो तथा ज्वर दाह युक्त हो उसको पित्त का योनिकन्द कहते हैं ९ ॥

(कफकेयोनिकन्दकेलक्षण) तिलपुष्पसमंस्निग्धंयोनिमध्योद्भवंदढम् ॥ कंडूशोफान्वितंक्लिन्नंयोनिकंदंकफात्मकम् १० (सन्निपातकेयोनिकन्दकेलक्षण) सन्निपातोत्थितंरौद्रंसर्व्वलिंगसमन्वितम्॥ योनिकंदंभिषक्तस्यचिकित्सांनैवकारयेत् ११ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेयोनिकन्दलक्षणंसमाप्तम्॥

जो तिल के फूल के समान चिकना और दृढ़ कंद हो तथा खुजली और सूजन गीला हो उसे कफका योनिकंद कहते हैं १० जिसमें सन्निपातके सब लक्षण मिलते हों उसे घोर सन्निपात का जानकर वैद्य इलाज न करै ११ इति हंसराजार्थबोधिन्यांयोनिकंदलक्षणंसमाप्तम् ॥

(अथ योनिकेद्वादशरोगकेलक्षण) योनौद्वादशदोषाःस्युःप्रोक्तावैद्यैःपृथक्पृथक्॥ केचिन्नैसर्गिकाःकेचिद्दोषजावीर्यदोषजाः १ अच्छिद्रायाभवेद्योनिःषंढाख्यासाविधीयते ॥ सूक्ष्मछिद्रातुयासूचीमुखीसाकथ्यतेबुधैः २ विवृतास्यामहास्थूलामहायोनिःप्रकीर्त्तिता ॥ रजोवातहतंयस्याअसौख्यासोच्यतेबुधैः ३ ॥

योनि में बारह दोष पृथक् पृथक् वैद्योंने कहे हैं कोई तो नैसर्गिक कोई दोषोंसे और कोई वीर्य्य के दोषसे १ जिसकी योनि में छिद्र न हो उसे षंढाख्य योनि कहतेहैं और जिसमें छोटा छिद्र हो उसे सूचीमुख योनि कहते हैं २ जो गोल मुख की और मोटी हो उसे महायोनि कहते हैं और जिसका रजोदर्श वातसे चलागया हो उसे असौख्ययोनि कहते हैं ३॥

(वातकीयोनिकेलक्षण) ह्रस्वातिरूक्षाकृशताल्पपुष्पाश्यामा विवर्णास्फुटिताविशुष्का ॥ वक्त्राल्परोमापरुषासरोगायोनिर्बुधैर्वातवतीनिरुक्ता ४ (पित्तकीयोनिकेलक्षण) ऊष्मान्विताकामवतीविशालालाक्षारसाभापरिपूर्णमांसा ॥ नीरोगतागर्भवतीविशुद्धायोनिर्बुधैःपित्तवतीनिरुक्ता ५ (कफकीयोनिकेलक्षण) स्थूलासदार्द्राबहुकंडुरासा कामान्वितादीर्घमुखीमनोज्ञा ॥ रोमाधिकास्निग्धतरातिशीतायोनिर्निरुक्ताकफयुग्भिषग्भिः ६ ॥

जो योनि छोटी और रूखी कृश अल्पपुष्पकी काली श्यामवर्ण की फटी हुई शुष्कमुख पर थोडे बालहों कठोर रोग युक्त ये वातकी योनि के लक्षणहैं ४ गर्मी युक्त कामवती बडी लाखके रंगकीसी पूर्णमांस युक्त निरोग गर्भवान् शुद्ध हो ये पित्तकी योनि के लक्षणहैं ५ मोटी सदा गीली रहै बहुत कंडुरा युक्त कामयुक्त दीर्घमुख की सुंदर बहुत रोम युक्त चिकनी शीतल ये कफकी योनि के लक्षणहैं ६ ॥

वातेनयस्यानिहतंचपुष्पं तस्याःफलंनैवभवेत्कदाचित् ॥ योन्यंतरस्थेनमहाबलेनहन्नाभिकट्यांतरदुःखवेदनाम् ७ पित्तेनदग्धंकुसुमंविशुद्धंशुक्रेणमिश्रम्वहिरुद्गिरेद्या ॥ नात्यूष्मणाधारयितुंसमर्थाप्रस्रंसिनीयोनिरुदाहृतासा ८ (विप्लुताकेलक्षण) रतिक्रीडारुचिर्यस्याःपरितोयाप्लुताभवेत् ॥ नित्यवेदनयायुक्ताविप्लुता साप्रकीर्त्तिता ९ ॥

योनि में बलवान् वात पुष्पको नाश करदे तब सन्तान नहीं हो और हृदय नाभी कमर इनमें पीडा हो ७ जिसका पुष्प पित्तदग्ध करदे और शुक्रयुक्त रजको वाहर निकालदे और पित्तकी गर्मी से गर्भ न रहै उसे प्रस्रंसिनी योनि कहीहै ८ रति क्रीडाके आनन्दसे जिसकी योनि आर्द्ररहै और नित्य पीडाहो उसे विप्लुता योनि कहतेहैं ९ ॥

(पूतिगन्धयोनिकेलक्षण) सन्निपातान्वितायोनिर्दुर्गंधंवहते निशम् ॥ शूलदाहार्त्तियुक्तासापूतिगन्धिर्विधीयते १० (वन्ध्या योनिकेलक्षण) पित्तानिलाभ्यांपरिकोपिताभ्यांसंपीडिताकृच्छ्रतरेणयोनिः ॥ कृष्णंरजोमुंचतिफेनिलंयावन्ध्यामुनींद्रैःपरिकीर्त्तितासा ११ (खंडितायोनिकेलक्षण) योनेरभ्यंतरेवाह्येखरस्पर्शा तुमैथुने ॥ नगृह्णातिसदावीर्यंखण्डिनीसाविधीयते १२ ॥

सन्निपातसे योनिमें दुर्गंध आवै तथा शूलदाह भीहो उसे पूतिगंधयोनि कहतेहैं १० जिसकी योनि वात पित्तके कोपसे परिपीडित हो और जिस की योनि से काला और झागयुक्त रुधिर निकले उसे ऋषि वंध्यायोनि कहतेहैं ११ योनिके वाहर और भीतर मैथुनके समय खर्दरास्पर्श मालूम पडे और वीर्यका जो ग्रहण न करै उसे खंडितायोनि कहते हैं १२ ॥

पिटिकान्वितसर्वांगीमणिनांतरवाह्ययोः ॥ सायोनिरुपदंशेन मूत्रफेनरुजार्दिता १३ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेयोनिरोगलक्षणंसमाप्तम् ॥

योनिके वाहर भीतर फुंसीहों तो योनि उपदंशरोगकरके व्याप्त जाननी १३ इति हंसराजार्थबोधिन्यांयोनिरोगलक्षणंसमाप्तम् ॥

(अथ प्रसूतिकारोगकालक्षण) उच्चैःप्रपाताद्दृढमैथुनाद्वातीक्ष्णोष्णदुष्टौषधिसेवनाद्वा॥ दण्डाभिघाताद्बहुवेदनाद्वागर्भच्युतिःस्याद्भयतःश्रमाद्वा १४ स्रावोमासाच्चतुर्थात्प्राक्पातःपंचमषष्ठयोः॥ मासयोर्भवतिस्त्रीणांप्रसूतिस्तदनन्तरम् १५ प्रसूतिसमयेवायुःस्त्रियाःकुक्षिगतोयदि॥ निरुध्यशोणितस्रावंकरोति बहुवेदनाम् १६॥

उच्चस्थानके गिरनेसे दृढमैथुनसे तीखी गरम दुष्ट औषधके खानेसे दंडआदिकी चोट लगनेसे बहुत पीडासे भयसे श्रमसे गर्भपात होताहै १४ चार महीनासे पूर्व गर्भ गिरे उसे स्राव कहते हैं और पांचवें छठे महीनामें पात कहाता इसके अनन्तर अर्थात् सातवें महीनासे उपरान्त प्रसूति कहतेहैं १५ प्रसूतिसमयमें पवन स्त्रीकी कूखमें प्राप्तहो रुकजावै वह रुधिरको निकाले तथा पीडाकरै १६

बालेपृथिव्यांपतितेतदानिशंसंरक्षणीयामरुतःप्रसूता॥ यस्याः शरीरेपवनेप्रविष्टेनूनंभवेद्रोगवतीसदासा १७ हृत्कुक्षिशूलंगुरुताशरीरेकंपःपिपासाकटिबस्तिपीडा॥ दाहोंगमर्दोल्परुचिःप्रलापः शोथःकृशत्वंप्रदरोतिसारः १८ निद्रालसत्वंबहुपांडुतांगेशीतंशिरोर्त्तिर्भ्रमताविशुद्धिः॥ तापोप्यनाहोबलतातिकासःस्यात्सूतिकायाःपरिरोगचिह्नम् १९॥

जिस समय बालक पृथ्वीमें गिरै उसी समय प्रसूता स्त्रीकी पवनसे रक्षा करनी कदाचित् पवन स्त्री के लगजाय तो निश्चय प्रसूतिका रोग पैदाहोय १७ जिस स्त्रीके प्रसूतिरोग हो उसके ये रोगहों हृदय कूख इन में शूलहो शरीर भारी कंप प्यास कमर और मूत्रस्थानमें पीडा दाह अंगों का टूटना अल्परुचि प्रलाप सूजन कृशता प्रदर अतीसार १८ निद्रा आलकस पीलिया शरदी मस्तकमें दर्द भ्रम भ्रष्टता ज्वर अनाह दुर्बलता खांसी इतने रोग प्रसूति से होतेहैं १९॥

(प्रसूतिरोगकेउपद्रव) अतीसारोज्वरःशूलंबलहानिःशिरोव्यथा॥ शोफोनाहोतिदाहोष्टौसूतिकायामुपद्रवाः २० इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृतेवैद्यशास्त्रेप्रसूतिकारोगलक्षणानि॥

१ अतीसार २ ज्वर ३ शूल ४ बलहानि ५ मस्तकमें दर्द ६ शोथ ७ अनाह ८ दाह ये प्रसूतके आठ उपद्रव हैं २० इति माथुरदत्तरामपाठकप्रणीतायांहंसराजार्थबोधिनीटीकायांसूतिकारोगाःसमाप्ताः ॥

अथ बालरोगलक्षणम् ॥

(वातलदुग्धकेगुण)स्तन्यंदुग्धंवातलंतोयतुल्यंरूक्षंगौरंतुच्छसारंकषायम्॥ बालोनित्यंतंपिबेत्स्यात्कृशांगःशब्दक्षामोबद्धविण्मूत्रवातः १ (पित्तयुक्तदुग्धकेगुण) सक्षारमुष्णंकटुपित्तदूषितं बालोल्पसारःकुचजंपयःपिबन् ॥ तृष्णालुरूक्षावयवासपैत्तिकः खिन्नोभवेद्भिन्नमलःसकामलः २ (कफदूषितदुग्धकेगुण) दुग्धं श्लेष्मविदूषितंकुचभवंस्निग्धंघनंपिच्छिलं योबालःप्रतिवासरं परिपिबन्स्थूलोदरोजायते ॥ लालाढ्यःकफरोगवान्बलयुतो निद्रालस्छर्दिमाञ्छून्यान्तष्करणोल्पघूर्णनयनः कंड्वादिरोगान्वित. ३ ॥

स्तनका दूध जलके समान हो रूखा तथा भारी बलरहित हो कसैला हो वो वातदूषित दुग्ध है उसे बालक जो पीवै तो कृशांगहो मन्द शब्द तथा मल मूत्र कमउतरे १ जो खारा गरम तथा कडुवा हो पित्तदूषित दुग्ध है उसे जो बालक पीवै तो बलहीन हो तृष्णालु रूखा देह पित्तप्रकृतिवाला दस्त बहुतहो पीलि युक हो तथा खिन्नहो २ जो कुचका दूध कफसे दूषित हो वो चिकना गाढा मलाईदार होता है जो बालक ऐसे दूध को पीवै उसका बडा पेट होजाय लार बहै कफ रोगसे ग्रसित रहै बल युक्त नींद बहुत आवै उलटी करै शून्य अंतःकरण कुछ टेढे नेत्र खुजली आदिरोग करके युक्त रहै ३ ॥

(दोषरहितदुग्धकीपरीक्षा) जलेस्तन्यंपरिक्षिप्तमेकीभूतंचपांडुरम्॥ मधुरंस्वादुतद्दुग्धंनिर्दोषंतंविदुर्बुधाः ४ निर्दोषजंपयःपीत्वानीरोगोबालकोभवेत् ॥ बलवीर्यान्वितोधीरोबहुशक्तिसमन्वितः ५ शिशोरंगपीडाचतीव्रामतीव्राबुधोरोदनाल्लक्षयेदंगदेशे॥ तनोःस्पर्शनाञ्चक्षुषांदर्शनाद्वाविदित्वारुजंकारयेद्वैचिकित्साम् ६ ॥

जो दूध जलमें मिलाने से पीला होजावै तथा मीठा स्वादयुक्त हो उसे निर्दोष दूध जानना ४ जो बालक दोषहीन दूध पीताहै वह बल वीर्य धीरता शक्तिमान् होताहै ५ वैद्य बालककी अंगपीड़ा रोनेसे तथा शरीर के स्पर्शसे वा नेत्रोंके देखनेसे जानकर फेर इलाज करे ६ ॥

मातुस्तन्यविकारेणबालानांनेत्रवर्त्मनि॥ जायतेकुकुणंतेननेत्रयोःकंडुरंभवेत् ७ कुकुणेनरुजातेन सूर्याभांपरिवीक्षितुम्॥ नसमर्थोभवेद्बालोनेत्रोन्मीलितुमक्षमः ८ (पारिगर्भिकरोगकेलक्षण) भवेद्बालकोगुर्विणीदुग्धपानाद्भ्रमःश्वासनिद्रान्वितोवह्निसादः ॥ कृशांगोतिकासोरुचिर्दंतपातस्तमाहुर्बुधागर्भिकंकोष्ठबन्धम् ९ ॥

माताके स्तनविकार से बालकके नेत्रोंमें कुकुणरोग हो उससे नेत्रोंमें खुजली चलती है ७ जब बालकके कुकुणरोग होजाताहै वो सूर्यके देखने को समर्थ नहींहो और नेत्रमिचे भी नहीं ८ गर्भिणीमाताके दुग्धपान से बालककोभ्रम श्वास निद्रा अग्निमंद कृशांग अतिखासी अरुचि दंतपात पे होतेहैं इसे वैद्य गर्भिक कोष्ठबंध वा पारिगर्भिक कहतेहैं ९ ॥

(तालुकंठरोगकेलक्षण) शिशोस्तालवामिषेश्लेष्मवातयुक्तालुकंटकम्॥ कुर्यात्तेनरुजामूर्ध्निभवेत्तालुनिनिम्नता १० तालुपाकस्त्रिदोषोत्थःसर्वांगेषुविसर्प्पति ॥ असाध्योयंबुधैरुक्तोयंत्रमंत्रैश्चसाधयेत् ११ क्षुद्ररोगेचकथितेअजगल्ल्यहिपूतने ॥ ज्वराद्याव्याधयःसर्वेमहतांयेपुरोगताः ॥ बालदेहेपितांस्तद्वज्जानीयात्कुशलोभिषक्॥ (सामान्यग्रहयुक्तबालकलक्षण) ग्रहैर्गृहीतोल्पशिशुःप्रवेपतेमुहुर्मुहुस्त्र्यस्यतिरोतिजृम्भते॥परंनखैर्लुञ्चतिखंसमीक्षतेक्वचित्क्वचित्कूजतिहन्तिरोदिति १२ ॥

बालकके तालूके मालमें वात युक्त कफ प्राप्त होकर तालू कंटक रोग पैदाकरे उसे तालू नीचे लटक आवे १० त्रिदोषका तालुपाक सब अंगमें फैल जावैहै सो असाध्यहै वो यंत्रमंत्र आदिसे अच्छाहो ११ जोक्षुद्ररोगों में अजगल्ली अहिपूतना रोग कहे हैं वो और ज्वरादि सर्वरोग जो बड़े मनुष्योंके होतेहैं वो सब बालककी देहमें होतेहैं ऐसे कुशल वैद्य जानै ॥ इति माधवः ॥ जो बालक ग्रहोंकरके ग्रहीत हो वो कभी कांपै त्रासखाय

प्रलाप कंप श्वास मोह दाह चेष्टाहीन होताहै ५ मुखशोष देहशोष ये अपगुण पत्र का विष भक्षण करे है दाह आनाह बेकली दृष्टिनाश ये फलविषके अवगुण हैं ६ ॥

(फूलगोंदत्वचाकेविष)पुष्पोत्थंछर्दिराध्मानंमोहंचकुरुतेविषम्॥ त्वङ्निर्यासोद्भवंस्रावंपूतिकंपंशिरोरुजम् ७ (दुग्धविषकेलक्षण) विषंक्षीरसमुद्भूतमाध्मानंकंठशोषणम् ॥ विड्बंधमूत्रसंरोधंदढागं कुरुतेभ्रमम् ८ (धातुहरतालआदिकेलक्षण) धातूत्थंयद्विषंकुर्या न्मूर्च्छांदाहंचतालुनि ॥ विषाणिप्राणघातीनिसर्वाणिकथिता नि च ९ ॥

फूल का विष रद्द अफरा मोह को करै तथा गोंद और त्वचा का विष स्राव दुर्गंध कंप शिरमें दर्द ७ दूधका विष अफरा कंठ शोष दस्त मूत्रका रुकना दृढांग और भ्रम करै ८ हीरा हरताल आदि धातुका विष मूर्च्छा दाह तालुये में सर्व विष प्राण के हर्ता जानने ९ ॥

(सर्पकाटेकेलक्षण) भुजंगेनदष्टस्यनासामुखाभ्यांपतेद्रक्तधा रांगदेशेपुशोफः ॥ भवेन्मंडलैर्मंडितांगोविवर्णोविशीर्णांगमांसो थनिःशोणितांगः १० विषादंगकंपोभयोरोमहर्षःशरीरेगुरुत्वंभ्र मोदृष्टिनाशः ॥ तृषाध्मानमानीलतागात्रदेशेह्यनाहोरतिर्जृम्भ णंमूर्च्छतास्यात् ११ (देशविशेषऔरकालविशेषमेंजोसर्पकाटे उसकेलक्षण)अश्वत्थमूलेपिचुमंदमूलेचतुष्पथेदेवगृहश्मशाने॥ वाल्मीकदेशेद्विसंध्ययोर्वासर्प्पेणदष्टःसुधयानजीवेत् १२ ॥

जिसे सर्प्पकाटे उसकी नाक और मुखसे रुधिर की धार गिरै सब देह में सूजन हो रुधिर के देहमें चकत्ता हों तथा विवर्ण हो देहका मांस बिखर जाय तथा देहमें रुधिर न रहै १० खेद अंगकंप भय रोमांच देह भारी भ्रम नेत्रों से न दीखे प्यास अफरा शरीर नीला आनाह अरति मूर्च्छा जंभाई ये लक्षण सर्प्प काटेके हैं ११ पीपल के वृक्षके नीचे तथा नीम के वृक्ष के नीचे चौराहे में मन्दिरमें श्मशानमें बांबी के पास,संध्या के समय भरणी आर्द्रा श्लेषा मघा मूल कृत्तिका इननक्षत्रों में जो सर्प्प काटे तो मनुष्य मरजावै १२ ॥

(मूषकविषलक्षण) मूषकस्यविषंकुर्याच्छर्दिंशोफंविवर्णताम् ॥

मूर्च्छांमंदश्रुतिश्वासंलालास्रावंशिरोरुजम् १३ (कीटआदि विषकेलक्षण) दष्टस्यकीटैर्विषदिग्धतुंडैःकृष्णाभमंगंबहुवेदना स्यात् ॥ शोफोतिदाहःपरिभिन्नवर्चामोहप्रलापोधिकरोमहर्षः १४ (कालेबिच्छूकेकाटेकालक्षण) दष्टोमनुष्योऽसितवृश्चिकेनना नाविचेष्टांकुरुतेविषार्त्तः ॥ भीतोविषण्णोग्निसमानदाहःपीडा र्दितोरौतिविलापमुच्चैः १५ ॥

विषैल मूषेका विष रद सूजन विवर्ण मूर्च्छा मंद सुने श्वास लार टपके शिरपीडा ये लक्षण हों १३ कीट अथवा जिसे विषैल डाढवाला जानवर काटे उसके लक्षण देह काला तथा पीडायुक्त सूजन दाह तेज- रहित मोह प्रलाप रोमांच ये हों १४ काले बिच्छू काटेके ये लक्षण हैं नाना प्रकारकी चेष्टाकरै डरपै शून्यता अग्निके समान दाह घोर पीडा पुकार कर रोवै १५ ॥

विषंवृश्चिकंदुःसहंप्राणहारिमहामोहदंसौख्यविध्वंसकारि ॥ बलज्ञानविज्ञानतेजोपहारिव्यथाशोफवैकल्यदाहार्त्तिकारि १६ (वर्हीसर्पकाटेकेलक्षण) ज्वरोघोरतरंशूलंछर्दिशोफोविसर्पति ॥ वर्णनाशोभवेत्पीडावर्हिदष्टस्यलक्षणम् १७ प्राणीदंशेनसंदष्टो हृष्टरोमोक्षतार्त्तिमान् ॥ स्तब्धलिंगोभवेच्छोफोविनिद्रश्चकितो निशम् १८ ॥

बिच्छूका विष नहीं सहाजाय प्राणहर्ता महामोह करै सुख को दूर करै बल ज्ञान तेज इनको दूर करै व्यथा सूजन बेकली दाह और पीडा करै १६ घोर ज्वर शूल रद सूजन बढे वर्णका नाश और पीडा होय ये वर्ही नाम सर्पकाटेके लक्षणहैं १७ प्राणी के विषसे डसेहुये के ये लक्षणहैं रोमांच घावसे पीडित टेढा लिङ्ग सूजन निद्राहीन और चकित १८ ॥

(मेंडकमछलीकेविषलक्षण) शोफश्छर्दिस्तृपानिद्रामंडूकविष लक्षणम् ॥ मत्स्योत्थितंविषंकुर्याद्दाहंशोफंतृषांव्यथाम् १९ (जों ककेविषकालक्षण) मूर्च्छांशोफज्वरंकंडूतृपांकुर्युर्जलौकसः ॥ (छिपकलीकेविषकालक्षण) दाहंस्वेदंव्यथांशोथंकुर्याच्चगृहगो धिका २० (शतपदीखनखजूराकेविषकेलक्षण) शतपद्यार्थ

ईर्ष्यकःसतुविज्ञेयः दृग्योनिरयमीर्ष्यकः ४ (महाषण्ढकेलक्षण, योभार्य्यायामृतौमोहादंगनेवप्रवर्त्तते ॥ तत्रस्त्रीचेष्टिताकारोजायतेषण्ढसंज्ञितः ५ (नारीषण्ढकेलक्षण) ऋतौपुरुषवद्वापिप्रवर्त्तेतांगनायदि ॥ तत्रकन्यायदिभवेत्साभवेन्नरचेष्टिता ६ ॥ इति श्रीभिषक्चक्रचित्तोत्सवेहंसराजकृत्तेवैद्यशास्त्रेनपुंसकलक्षणानि समाप्तानि ॥

जो पुरुष दूसरे को मैथुन करतादेख आप मैथुन करनेको प्रवृत्त हो उसे ईर्ष्यक नपुंसक कहते हैं दूसरा नाम दृक्योनि है ४ जो पुरुष ऋतु के समय स्त्री के प्रमाणप्रवृत्त हो अर्थात् विपरीत रतिकरै उसके वीर्य्य से पैदा जो बालक वो स्त्रीकीसी चेष्टावान् हो और स्त्री के आकार युक्त हो उसे महाषण्ढ कहते हैं ५ ऋतुकालके समय जो स्त्री पुरुष के प्रमाण प्रवृत्तहो अर्थात् पुरुषको नीचे सुलाय आप ऊपर चढ़ मैथुन करै उसमें जो कन्या पैदाहो वह पुरुषके आकार हो और पुरुषकी सी चेष्टावालीहो ६॥

इति श्रीमाथुरवंशोत्पन्नप्रशंसनीयगुणगणालंकृतकन्हैयालालपाठकतनय दत्तरामप्रणीतहंसराजार्थसुबोधिनीटीकासमाप्तिमगात् ॥

इति हंसराजनिदानंसम्पूर्णम् ॥